आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Euphorbia thymifolia* L.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Milk hedge
संस्कृत	:	दुग्धिका, नागार्जुनी
हिन्दी	:	दूधी, दूधियाघास
गुजराती	:	दुधेली, नानी
पंजाबी	:	दूधी, दोधक
अरबी	:	फाशरा
फारसी	:	शीरेगियाह, शीरक
मराठी	:	लाहन, नायटी

परिचय

निचली पहाड़ियों पर तथा मैदानी भागों में दूधी के स्वयंजात प्रसरण शील क्षुप पाये जाते हैं। दूधी का एक भेद भी पाया जाता है जिसे बड़ी दूधी (*Euphorbia hirta* Linn.) कहते हैं। रंग भेद से छोटी दूधी भी सफेद तथा लाल दो प्रकार की होती है। दूधी की कोमल शाखाओं को तोड़ने से सफेद दूध जैसा पदार्थ निकलता है।

बाह्य–स्वरूप

छोटी दूधी का क्षुप जमीन पर छत्ते की भांति चारों और फैला रहता है, मूल से अनेक पतली शाखाएं निकलकर चारों ओर फैल जाती है, लाल दूधी की शाखाएं लाल और सफेद की हरिताभ श्वेत होती हैं। पत्तियां सूक्ष्म, अभिमुख, पुष्प हरे या गुलाबी गुच्छों में लगते फल और बीज दोनों ही बहुत छोटे होते हैं। बड़ी दूधी का क्षुप 1–2 फुट ऊंचा होता है। पत्र अभिमुख हरित ताम्रवर्ण के एक से डेढ इंच लम्बे तथा आधा इंच से कुछ ही कम चौड़े होते हैं। फूल हरिताभ गुच्छों में लगते हैं।

रासायनिक संघटन

दूधी में एक हरितवर्ण सुगंधित तेल, जिसमें साइमोल, कार्बाक्रोल, लाइमोनिन तथा सेलिसीलिक अम्ल होते है। पत्तियों और तने में ग्लाइकोसाइड होता है।

गुण–धर्म

कफपित्तनाशक, वातवर्धक, अनुलोमन, उत्तेजक, रक्त–शोधक, कफघ्न, श्वास हर, मूत्रल, अश्मरीघ्न, आर्तवजनन, कुष्ठघ्न विषघ्न आदि।[1]

औषधीय प्रयोग

रतौंधी : छोटी दूधी के दूध से सलाई को तर करके रतौंधी के रोगी के नेत्रों में सलाई को अच्छी प्रकार फिरा दें। कुछ देर बाद नेत्रों में बहुत वेदना होगी। जो एक प्रहर के पश्चात शांत हो जायेगी, एक बार में ही रतौंधी का रोग जड़ से चला जायेगा।

गंजापन : इसके पंचाग के स्वरस तथा कनेर के पत्तों के रस को मिलाकर सिर के गंज पर घिसने से बाल सफेद होना बंद होकर गंजापन दूर होता है।

नकसीर : छाया शुष्क दूधी में बराबर की सेंगरी मिश्री मिलाकर खूब महीन चूर्ण कर लें। प्रातः सायं एक चम्मच चूर्ण गाय के दूध के साथ लेने से नक्सीर, गर्मी इत्यादि दूर होती है।

चर्मकील : चेहरे पर मुहांसों और दाद पर इसका दूध लगाने से आराम होता है।

हकलापन : दूधी की जड़ दो ग्राम की मात्रा में पान में रखकर चूसने से हकलापन दूर होता है।

Scanned by CamScanner

दुग्धवर्धन : जब किसी माता को दूध आना बंद हो जाये तो दूधी का दूध 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम की मात्रा में 10–20 दिन प्रातः सायं पिला देने से लाभ होता है।

दमा : दमे में इसके पंचाग का काढ़ा या स्वरस 5–10 ग्राम मात्रा में मधु 1 चम्मच मिलाकर पीने से लाभ होता है।

बच्चों के दस्त : इसके पत्तों के 2 ग्राम चूर्ण या बीजों की फंकी देने से अतिसार में लाभ होता है और बच्चों के पेट के कीड़े मर जाते हैं।

अतिसार : दूधी को 10 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ पीसकर पीने से अतिसार में लाभ होता है। कुछ दिनों तक सेवन करने से आंतों को बल मिलता है।

जलोदर : दूधी के पंचाग का अर्क, जलोदर के रोगी को पानी की जगह पिलाया जाये तो बहुत लाभ होता है।

श्वेत प्रदर : इसकी 2 ग्राम जड़ को घोंट छानकर दिन में तीन बार पिलाने से श्वेत और रक्त प्रदर मिटता है।

रक्त प्रदर : हरी दूधी को छाया में सुखाकर कूट छानकर प्रतिदिन एक चम्मच दिन में दो बार खाने से परम बाजीकरण होता है और मासिकस्राव रूक जायेगा।

मधुमेह : गुड़मार बूटी, छोटी दूधी, पारासी कयवानी, जामुन की गुठली ये चारों बूटी लेकर समभाग जल में पीसकर झाड़ी के बेर जितनी गोलियां बना लें, इसमें से दो गोली सुबह और दो गोली शाम को ताजे जल के साथ सेवन करें। परहेज, मीठी, तली, भुनी, अम्लवादी वाली वस्तुओं का परहेज रखें।

प्रवाहिका : रक्तमिश्रित प्रवाहिका तथा उदरशूल में इसके पंचाग का स्वरस 5–10 ग्राम, मधु 1 चम्मच मे मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

पुरूषार्थ : दूधी को कूट छानकर इसके 2–5 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच शक्कर के साथ खाने से कामशक्ति बढ़ती है। छोटी दूधी प्रतिदिन उखाड़कर साफ करके 15 ग्राम की मात्रा में लेकर 6 बादाम गिरी डालकर अच्छी तरह जल के साथ घोंटकर एक गिलास मे मिश्री मिलाकर दोपहर के समय सेवन करने से गर्मी और शुक्रप्रमेह आदि दूर होकर वीर्यकोष को शक्ति प्राप्त होती है।

खुजली : ताजी दूधी या सूखी हुई दूधी 20 ग्राम लेकर बारीक पीसकर इसमें 10 ग्राम गाय का मक्खन घोल लें। इसका लेप खुजली के स्थान पर करें और चार घण्टे बाद साबुन से धो डाले। कुछ दिन के सेवन से ही सब प्रकार की खुजली दूर हो जाती है।

विस्फोटक : विस्फोटक में एरंड बीज की मींगी तथा दुग्धिका का स्वरस दोनों को महीन पीसकर विस्फोटक पर लगाना चाहिए।

सर्प विष : दूधी की 15 ग्राम पत्तियों को पीसकर 5–7 नग काली मिर्च मिलाकर सांप के काटे हुए व्यक्ति को खिलाने से सांप का विष उतर जाता है।

कांटा : शरीर में कांटा चुभ जाये तो दूधी को पीसकर लेप करने से कांटा निकल जाता है।

हानि : इसका अधिक प्रयोग हृदय के लिए हानिकारक है।

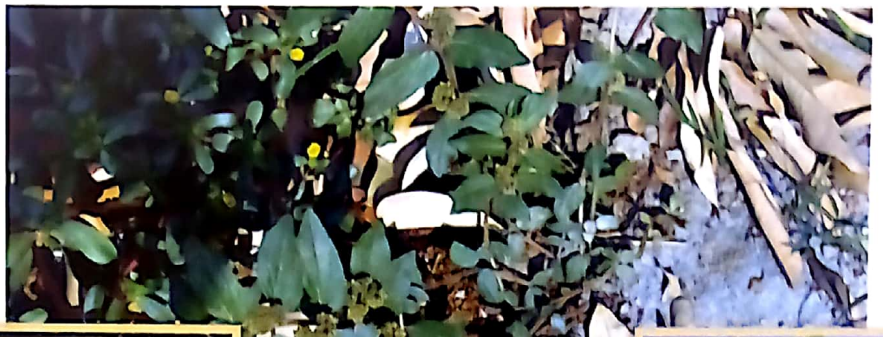

बड़ी दूधी (लाल)

छोटी दूधी (लाल)

छोटी दूधी (सफेद)

1. दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी।
स्वादुक्षीरा कटुस्तिक्ता सृष्टमूत्रमलापहा।।
स्वादुर्विष्टम्भिनी वृष्या कफकोष्ठकृमिप्रणुत्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

ईख

52

वैज्ञानिक नाम	:	*Saccharum officinarum* L.
कुलनाम	:	Poaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sugar cane
संस्कृत	:	इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस असिपत्र
हिन्दी	:	ईख, गन्ना
गुजराती	:	शेरडी
मराठी	:	अंस, ऊंस
बंगाली	:	उक्षुआक, इक्षुआक
तैलगु	:	चेरूकु
अरबी	:	कसबुस्सुक्कर
फारसी	:	नैशकर

परिचय

गन्ना भारतवर्ष की मुख्य फसलों में से एक है। उष्ण प्रदेशों में इसे खेती द्वारा उगाया जाता है। लाल, सफेद, काला, पौण्ड्रक मनोगुप्ता इत्यादि ईख की अनेक जातियां पाई जाती हैं।

बाह्य–स्वरूप

ईख के पौधे से सब परिचित है। इसका कांड 6–12 फुट ऊचां, गोलाकार, स्थूल एवं ग्रन्थियुक्त होता है। पत्र–चपटे 3–4 फुट लम्बे 2–3 इंच चौड़े होते है। पुष्प गुच्छ बड़ा और अनेकशाखीय होता है। वर्षा में पुष्प और शीतकाल में फल लगते है।

रासायनिक संघटन

ईख के रस में सुक्रोज, लुवाब, राल वसा एवं जल तथा ग्वानीन नामक एक जल में घुलनशील सफेद स्फटिकीय चूर्ण तथा कैल्सियम आक्जेलेट पाया जाता है।

गुण–धर्म

रक्तपित्त नाशक, बलदायक, वीर्यवर्धक, कफ कारक, पाक में तथा रस में मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रवर्धक और शीतल है।[1]

बाल, युवा और वृद्ध ईख के गुण :

बाल ईख कफकारक और मेद तथा प्रमेह को उत्पन्न करने वाली है। युवा (अधपकी) ईख वातहर, मधुर, किंचित तीक्ष्ण और पित्त नाशक है तथा वृद्ध (पकी) ईख, रक्त पित्त तथा स्तन्य नाशक और बल तथा वीर्यवर्धक है।[2]

Scanned by CamScanner

गुड़ :

लघु, किंचित अभिष्यन्दी अग्निजनक पुष्टिवर्धक, मधुर, रूचिकारक, रक्त दोष निवारक, वीर्यवर्धक, हृदय के लिए हितकारी, त्रिदोषनाशक, श्रमनाशक और पथ्य है।

औषधीय प्रयोग

उदरशूल : 5 किलो ईख के रस को चिकनी मिट्टी के बरतन में भरकर मुंह कपड़ मिट्टी बांध दें। एक सप्ताह बाद खोलकर छान ले। एक महीने बाद इस रस की 10 ग्राम मात्रा में 3 ग्राम सेंधा नमक मिला, थोड़ा गरम कर पिलाने से पेट का दर्द शीघ्र ही भाग जाता है।

अरूचि : ईख के रस को धूप में या आग में तपाकर, एक उफान आने पर शीशी या चीनी मिट्टी के बरतन में भरकर रखें। एक सप्ताह बाद व्यवहार में लायें। यह उत्तम पाचक स्वादिष्ट होता है, अरूचि को दूर करता है। इसके कुल्ले करने से कंठरोध साफ हो जाता है। मात्रा 10 से 20 ग्राम।

कामला : ईख के टुकड़े कर रात्रि के समय घर के ऊपर छप्पर पर ओस में रख दें और प्रातः मुख प्रक्षालन के बाद उन्हें चूसकर रस सेवन करें। 4 दिन में ही अत्यन्त लाभ होता है।

मृत्रकृच्छ :

1. ईख के ताजे रस को भरपेट पीने से मूत्र साफ होकर सर्व मूत्र सम्बन्धी विकार दूर होते है (ईख के ताजे रस के अभाव में ईख की जड़ काम में ले सकते है)।
2. ईख की ताजी जड़ का क्वाथ 40–60 ग्राम पिलाने से मूत्र दाह आदि की शांति होती है।

क्षतजन्य कास पर : ईख के ताजा 1 किलो रस में, 250 ग्राम ताजा शुद्ध घी मिलाकर पकायें, घी मात्र शेष रहने पर, 10 ग्राम तक प्रातः– सायं सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

तृष्णा और मूत्रकृच्छ : ईख के रस को पकाने के बाद जब रस आधा रह जाये तो ठंडा होने पर उसमें चौथाई शहद मिला, मिट्टी के बरतन में रख दें, अथवा ईख का शुद्ध ताजा रस 12 भाग, गुड़ 1 भाग और शहद 2 भाग एक साथ मिला चीनी मिट्टी के पात्र में 2 मास तक रखकर सिरका बना लें। इस सिरके को 10 से 20 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से मेद रोग, ज्वर की तृष्णा और मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

मंथर ज्वर : 1 भाग आसव में 3 भाग जल मिलाकर हलके हाथों से शरीर पर लगाने से, चेचक, मसूरिका तथा मंथर ज्वर में लाभ होता है।

प्रतिश्याय : गुड़ 10 ग्राम, दही 40 ग्राम, मिर्च चूर्ण 3 ग्राम, तीनों को मिलाकर प्रातः काल तीन दिन लेने से बिगड़ा हुआ सूखा जुकाम नाक मुंह से दुर्गन्ध आना, गला पक जाना कास श्वास युक्त प्रतिश्याय नष्ट हो जाता है।

हिक्का : थोडे से गुड़ को पानी में घोलकर और उसमें थोड़ी सौंठ को घिसकर रोगी के नथुनों में टपकाने से हिक्का व मस्तक शूल मिटता है।

सिरोवेदना : 10 ग्राम गुड़ और तिल 6 ग्राम, इन्हें दूध के साथ पीसकर इसमें 6 ग्राम घी मिलाकर गरम कर सेवन करें।

गलगंड : हरड़ का चूर्ण 2–4 ग्राम फांक कर उपर से गन्ने का रस पीने से गलगंड में लाभ होता है।

स्वरभंग : गन्ने को भूभल में सेंक कर चूसने से स्वरभंग में लाभ होता है।

श्वास : गुड़ 3 से 6 ग्राम तक, समान भाग सरसों के तेल से मिलाकर सेवन करने से श्वास में लाभ होता है।

स्तन्य वृद्धि : ईख की 5–10 ग्राम जड़ को पीसकर कांजी के साथ सेवन करने से स्त्री का दूध बढ़ता है।

रक्तातिसार : ईख के रस में अनार का रस समभाग मिलाकर पीने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

अग्निमांद्य : गुड़ के साथ थोडा सा जीरा मिलाकर सेवन करने से अग्निमांद्य, शीत और वात रोग में लाभ होता है।

रक्तार्श : रक्तार्श पर इसकी पट्टी मस्सों पर बांधने से लाभ होता है।

गर्भाशय रक्तस्राव : गर्भाशय के अत्याधिक रक्तस्राव में इस में भीगी पट्टी योनि मार्ग पर धारण करने से लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र : गुड़ के साथ जौ का खार मिला, उष्ण जल के साथ सेवन करने से शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और वातज रोगों में लाभ होता हैं।

अश्मरी : अश्मरी को निकालने के बाद रोगी को गर्म पानी में बैठा दें और मूत्र वृद्धि के लिये गुड़ को दूध में मिलाकर कुछ गर्म कर पिला दें।

वृक्कशूल : गुड़ 11 ग्राम और बुझा हुआ चुना 500 मिलीग्राम दोनों को एकत्र कर दो गोलियों बना लें, पहले 1 गोली गर्म जल से दें, यदि वेदना शांत न हो तो दूसरी गोली देवें।

प्रदर रोग : गुड़ की खाली बोरी जिसमें 2–3 साल तक गुड़ भरा रहा हो, लेकर जला डाले और भस्म को छानकर रख लें, श्वेत प्रदर और रक्त प्रदर केवल कुछ ही दिनों में प्रतिदिन प्रातः 3 ग्राम सेवन करने से ठीक हो जाता है।

वीर्यवृद्धिः गुड को आंवलों के 2–4 ग्राम चूर्ण के साथ सेवन करने से वीर्यवृद्धि, श्रमनाश, तृप्ति, रक्त पित्त, दाह, शूल और मूत्रकृच्छ का नाश होता है।

उदर्द : गुड के साथ अजवायन चूर्ण 2–4 ग्राम मिला सेवन करने से तथा पथ्यपूर्वक रहने से एक सप्ताह में रक्तज विकार विशेष कर उदर्द रोग नष्ट होता है।

कनखजुरा : कनखजुरा आदि जन्तुओं के काटने या चिपक जाने पर गुड़ को जलाकर लगावें।

Scanned by CamScanner

विविध रोग : 5 ग्राम गुड़ के साथ, 5 ग्राम अदरक या सौंठ या हरड़ अथवा पीपल इनसे से किसी एक चूर्ण को मिलाकर 10 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम गर्म दूध के साथ सेवन से शोथ, प्रतिश्याय, गलरोग, मुखरोग, कास, श्वास, अरूचि, पीनस, जीर्ण ज्वर, बवासीर, संग्रहणी आदि रोगों तथा कफवातज विविध अन्य विकार भी दूर हो जाते हैं।

दाह : गुड को जल में घोलकर 25 बार वस्त्र में छानकर पीने से दाह शांत होती है। ज्वर की ऊष्मा शान्ति के लिय इसे पिलाया जाता है।

कंटक शूल: कांटा, पत्थर कांच आदि के गड़ जाने पर गुड़ को आग पर रखकर गरम–गरम चिपका देने से लाभ होता है।

नलवात पर : गुड़ को धारोष्ण गाय के दूध में इतना मिलायें कि वह मीठा हो जाये और फिर खड़े–खड़े ही इसका पान करें, एक प्रहर (3 घंटे) तक बैठना नहीं चाहिये, उसी समय लाभ होता है।

मिश्री के प्रयोग:

1. मिश्री के टुकड़े के साथ एक छोटा सा कत्थे का टुकड़ा मुंह में रखकर चूसते रहने से मुंह के छाले आदि में लाभ होता है।
2. मिश्री को जल के साथ घिस कर नेत्रों में लगाने से नेत्रों की सफाई होती है तथा दृष्टिमांद्य दूर होता है।
3. मिश्री और घी मिले हुये दूध को पीना ज्वर के वेग को कम करने में अचूक औषध है।

कुछ अन्य रोगों पर विविध प्रयोग

1. ईख के रस की नस्य देने से नकसीर में लाभ होता है।
2. केवल रस का सेवन 10–20 ग्राम की मात्रा में करने से हिक्का में लाभ होता है।
3. पुराना गुड़ अदरक के साथ सेवन करने से कफ का नाश करता है।
4. ईख के शुद्ध ताजे रस के साथ जौ के सत्तू का सेवन करने से पांडु रोग में लाभ होता है।
5. ईख रस के साथ जौ की डांग या जौ की बाल पीसकर पीने से कोष्ठबद्धता में लाभ होता है।
6. ईख के रस को पकाकर, ठंडा कर पीने से अफारा मिटता है।
7. पुराना गुड़ प्रसूत सम्बन्धी विकारों को भी दूर करता है।
8. भोजन से पूर्व ईख के सेवन से पित्त का नाश होता है।
9. ईख के रस में शहद मिलाकर पीने से पित्तजन्य दाह दूर होता है।
10. ईख के रस में आँवले का रस और शहद मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
11. भोजन के मध्य में इसके सेवन से शरीर में अत्यन्त जड़ता आती है।
12. गुड़ की पपड़ी या गुड की चीज खाने से हृदय मजबूत होता है।
13. भोजन के बाद इसके सेवन से आहार का अच्छी तरह परिपाक होता है।
14. एक वर्ष पुराना गुड़ नवीन गुड़ की अपेक्षा अधिक गुणयुक्त होता है।
15. पुराने गुड़ को हरड़ के साथ सेवन करने से पित्त का नाश होता है।
16. पुराने गुड़ को सौंठ के साथ सेवन करने से यह समस्त वात सम्बन्धी विकारों को दूर करता है।

1. इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्या कफप्रदाः।
स्वादुपाकरसाः स्निग्धाः गुरवो मूत्रलाः हिमाः। (भाव प्रकाश)
2. बाल इक्षुः कफ कुचीन्मेदोमेहकरश्च सः।
युवातु वातहृत् स्वादु रीष तीक्ष्णश्च पित्तनुत्।
रक्त पित्तहरो वृद्धः क्षत हृद् बल वीर्यकृत।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

53 इलायची

वैज्ञानिक नाम	:	*Amomum subulatum* Roxb.
कुलनाम	:	Zingiberaceae
अंग्रेजी नाम	:	Greater cardamom
संस्कृत	:	बृहदेला, स्थूलैला, भद्रैला, बहुला
हिन्दी	:	बड़ी इलायची
गुजराती	:	एलचा
बंगाली	:	बड़ एलाच
मराठी	:	यालचिक, एलचिक
नेपाली	:	एलाच
फारसी	:	हीलकलाँ, इलायची, सुर्ख
अरबी	:	काकुले–कुबार
तेलगु	:	तेंगुएलाकुलु

परिचय

इलायची के फल एवं सुगंधित कृष्ण वर्ण के बीजों से भला कौन अपरिचित हो सकता है। भारतीय पाक में यह इस तरह से रची बसी है कि इसका प्रयोग मसालों से लेकर मिष्ठानों तक में किया जाता है। इसकी एक प्रजाति, मोरंग इलायची, भी होती है। यह पूर्वी हिमालय प्रदेश में विशेषतः नेपाल, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, आसाम आदि में पायी जाती है। छोटी इलायची का भी प्रयोग औषधीयों में होता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका पौधा 3–4 फुट ऊंचा, पत्र 1–2 फुट लम्बे, 3–4 इंच चौड़े, दोनों पृष्ठों पर चिकने होते हैं। पुष्प मंजरी अत्यंत सघन 2–3 इंच लम्बी, पुष्प पीताभ श्वेत तथा फल 1 इंच लम्बे हरे वर्ण के बीज सान्द्र मधुर मज्जा से संसक्त रहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसके बीजों में एक सुगंधित तेल होता है जिसमें सिनिओल की प्रचुर मात्रा होती है।

गुण–धर्म

यह कफ वात–शामक तथा पित्तवर्धक है। यह रोचन, दीपन, पाचन, पित्त–सारक और अनुलोमन है। यह हृदय को उत्तेजना देने वाली है। यह दुर्गंध–नाशक, शूलहर, वमनहर और व्रणशोधन है। यह कफ निःसारक व मूत्रल है। ज्वरघ्न, शीत प्रशमन तथा विषघ्न है।'

औषधीय प्रयोग

सिरदर्द : इलायची पीसकर मस्तिष्क पर लेप करने से एवं बीजों को पीसकर सूंघने से सिर दर्द में आराम मिलता है।

मुखपाक : मुखपाक में इलायची पीसकर शहद में मिलाकर छालों पर लगायें।

Scanned by CamScanner

बड़ी इलायची

दंतशूल :

1. इलायची और लौंग का तेल बराबर–बराबर मात्रा में लेकर दांतों पर मलने से दंत शूल में आराम होता है।
2. 4–5 इलायची के फल को 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर शेष बचे क्वाथ से कुल्ला करने से दंत पीड़ा में लाभ होता है।

लार का बहना : यदि अधिक थूक आता हो तो इलायची और सुपारी को बराबर–बराबर पीसकर, 1–2 ग्राम चूसते रहने से यह कष्ट दूर हो जाता हैं।

दमा : सांस की बीमारी में इलायची का 10–20 बूंद तेल मिश्री मिलाकर नियमित सेवन करें।

हिचकी : हिचकी में एक कप पानी में दो इलायची पीसकर उबालें। जब आधा पानी बचा रह जाये तो पिलायें, कष्ट तुरंत दूर होगा।

मंदाग्नि :

1. 2 ग्राम सौंफ के साथ इसके 8–10 बीजों का सेवन करने से पाचन शक्ति की निर्बलता मिटती है।
2. अधिक केले खाने पर यदि अजीर्ण हो जाये तो इलायची खाने से हाजमा ठीक हो जाता है।
3. इसके बीजों का चूर्ण और शुंठी चूर्ण दोनों की एक साथ 1 चम्मच फंकी लेने से मंदाग्नि मिटती है।

गर्भज अन्न द्वेष : इसके बीजों के चूर्ण में बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर 3 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भवती स्त्री को भूख खुलकर लगती है।

अफारा : इसके बीजों का 1 ग्राम चूर्ण काले नमक के साथ लेने से उदरशूल और आध्मान में लाभ होता है।

वमन : इलायची और पुदीना बराबर–बराबर 2–3 ग्राम की मात्रा में उबालकर सेवन करने से वमन नहीं होता।

अतिसार: इसके 1 ग्राम बीजों का चूर्ण 10 ग्राम बेल गिरी के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से अतिसार में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र:

1. इलायची बीजों के चूर्ण में समान भाग मिश्री का बूरा मिलाकर 2–3 ग्राम की मात्रा का नियमित प्रातः–सायं सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है। पेशाब तुरंत खुलकर होने लगता है। यही चूर्ण किसी अन्य रोग से पैदा हुई दाह में भी लाभकारी होता है।
2. छिलकों के सहित बड़ी इलायची 10 नग लेकर जौ कूट कर 250 ग्राम दूध और 250 ग्राम जल के साथ पकावें, दूध मात्र शेष रहने पर छानकर उसमें थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में चार बार पिलायें। पेशाब की जलन व रूकावट दूर होती है।

नपुंसकता : इसके बीजों का चूर्ण, श्वेत मूसली और मिश्री के साथ 2–3 ग्राम की मात्रा में नियमित प्रातः–सायं सेवन करने से नपुंसकता में लाभ होता है।

स्वप्नदोष : आवंले के 20 मिलीलीटर रस में 1 ग्राम इलायची के दाने और इसबगोल बराबर–बराबर की मात्रा में मिलाकर 1–1

Scanned by CamScanner

छोटी इलायची

चम्मच सुबह–शाम सेवन करें।

पथरी : इसका चूर्ण खरबूजे के बीजों की मींगी और मिश्री मिलाकर 2–3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से वृक्क की अश्मरी में लाभ होता है।

यकृत विकार :

1. पिसी हुई राई के साथ इलायची का चूर्ण 2–3 ग्राम की मात्रा में नियमित लेने से यकृत के रक्त संचय आदि विकारों में लाभ होता है।
2. इलायची का 1–2 ग्राम चूर्ण का नियमित सेवन यकृत वृद्धि में उपयोगी है।

वात वेदना : वातवेदना में भी इसका 1–2 ग्राम चूर्ण का नियमित दिन में तीन बार सेवन उपयोगी है।

सूजन : इसका 2–3 ग्राम छिलका सिर दर्द, दांतों के रोग और मुख की सूजन में लाभकारी है।

ज्वर : सब प्रकार के ज्वर में इलायची के बीज 2 भाग तथा बेल वृक्ष के मूल की छाल 1 भाग का यवकूट बनाकर 1 चम्मच चूर्ण दूध और पानी में मिलाकर पकावें और केवल दूध शेष रहने पर 20 मि०ली० की मात्रा में सुबह, दोपहर तथा सायं सेवन करते हैं।

हैजा : 5–10 बूंद एला अर्क को वमन, विसूचिका अतिसार की दशा में देना लाभदायक है।

कुष्ठ : बड़ी इलायची, चित्रक मूल, कुंदरू, अडूसा की पत्ती, निशोथ, मदार की पत्ती, सौंठ इन सबके चूर्ण पलाश क्षार को गोमूत्र में घोलकर लेप बन जाने पर 8 दिनों तक पलाश क्षार की भावना देने पर इस का शरीर पर लेप कर तब तक धूप में बैठे, जब तक यह सूख न जाये। इससे शीघ्र ही मण्डल कुष्ठ फूट जाते हैं और घाव भी शीघ्र ही भर जाते हैं।[2]

1. स्थूला कटुका पाके रसे चानलकृल्लघुः।
रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषाऽपहा।।
हृल्लासविषबस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत्। (भाव प्रकाश)

2. भद्रैला कटुका पाके रसे पिताग्निकृल्लघुः।
रूक्षोष्णा रोचनी श्वासकासवातास्रश्लेष्महा।।
हन्तिहृल्लासतृट्कण्डूशिरोबस्त्यास्यरुग्वमीः।। (कै०नि०)

3. चित्रकमेलां बिम्बी वृषकं त्रिवृदर्कनागरकम्।
चूर्णीकृतमष्टाहं भावयितव्यं पलाशस्य।।
क्षारेण गवां मूत्रप्लुतेन तेनास्य मण्डलान्याशु।
भिद्यन्ते विलयन्ति च लिप्तान्यर्काभितप्तानि।। (चरक)

Scanned by CamScanner

अरंड

54

वैज्ञानिक नाम	:	*Ricinus communis* L.
कुलनाम	:	Euphorbiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Castor oil plant
संस्कृत	:	गन्धर्वहस्त, वर्धमान व्याघ्रपुच्छ, उत्तानपत्रक
हिन्दी	:	अरंड, अंडी
गुजराती	:	एरंडो, दिवेलिगो
मराठी	:	एरंडी
बंगाली	:	भेरेंडा
मलयालम	:	अमन वक्कु
फारसी	:	वेद अंजीर
अरबी	:	खिर्वअ

परिचय

एक वर्षीय या बहुवर्षीय वृक्ष, कृषिजन्य या वन्यज 600 फुट की ऊंचाई तक पाये जाते हैं। इसके बीजों की मींगी से जो तेल प्राप्त होता है वह एक निरापद रेचन है। कोष्ठशुद्धि के लिये यह एक परमोपयोगी औषधि है। इसके साथ ही यह उत्तम वात–नाशक औषधि है। वात प्रकोप से उत्पन्न कब्ज में, तथा वात व्याधियों में कम मात्रा में इसका उपयोग औषधि के रूप में भी कर सकते है। अर्श, भगंदर तथा गुदभ्रंश के रोगियों में एरंडपाक के सेवन से बिना जोर लगाये पाखाना साफ होता है, जिससे रोगी को उक्त व्याधियों से होने वाले दैनिक कष्ट से मुक्ति मिल जाती है। औषधि कर्म के साथ ही यह पोषण का भी कार्य करता है। एरण्ड रक्त और श्वेत दो प्रकार का होता है। जिन वृक्षों के बीज बड़े होते हैं उनका तैल जलाने के काम आता है, और जिनके बीज छोटे होते है, उनका तेल औषधि में प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वार्षिक पौधा 8 से 15 फुट ऊंचा, पतला, लम्बा, स्निग्ध होता है। काण्ड स्निग्ध, हरित सफ़ेद शाखायें, हरापन लिये श्वेत रंग की मध्यम आकार की, दंडाकृति, पत्र चौडे 7 से 11 फांक युक्त, पत्र दंड प्रायः एक फिट लम्बा और पोला। पुष्प एक लिंगी, लाल बैंगनी रंग के फल कंटक युक्त फलों के ऊपर हरे रंग का आवरण होता है। प्रत्येक फल में 3 बीज होते है, बीजत्वचा कठोर, श्याम अरूणाभ अथवा श्याम श्वेत होते है। बीज मज्जा श्वेत स्निग्ध।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें स्थिर तेल, मांससार, और सूत्रों के अतिरिक्त एमाइलेज, इनवर्टेज तत्व पाया जाता है। इसके अतिरिक्त, बीजावरण पत्र तथा कांड में अवस्थित राइसिनिन नामक एक मंद विषाक्त, जल में घुलनशील द्रव्य पाया जाता है। तेल में मुख्यतः राइसिन औलिक अम्ल होता है।

गुण–धर्म

कफवात शामक, पित्त वर्धक, शोथहर, वेदना स्थापन, अगंमर्दप्रशमन, भेदन, स्नेहन, कृमिनिःसारक, कफघ्न, मूत्रविशोधन, स्तन्यजनन एवं शुक्र तथा गर्भाशय शोधन, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न आदि।[1]

एरंड तेल :

स्रोतों का शोधन करने वाला, त्वचा के लिये हितकारी, वृष्य, वयस्थापन, शुक्रशोधन, योनिशोधन, वातहर और कफहर है।[2]

औषधीय प्रयोग

नेत्र विकार :

1. एरंड तेल के अंजन से नेत्रों में जल स्त्राव होता है, इसलिये इसे नेत्र विरेचन कहते है। एरंड तेल 2 बूंद नेत्रों में डालने से, इनके भीतर का कचरा निकल जाता है और आंखों की किरकरी बन्द हो जाती है। कुकूणक रोग में उसकी तीक्ष्णता भी कम होती है।
2. एरंड पत्रों की जौ के आटे के साथ पुल्टिस बनाकर आँखों पर बांधने से आंखों पर आई पित्त की सूजन बिखर जाती है।

स्तन ग्रंथि : जब किसी स्त्री के दूध आना बन्द हो जाता है और स्तनों में गांठे पड़ जाती है, तब एरंड के 500 ग्राम पत्तों को 20 लीटर जल में घंटे भर उबाले, तथा गरम पानी की धार 15–20 मिनट स्त्री के स्तनों पर डाले, एरंड तेल की मालिश करें, उबले हुये पत्तों को महीन पुल्टिस स्तनों पर बांधे। गांठे बिखर जायेगी और दूध का प्रवाह पुनः प्रारम्भ हो जायेगा।

स्तन चुचुक विदारण :

1. चुचुक के चारों और की त्वचा फट जाने पर एरंड तेल लगाने से तुरन्त लाभ होता है।
2. तीन एरंड बीजों गिरी की सिरके में पीसकर स्तन पर लगाने

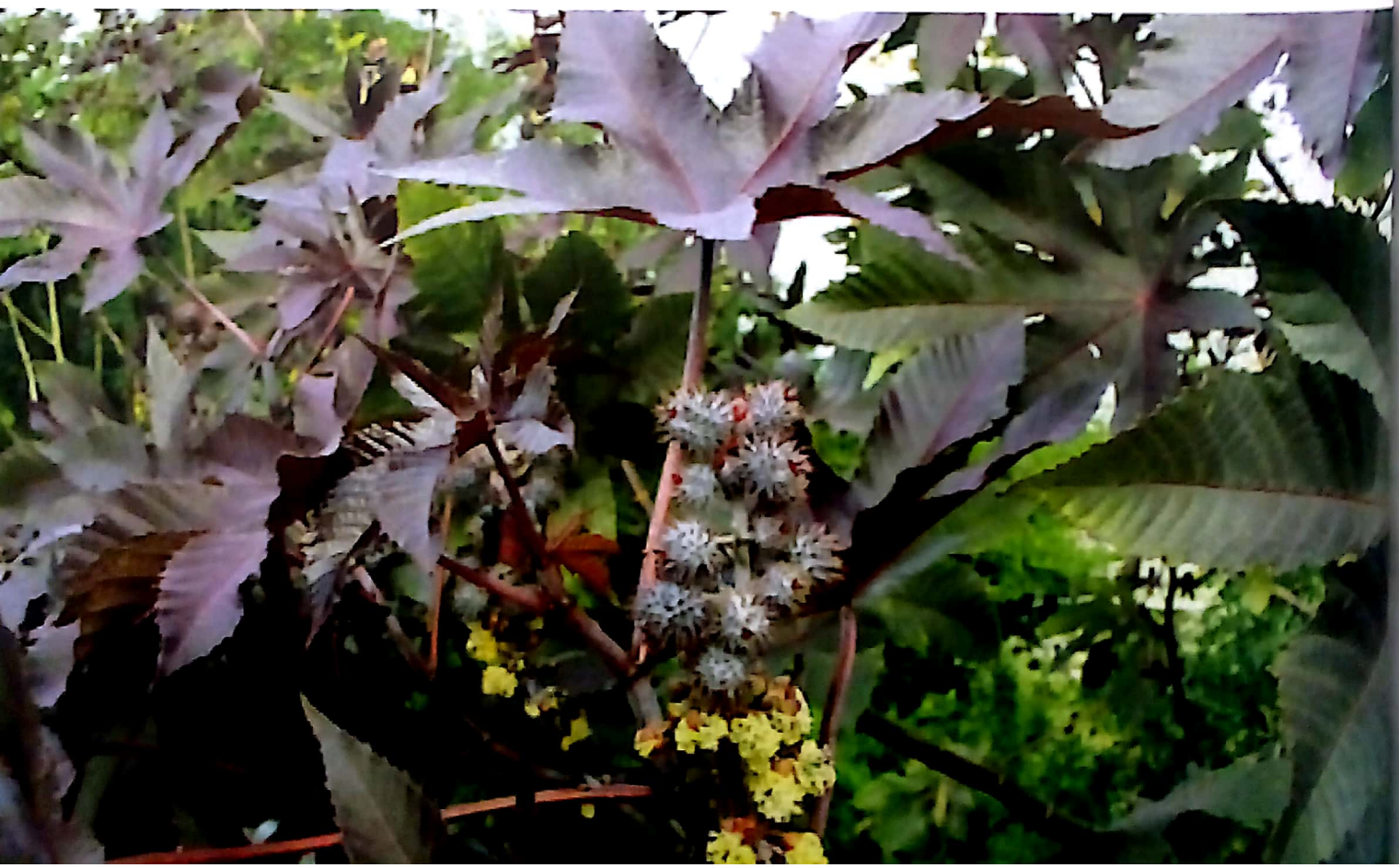

Scanned by CamScanner

स्तन की शोथ उतर जाती है।

कामला :

1. गर्भवती स्त्री को यदि कामला हो जाये और शुरूआती अवस्था हो तो, एरंड के पत्तों का 10 ग्राम रस प्रातः काल पांच दिन पिलाने से कामला दूर हो जाता है। सूजन भी दूर हो जाती है।
2. एरंड पत्रों के 5 ग्राम रस में पीपल का चूर्ण मिला के नस्य देने से या अंजन करने से कामला रोग मिटता है।
3. एरंड की जड़ का रस 6 ग्राम, दूध 250 ग्राम में मिलाकर पिलाने से कामला रोग मिटता है।
4. एरंड की जड़ के 80 मि०ली० क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर चाटने से लाभ होता है।

कास : एरंड पत्र का क्षार 3 ग्राम, तेल एवं गुड़, समान भाग मिलाकर चटाने से खांसी दूर हो जाती है।

उदर रोग :

1. एरंड के बीजों की मींगी पीसकर, गाय के चौगुने दूध में पकायें, जब खोवा की तरह हो जाये तो उसमें 2 भाग खांड मिलाकर या चीनी की चाशनी बनाकर अवलेह बना लें। प्रतिदिन 15 ग्राम खाने से पेट की वायु मिटती है।
2. जीर्ण उदर वेदना में रोज रात्रि को सोने के समय 125 ग्राम गरम जल में एक नींबू का रस निचोड़, एरंड तेल डाल कर पीने से कुछ समय में जीर्ण उदर शूल दूर हो जाता है।

प्रवाहिका : आंव और रक्त गिरता है तो आरम्भ में ही 10 ग्राम एरंड तेल देने से आम का प्रकोप कम हो जाता है, और खून का गिरना भी कम हो जाता है।

एपैन्डिक्स (उण्डुकपुच्छ शोथ) : इस रोग के प्रारम्भ में ही एरंड तेल 5 से 10 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन देने से शल्य क्रिया की आवश्यकता नहीं रहती।

उदर कृमि : एरंड के पत्तों का रस नित्य 2–3 बार बच्चे की गुदा में लगाने से बच्चों के चुन्ने मर जाते हैं।

वादी की पीडा : एरंड और मेंहदी के पत्तों को पीसकर लेप करने से बादी की पीड़ा मिटती है।

प्लीहोदर : इसके पंचाग की 10 ग्राम राख को 40 ग्राम गौमूत्र में मिलाकर पिलाने से प्लीहोदर मिटता है।

अर्श :

1. एरंड के पत्तों के 100 ग्राम क्वाथ में घृतकुमारी का स्वरस 50 ग्राम मिलाकर प्रातः सायं सेवन करने से लाभ होता है।
2. एरंड तेल और घृत कुमारी का स्वरस मिलाकर मस्सों पर लगाने से जलन शान्त हो जाती है।
3. मस्से और गुदा की त्वचा फट जाने पर प्रतिदिन रात्रि को एरंड तेल देने से बहुत लाभ होता है।

पेट की चर्बी : पेट पर चढ़ी हुई चर्बी को उतारने के लिये हरे एरंड की 20 से 50 ग्राम मूल को धोकर कूटकर 200 ग्राम पानी में पकाकर 50 ग्राम शेष रहने पर पानी को प्रतिदिन पीने से पेट की चर्बी उतरती है।

प्रसव कष्ट : प्रसव काल में कष्ट कम हो सके इसके लिये गर्भवती स्त्री को 5 मास बाद, एरंड तेल का 15–15 दिन के अन्तर से

हलका जुलाब देते रहें। प्रसव के समय 25 ग्राम एरंड तेल को चाय या दूध में मिलाकर देने से प्रसव शीघ्र होता है।

योनिशूल, गर्भाशय शोथ :

1. एरंड तेल में रूई का फोहा भिगो कर योनि में धारण करने से योनिशूल मिट जाता है।
2. गर्भाशय शोथ प्रायः प्रसव पश्चात् होता है। इसमें रुग्णा को बहुत तेज ज्वर होता है। ऐसी अवस्था में एरंड के पत्तों के वस्त्रपूत स्वरस में उम्दा शुद्ध रूई का फोहा भिगोकर योनि में रखने से आराम होता है।

मासिक धर्म : एरंड के पत्तों को गर्म कर पेट पर बांधने से मासिक धर्म ठीक से होने लगता है।

अण्डकोष वृद्धि : 10 ग्राम एरंड तेल को 3 ग्राम गुग्गुलु और 10 ग्राम गौमूत्र के साथ सुबह–शाम पीने से एवं वेदना स्थान पर एरंड पत्र गरम कर बांधने से पीड़ा शीघ्र मिटती है।

वृक्कशूल : इसकी मींगीं का पीसकर, गरम लेप करने से गुर्दे की वात पीड़ा व शोथ में लाभ होता है।

कामेन्द्रिय की कमजोरी : इसके बीज और तिल का तेल दोनों को समभाग लेकर पकाकर नित्य मूत्रेन्द्रिय पर मालिश करने से मूत्रेन्द्रिय की कमजोरी मिटती है।

गृध्रसी : एरंड के बीज की गिरी 10 ग्राम, को दूध में पकाकर खीर बनाकर खिलाने से गृध्रसी, कटिशूल आमवात में लाभ होता है एवं इससे कोष्ठवद्धता में भी लाभ होता है।

वातरक्त : वातरक्त में एरंड का 10 ग्राम तेल एक गिलास दूध के साथ सेवन करना चाहिये।

रक्त के रोग : एरंड की मींगी 1 नग, दूध 125 ग्राम , जल 250 ग्राम, औंटावें, दूध मात्र शेष रहने पर 10 ग्राम खांड या मिश्री डालकर पिला दें, इस प्रकार 1 गिरी से शुरू करके, सात दिन

Scanned by CamScanner

अरंड की जड़

तक 1–1 गिरी बढ़ाकर घटाये। 1 गिरी पर लाने से रक्त के रोग मिटते हैं। यह प्रयोग अत्यन्त वात शामक भी है।

विषनाशक :

1. एरंड के पत्तों का 100 ग्राम रस पिलाकर वमन कराने से सांप तथा बिच्छू के विष में लाभ होता है। इसी प्रकार अफीम तथा दूसरी तरह के जहर में भी इससे लाभ होता है।
2. इसके 20 ग्राम फलों को पीस छान के पिलाने से अफीम का विष उतरता है।

नहरूबा : इसके पत्तों को गरम कर बांधने से नहरूबे की सूजन उतर जाती है।

नाडी व्रण : इसकी कोमल कोंपलों को पीसकर लेप करने से नाड़ी व्रण मिटता है।

शय्याक्षत (Bed Sore) : एरंड तेल लगाने से शय्याक्षत बड़ी जल्दी मिटते है। बच्चों के उल्टी दस्त और बुखार में एरंड तेल से लाभदायक कोई और वस्तु नहीं है।

चर्म रोग : इसकी जड़ 20 ग्राम को 400 मिलीलीटर पानी में काढ़ा बनाकर 100 मिलीलीटर शेष रहने पर उसे पिलाने से चर्म रोगों में लाभ होता है।

दुष्ट व्रण : बिगड़े हुये घाव और फोड़ो पर इसके पत्तों को पीसकर लगाने से वे अच्छे हो जाते है।

वात प्रकोप और वात शूल :

1. एरंड के बीजों को पीसकर लेप करने से छोटी सन्धियों और गठिया की सूजन मिटती है।
2. वात रोग में एरंड तैल उत्तम गुणकारी है कटिशूल, गृध्रसी, पार्श्वशूल, हृदय शूल, कफजशूल आमवात और सन्धिशोथ, इन सब रोगों में एरंड मूल 10 ग्राम और सौंठ का चूर्ण 5 ग्राम का क्वाथ बना कर सेवन करना चाहिये तथा वेदना स्थल पर एरंड तेल की मालिश करनी चाहिये।

विद्रधि : इसकी जड़ को पीसकर घी या तेल में मिला कुछ गरम कर गाढ़ा लेप करने से विद्रधि मिटती है।

सूजन : किसी प्रकार की सूजन, आमवात इत्यादि में एरंड के पत्तों को गरम कर तेल चुपड़ कर बांधने से लाभ होता है।

दाह : ज्वर में होने वाले दाह में एरंड के पत्र धोकर साफ कर शरीर पर धारण कराने से दाह नष्ट हो जाती है।

तिल मस्से : पत्र के वृन्त पर थोड़ा चूना लगा तिल पर बार–बार घिसने से तिल निकल जाता है।

पित्तजगुल्म : पित्तजगुल्म एवं पैत्तिक शूल में यष्टिमधु के 50 ग्राम क्वाथ में एरंड तैल 5–10 मिलीलीटर मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

विशेष : लाल एरंड का तेल 5 से 10 ग्राम की मात्रा में गर्म दूध के साथ लेने से योनिशूल, गुल्म, वातरक्त, हृदय रोग, जीर्णज्वर, कटि, पृष्ठ और कोष्ठशूल को मिटाता है। बुद्धि, कान्ति, आरोग्यता, स्मृति, बल और आयु को बढ़ाता है और हृदय को बलवान करता है।

हानिकारक : लाल एरंड के बीस बीजों की गिरी नशा पैदा करती है और ज्यादा खाने से बहुत वमन होता है एवं घबराहट या मूर्छा तक भी हो सकती है। यह आमाशय के लिये अहितकर होता है।

निवारण : कतीरा और मस्तगी

प्रतिनिधि द्रव्य : जमालघोटा

Scanned by CamScanner

ईसबगोल

वैज्ञानिक नाम	:	*Plantago ovata* Forsk.
कुलनाम	:	Plantaginaceae
अंग्रेजी नाम	:	Spogel seeds
संस्कृत	:	ईषद्गोल, अश्वकर्ण बीज, स्निग्ध जीरक
हिन्दी	:	ईसबगोल
गुजराती	:	ऑथर्मा, जीरु
मराठी	:	इसबगोंल
पंजाबी	:	इसपगोल
फारसी	:	अस्पगोल
तैलगु	:	हस्पगुल, इसपगोल विटुलु
अरबी	:	बज्कतूना

परिचय

ईसबगोल का मूल उत्पत्ति स्थान फारस है और यहीं से इसका हिन्दुस्तान में आयात किया जाता है। आजकल यहां पर भी इसकी खेती गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में की जाती है। औषध्यार्थ प्रयोग में इसके बीज और बीजों की भूसी प्रयुक्त की जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका 1–3 फुट ऊंचा पौधा, मौसमी, कांड रहित या झाड़ीनुमा होता है। पत्र 3 शिराओं से युक्त अखंड, 6–9 इंच तक लम्बे, पुष्प दंड गेहूं की बाल सदृश जिस पर छोटे–छोटे फूलों में नाव के आकार के बीज लगते हैं, जिनके ऊपर सफेद भूसी होती है। भूसी पानी के संपर्क में आते ही चिकना लुआव बना लेती है जो गंध रहित और स्वादहीन होती है।

रासायनिक संघटन

बीजों में काफी मात्रा में म्युसिलेज तथा एल्बुमिन तत्व पाये जाते हैं। भूसी में प्रधानतया म्यूसिलेज तथा सैल्यूलोज पाया जाता है।

गुण–धर्म

स्नेहन एवं मादर्व कारक, अतिसार, प्रवाहिका नाशक, भूसी बल्य एवं मृदुसारक। ईसबगोल अत्यंत पुष्टिकारक, मधुर, ग्राही व शीतल है। चिकना, कसैला, कुछ वातकारक व पित्त तथा कफ–नाशक है। रक्त अतिसार व रक्त पित्त नाशक है।[1]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

प्रतिश्याय :

1. पित्त प्रकृति के प्रतिश्याय में इसका लुआब निगलने से बहुत लाभ होता है।
2. कफ और प्रतिश्याय में ईसबगोल का क्वाथ पीने से लाभ होता है।

मस्तक पीड़ा : इसको यूकेलिप्टस के पत्तों के साथ पीसकर कनपटियों पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

कर्णशूल : इसके 10 ग्राम लुआब में प्याज का रस 10 ग्राम मिलाकर कुछ गर्म करके कान में डालने से कान की पीड़ा मिटती है।

मुखपाक : इसके लुआब से कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है।

दंतपीड़ा : इसको सिरके में भिगों कर दांतों के नीचे दबाकर रखने से दंत पीड़ा दूर होती है।

दमा–श्वास : ईसबगोल के 3–5 ग्राम बीजों को गर्म जल से प्रातःकाल सेवन करने से श्वांस व दमे में लाभ होता है।

उदर रोग :

1. जीर्ण आम अतिसार, रक्त अतिसार में ईसबगोल की भूसी 2 चम्मच को दही के साथ दिन में 2–3 बार सेवन करें।
2. ईसबगोल के बीजों की 1 किलो पानी में उबाले जब आधा पानी शेष रह जाये तो तीन खुराक बनाकर दिन में तीन बार देने से हर प्रकार के पेचिश, मरोड़, अतिसार इत्यादि में लाभ होता है।
3. इसके स्वच्छ बीजों को पानी में डालकर जब उनका लुआब बन जाता हैं तब इस लुआब में शक्कर डालकर पीने से एमेबिक डीसेन्ट्री, जीर्ण आम अतिसार, अतिसार, पतले दस्त, मरोड़ सब में फायदा होता है।
4. बालकों के चिरकालीन अतिसार में इसका प्रयोग बहुत लाभदायक है।
5. आंतों की दाह, शोथ को मिटाने के लिए, साबुत बीजों को या भुस्सी 10 ग्राम को ठंडे जल के साथ फंकी देनी चाहिए या उनको थोड़े जल में भिगोकर फूल जाने पर निगलवा देना चाहिए।
6. ईसबगोल के बीजों को भूनकर फंकी लेने से भी अतिसार और आम अतिसार मिटता है।

कब्ज :

1. एक से दो चम्मच की मात्रा में ईसबगोल की भूसी रात्रि में सोते समय गरम दूध के साथ लेने से कब्जियत दूर होती है।
2. ईसबगोल की भूसी व त्रिफला चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर लगभग 3 से 5 ग्राम तक रात्रि को गर्म जल से सेवन करने से सुबह मल साफ होता है। उदरशोथ व पित्त विकारों में भी यह एक अनुभूत व निरापद प्रयोग है।

रक्तार्श : इसका शर्बत पिलाने से रक्तार्श का रूधिर जाना बंद हो जाता है।

तृषा : इसके लुआब में गुडहल का शरबत मिला कर पिलाने से तृषा मिटती है।

अमीबिक पेचिश : अमीबिक पेचिश में 100 ग्राम ईसबगोल की भूसी में 50–50 ग्राम सौंफ और मिश्री मिलाकर, 2–3 चम्मच की मात्रा में दिन में 2–3 बार सेवन करें।

मूत्र विकार :

1. जब मूत्र बंद हो जाये या मूत्रदाह या मूत्राशय में दाह होती हो तो चार चम्मच भूसी को 1 गिलास पानी में भिगो दें और थोड़ी देर बाद उसमें मिश्री स्वादानुसार डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र की पीड़ा दूर होती है।
2. शीतल मिर्च 2 ग्राम और कलमी शौरे 500 मिलीग्राम के साथ इसकी फंकी मूत्रकृच्छ्र में बहुत लाभदायक है।

स्वप्नदोष : ईसबगोल और मिश्री बराबर मिलाकर एक–एक चम्मच आधा गिलास दूध के साथ सोने से एक घण्टा पूर्व सेवन करें और सोने से पहले मूत्र त्याग कर सोने से स्वप्नदोष नही होता है।

गठिया : जोड़ों के दर्द में ईसबगोल की पुल्टिस बांधने से लाभ होता है।

कांच निगलने पर : ईसबगोल की भूसी दो चम्मच की मात्रा में दूध के साथ दिन में 2–3 बार देने से लाभ होता है।

हानिकारक : नाड़ी दौर्बल्यकारक एवं क्षुधानाशक है। यह औषधि प्रसूता के लिए हानिकारक है। इसके बीजों को पीसना नहीं चाहिए।

निवारण : सिकंज बीज एवं शहद।

1. ईषद गोलं परं वृष्यं ग्राहि शीतलम्।
   पिच्छिलं तुवरं किंचद्रातकृत कफ पित्तह्यत।।
   रक्ताहिसारास्त्रं पितं च नाशयेदिति कीर्तितम्
   (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

गाजर

56

वैज्ञानिक नाम	:	*Daucus carota* L. var. *sativa* DC.
कुलनाम	:	Apiaceae
अंग्रेजी नाम	:	Carrot
संस्कृत	:	गार्जर, पिंडमूल
हिन्दी	:	गाजर
गुजराती	:	गाजर, शर
मराठी	:	गाजर, रोही मूल
पंजाबी	:	गाजर
तेलगु	:	गज्जर गड्डा, गृज्जन
अरबी	:	ज्यजर
फारसी	:	जरदकगज्य, जर्दक

परिचय

गाजर से सब परिचित हैं। गाजर की केवल तरकारी ही नहीं, इससे अनेक व्यंजन बनाये जाते हैं, गाजर का हलवा, गाजर का अचार, मुरब्बा पाक आदि। गाजर वन्यज और कृषिजन्य दो प्रकार की होती है। रंग भेद से भी यह लाल, पीली, काली, आदि अनेक तरह की होती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप अनेक शाखा युक्त, एक से चार फुट ऊंचा होता है। पत्ते–पक्षवत अनेक भागों में विभक्त, फल 1/8 लम्बे एवं रोमश, मूल 2–12 इंच लम्बा एवं मांसल, इसके अनेक प्रकार के रंग व आकार होते हैं।

रासायनिक संघटन

गाजर में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, रेशे, खनिज तत्व, कैल्शियम फास्फोरस, लौहा इत्यादि पाये जाते हैं। इसमें विटामिन ए, बी, सी तथा विटामिन बी समूह के थायमिन, रीबोफ्लोविन तथा निकोटीनिक अम्ल पाये जाते हैं। इसके बीजों में एक उड़नशील तेल पाया जाता है।

गुण–धर्म

तीक्ष्ण, मधुर, कड़वी, गरम, अग्निदीपन करने वाली, हल्की ग्राही और रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी, कफ तथा वातनाशक है।[1]

Scanned by CamScanner

राजनिघण्टु के मत में गाजर मीठी, रूचिकारक, किंचित चरपरी, अफारा दूर करने वाली कृमिघ्न तथा दाह–शूल पित्त और तृषा शामक है।[2]

जंगली गाजर : चरपरी, उष्ण, कफ, वात नाशक, दीपन, हृद्य, रूचिकारक, कुष्ठ, अर्श, शूल दाह, दमा और हिचकी में लाभकारी है।

बीज : इसके बीज स्नायु मंडल के लिए पौष्टिक है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र ज्योति : 250 ग्राम सौंफ को साफ करके कांच के पात्र में रखे, इसमें बादामी रंग की गाजरों के रस की तीन भावना दें, जब सूख जाये तो 10 ग्राम रोज रात के वक्त दूध के साथ सेवन करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

कुंजारोग : गाजर के महीन छिलकों को पीसकर आंखों में अंजन करने से कुंजा रोग मिटता है।

आधाशीशी : गाजर के पत्तों को घी से चुपड़कर गर्म करके उनका रस निकालकर 2–3 बूंदे नाक और कान में डालें, छीकें आकर आधाशीशी की वेदना जाती रहेगी।

हृदय रोग :

1. 5–6 गाजर को अंगारों में पकाये या कच्ची ही छीलकर रात भर बाहर ओस में रखी रहने दें। प्रातःकाल केवड़ा या गुलाब अर्क तथा मिश्री मिलाकर खाने से हृदय की धड़कन सामान्य हो जाती है।
2. गाजर को कद्दूकस कर दूध में उबालें, जब गाजर गल जाये तो शक्कर मिलाकर खाने से हृदय को शक्ति मिलती है।
3. गाजरों को साफ करके छोटे–छोटे टुकड़े करके शहद मिले जल में उबालें, जब गाजर कुछ नरम हो जायें तो निकालकर कपड़े पर फैलाकर कुछ खुश्क कर लें, फिर केवल शहद में उबालकर एकतार चाशनी बनायें और बरतन में रखे, इसमें एक किलोग्राम मुरब्बे में 1–2 ग्राम दालचीनी, सौंठ, इलायची, केशर, कस्तूरी तथा जायफल डाल दें। 40 दिन बाद इस मुरब्बे का सेवन 20 से 40 ग्राम तक करें, यह दिल की कमजोरी और उन्माद के लिए अति उत्तम है। यह मुरब्बा अत्यंत कामोत्तेजक है, जलोदर में भी लाभदायक है।
4. गाजर को कद्दूकस कर दूध में उबालकर खीर की तरह खाने से दिल को ताकत मिलती है, खून की कमी मिटती है।

Scanned by CamScanner

उरःशूल : गाजर को भाप में उबालकर, उसमें 10 ग्राम रस निकाले अब इसमें 20 ग्राम शहद मिलाकर पीने से छाती की पीड़ा दूर होगी।

खांसी : गाजर के स्वरस में मिश्री मिलाकर चटनी सी बना लें, अब इसमें काली मिर्च बुरककर चटाने से खांसी में लाभ होता है। कफ आराम से निकल जाता है।

अतिसार : अतिसार में गाजर का 10–20 ग्राम तक रस आवश्यकतानुसार पीने से लाभ होता है।

रक्तार्श : खूनी बवासीर में रक्त अगर अधिक गिरता हो तो दही की मलाई के साथ गाजर का 10–20 ग्राम रस पीने से लाभ होता है।

अर्श : अनारदाना या खट्टे अनार के रस तथा दही के साथ पकाया हुआ गाजर का शाक अर्श में लाभकारी होता है।

मासिक धर्म :

1. गाजर का क्वाथ सुबह–शाम पीने से गर्भाशय से दूषित पदार्थ निकालकर वह शुद्ध हो जाता है। कुछ दिन सेवन करने से मासिक धर्म ठीक प्रकार से होने लगता है और उस समय होने वाला कष्ट भी मिट जाता है।
2. 20 ग्राम गाजर के बीज, सोया, मूली, प्याज, पालक, बथुआ, मैथी, अजवायन इन सबके बीज 3–3 ग्राम, धमासा, कुटकी, बैंगन, इन्द्रायन, उलट कंबल तथा ऊंटकटारा इन सबकी जड़ 3–3 ग्राम तथा बांस की लकड़ी का चूरा तीन ग्राम, इसमें 20 ग्राम गुड़ मिलाकर एक किलोग्राम पानी में क्वाथ करें। 100 ग्राम शेष रहने पर इसकी 3 मात्रा स्त्री को तीन बार पिलाने से कष्टार्तव, मूढ़गर्भ और गर्भाशय के अन्दर का सब परिस्राव बाहर निकल कर गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

गर्भाशय शुद्धि : जंगली गाजर को कद्दूकस करके इसके रस में कपड़े को तर करके योनि में रखने से गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

प्रसव कष्ट :

1. प्रसव के समय कष्ट को कम करने के लिए गाजर के 10 ग्राम बीज और उसके 100 ग्राम पत्तों का काढ़ा बनाकर पिलाने से प्रसव कष्ट कम होता है।
2. योनि में इसके बीजों की धूनी देने से भी कष्ट कम होता है।

सूजन : सूजन से पीड़ित रोगी को गाजर की तरकारी खिलानी चाहिए।

पित्तशोथ : गाजर की पुल्टिस में नमक डालकर बांधने से वह पित्त शोथ उतर जाती है जिसमें फुन्सियां हो जाती हैं।

दग्ध : गाजर को उबालकर, पीसकर जले हुए स्थान पर लेप करने से दाह मिटती है।

व्रण:

1. बिगड़े हुए फोड़ों पर गाजर की पुल्टिस बांधने से वे ठीक हो जाते हैं।
2. गाजर को उबालकर पीस ले, इस लेप को पूय युक्त दुर्गन्धित व्रणों पर बांधने से व्रण अतिशीघ्र स्वच्छ हो जाते हैं।

अचार : गाजर का सिरके में डाला हुआ अचार यकृत और प्लीहा वृद्धि को मिटाता है। अगर कुछ हानि करे तो प्रयोग बंद कर दें।

1. गाजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु।
संग्राहि रक्तपित्तार्शो ग्रहणी कफ वात जित्।। (भाव प्रकाश)

2. गाजरं मधुरं रूच्यं किंचित कटुकफापहम्।
आध्मान् कृमिशूलघ्नं दाह पित्त तृषापहम्।। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

57 गंभारी शिवण

वैज्ञानिक नाम	:	*Gmelina arborea* Roxb.
कुलनाम	:	Verbenaceae
संस्कृत	:	गंभारी, श्रीपर्णी, मधुपर्णिका काश्मरी, पीतरोहिणी
हिन्दी	:	गंभारी, गंभार
गुजराती	:	शीवसा, शीवण
मराठी	:	शिवरा, शिवण
बंगाली	:	गाभार
तमिल	:	गुमादि
तेलगु	:	पद्मगोमरू

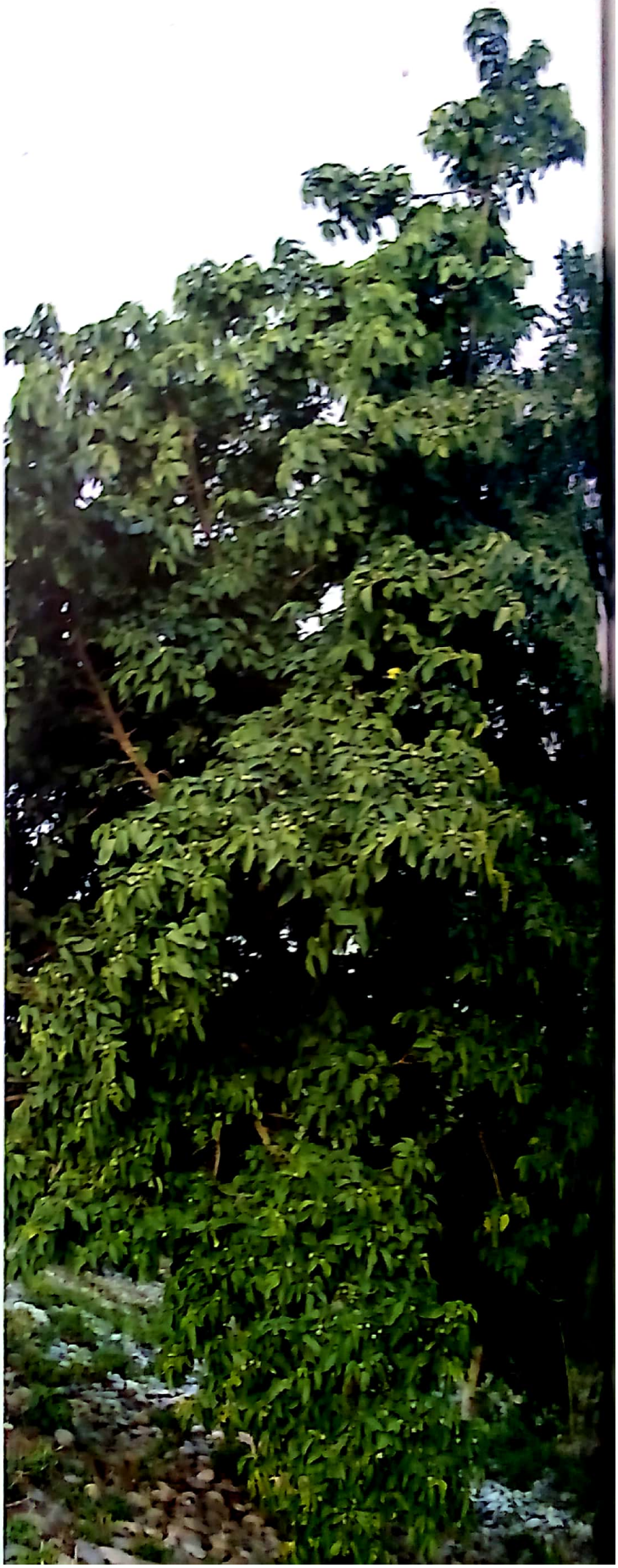

परिचय

पत्रों में मधु सदृश रस होने के कारण मधुपर्णिका, पत्र सुन्दर होने के कारण श्रीपर्णी और पीत पुष्पों से सुशोभित होने से पीतरोहिणी नामों से अलंकृत गंभारी के वृक्ष प्रायः सभी प्रान्तों में विशेषतः पार्वत्य प्रदेश हिमालय, नीलगिरी तथा पूर्वी और पश्चिमी घाटों में विशेष होता है।

बाह्य–स्वरूप

गंभारी के वृक्ष 40–60 फुट तक ऊँचे, कांडत्वक् धूसर वर्ण की और पुरानी होने पर हल्के रंगीन टुकड़ों में छूटती रहती है। अन्तर छाल ऊपर से हरी, परन्तु उसके बाद हल्की पीताभ तथा केन्द्र में श्वेत वर्ण की होती है। पत्र 4–9 इंच लम्बे, 2.5 से 8 इंच चौड़े लट्वाकार या हृदयाकार पीपल की तरह लम्बाग्र होते हैं। पुष्प रक्ताभ या पीतवर्ण के लम्बी में अंजरियों में लगते हैं। फल अंडाकार, ¼ इंच पीतवर्ण का होता है। इसके भीतर 1–2 बीज होते हैं। पतझड़ में वृक्ष निष्पत्र हो जाता है, उसके बाद पर्णहीन वृक्ष पर बसन्त में पुष्प और ग्रीष्म में फल लगते हैं।

रासायनिक संघटन

गंभारी मूल में एक पीतवर्ण का गाढ़ा तेल, और कुछ बेन्जोइक एसिड होता है। फल में ब्यूटिरिक व टार्टरिक अम्ल, एक क्षाराभ, शर्करा, राल और कुछ कषाय द्रव्य होते हैं।

गुण–धर्म

वात, पित्त, कफ तीनों दोषों का शमन करता है। यह दीपन–पाचन, मेध्य, भेदक, भ्रम तथा शोथहर है।[1] इसका फल बलकारक, वृष्य,

Scanned by CamScanner

गुरू, बालों को हितकारी, वातपित्त नाशक, तृष्णा हर, रक्तशोधक, हृद्य, है। इसका फल रसायन है तथा रक्तरोधक तथा रक्तपित्त शामक द्रव्यों में श्रेष्ठ कहा गया है।[2] इसकी पत्तियाँ स्नेहन और शीतल होती हैं, यह दाह वेदना को दूर करने वाली तथा मूत्रल है। छाल शोथहर तथा कटुपौष्टिक है। गंभारी के बीजों का तेल, मधुर, कषाय तथा कफ पित्त नाशक है।[3] गंभारी फल, मुलेठी, चंदन, लाल चंदन यह सब पित्त ज्वर नष्ट करते हैं, खासकर दाह को नष्ट करते हैं।[4] गंभारी फल, नागकेशर आदि अम्बष्ठादि गण की औषधियां टूटी अस्थियों को जोड़ने वाली, पित्त में हितकारी और व्रण का रोपण करने वाली हैं।[5]

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : ज्वर में जब शिरोवेदना हो तो, इसकी पत्तियों को पीसकर सिर पर लेप करते हैं, इससे दाह और पीड़ा शांत होती है।

रक्त अतिसार : रक्त अतिसार में गंभारी के ताजे फलों को कूटकर रस निकालकर 1–1 चम्मच रस 3–4 बार कुछ दिन पिलाने से लाभ होता है।

अग्निमांद्य : अग्निमांद्य में इसकी मूल का 3 ग्राम चूर्ण का प्रातः–सायं सेवन लाभकारी है। इसकी मूल का 40 मिलीलीटर क्वाथ प्रातः सांय ज्वर, मंदाग्नि और सर्वांग जलमय शोथ आदि कई दूसरे रोगों में प्रयोग करने से लाभ होता है।

उदर शूल : इसकी मूल का 3 ग्राम चूर्ण उदर पीड़ा को कम करता है, तथा मल को ढीला कर देता है।

आंत्रकृमि : इसकी जड़ का 50 से 100 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से आंतों के कीड़े मर जाते हैं।

स्तन शैथिल्य के लिये : 2 किलोग्राम छाल को कूटकर 16 कि०ग्रा० जल में चतुर्थांश क्वाथ लें। 250 ग्राम छाल को पानी के साथ पीसकर चटनी बना लें, कल्क तथा क्वाथ में 1 किलोग्राम तिल का तेल मिलाकर तेल को सिद्ध कर रख लें, इस तेल में रूई को भिगोकर स्तनों पर रखते रहने से, शिथिल स्तन दृढ़ एवं पुष्ट होते हैं।

सूतिका रोग : सूतिका रोग में 20–30 ग्राम छाल को 240 मि०ली० जल में उबालकर चतुर्थांश बचे क्वाथ का नियमित प्रातः–सायं सेवन करने से, गर्भाशय का शोथ कम होकर ज्वरादि उपद्रव शान्त होते हैं, तथा स्तनों में दूध की वृद्धि होती है।

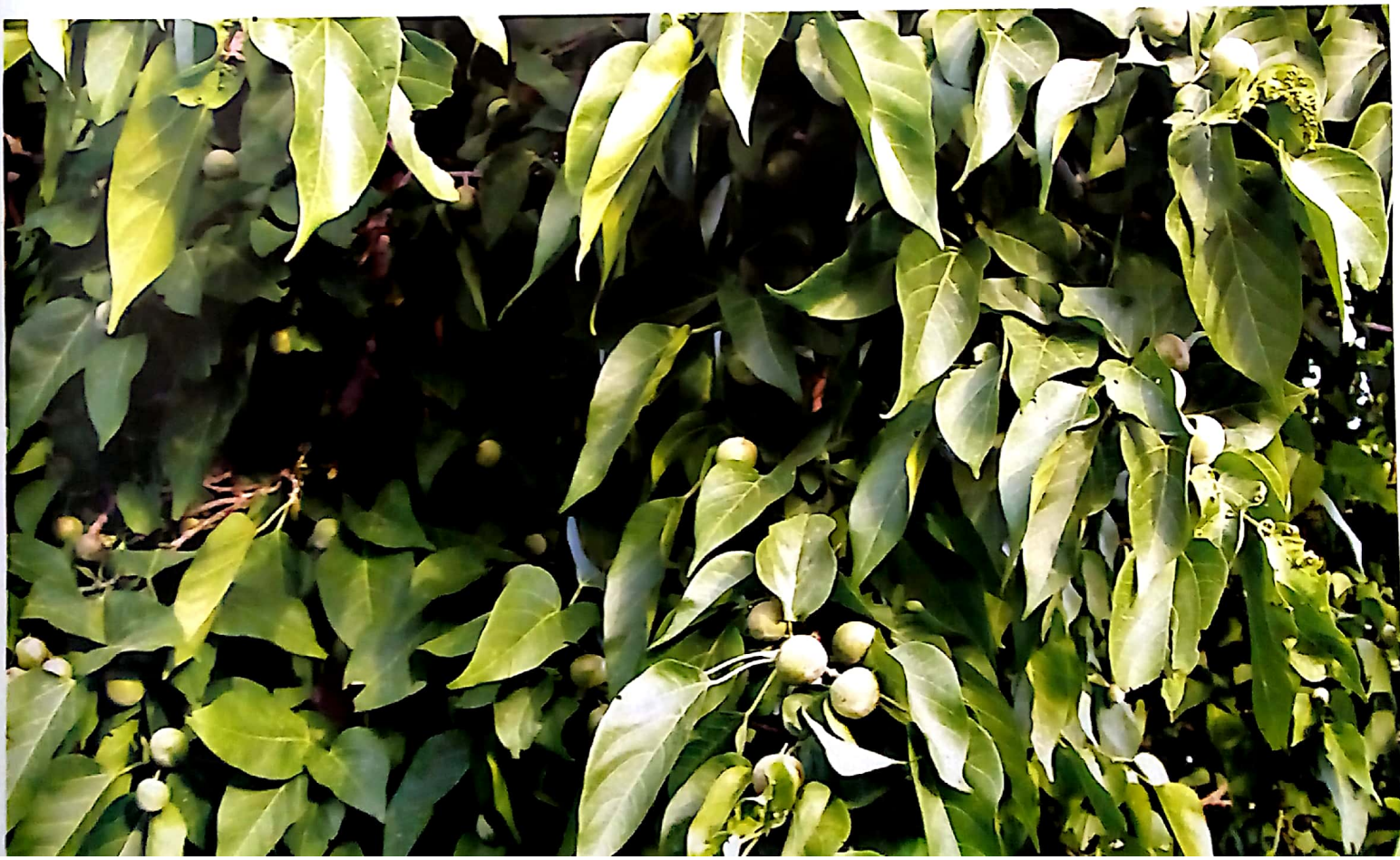

Scanned by CamScanner

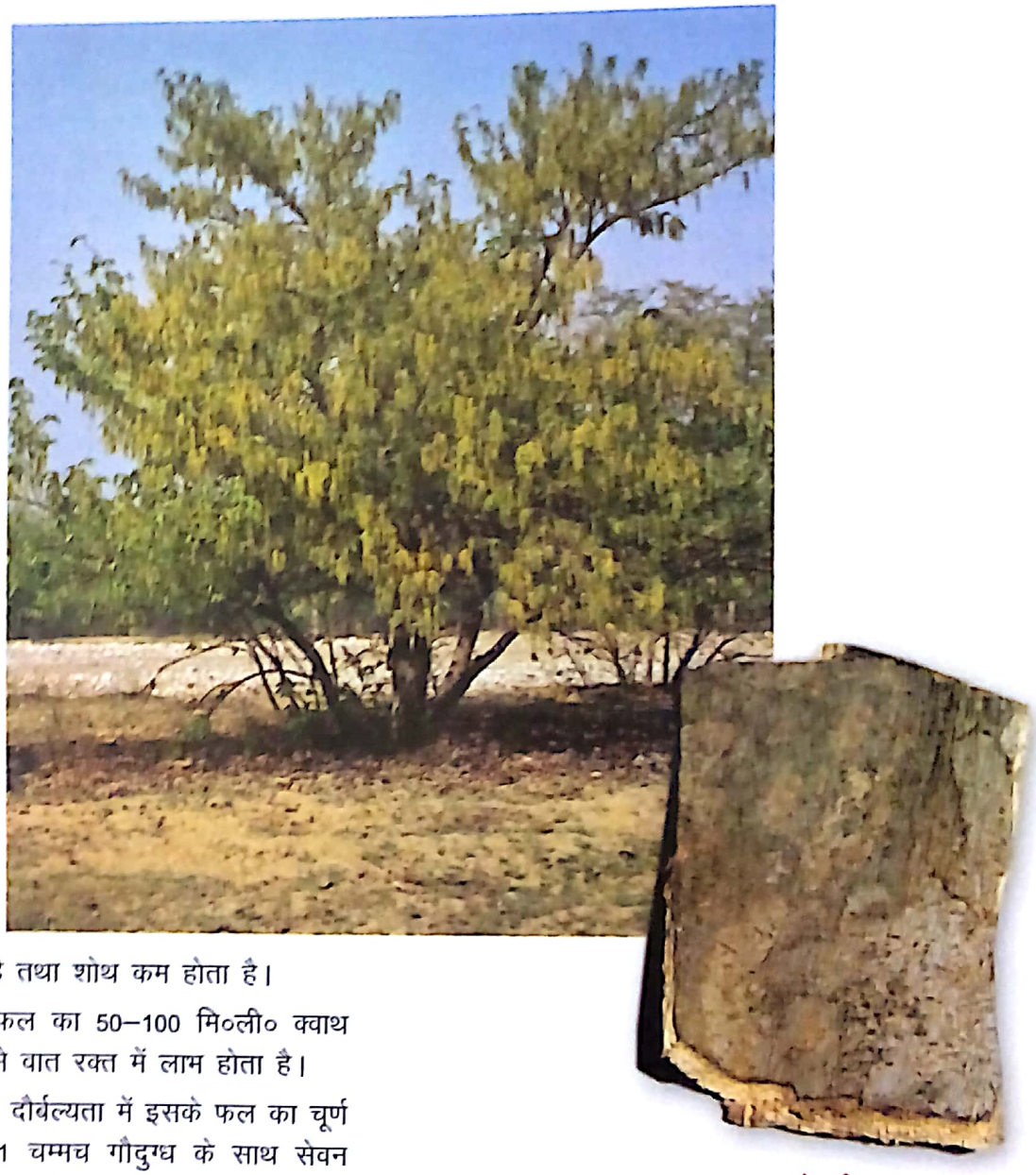

गंभारी छाल

गर्भरक्षार्थ : गंभारी फल और मुलेठी के समभाग चूर्ण में दोनों के बराबर मिश्री मिलाकर, 3 ग्राम की मात्रा में मधु के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से गर्भावस्था में बालक की रक्षा हो जाती है।

कफज रोग : गंभारी और अड़ूसे के कोमल पत्तों के 10–20 मिलीलीटर स्वरस को प्रातः–सायं पीने से कफज रोग मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र : इसके कोमल पत्तों के 5 ग्राम के लगभग स्वरस को पीने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

पूयमेह : पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र व बस्ति शोथ में इसके फल एवं पत्तियों का 10–20 मिलीलीटर स्वरस गौदुग्ध और मिश्री मिलाकर सेवन करने से मूत्र का गंदलापन दूर होता है, वेदना शांत होती है तथा शोथ कम होता है।

वातरक्त : मुलेठी और गंभारी फल का 50–100 मि०ली० क्वाथ बनाकर दिन में तीन बार पीने से वात रक्त में लाभ होता है।

दुर्बलता : सामान्य दुर्बलता, शुक्र दौर्बल्यता में इसके फल का चूर्ण मिश्री मिलाकर सुबह–शाम 1–1 चम्मच गौदुग्ध के साथ सेवन करें तथा ज्वर के बाद की दुर्बलता में इसकी छाल का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ बनाकर पीना अत्यन्त लाभदायक है।

शीत पित्त : गंभारी और गूलर के सूखे या ताजे पके फलों का 50–100 मि॰ली॰ क्वाथ बनाकर प्रातः–सायं पीने से शीतपित्त रोग में लाभ होता है।

ज्वर :

1. दाह और तृष्णा युक्त विषम ज्वर में गंभारी के 40–50 मिलीलीटर क्वाथ में चीनी या मिश्री मिलाकर शीतल करके प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।
2. गंभारी के फलों के 1 चम्मच रस का पित्तज्वर में नियमित दिन में तीन बार सेवन गुणकारी है।

क्षत : इसके कोमल पत्तों को पीसकर लेप करने से अंगुली के नख संबंधी क्षत मिटते हैं।

1. काश्मरी तुवरा तिक्ता वीर्योष्णा मधुरा गुरुः।
   दीपनी पाचनी मेध्या भेदनी भ्रमशोथजित्।
   दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा।।
   तत्फलं वृंहणं वृष्यं गुरु केश्यं रसायनम्।।
2. वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत्।
   स्वादु पाके हिमं स्निग्धं तुवराम्लं विशुद्धिकृत।।
   हन्याद् दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान्। (भाव प्रकाश)
3. हृद्यं मूत्रविबन्धघ्नं पित्तासृग्वातनाशनम्।
   केश्यं रसायनं मेध्यं काश्मर्यं फलमुच्यते।। (सुश्रुत)
4. काश्मर्यफलं रक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम्। (चरक)
5. काश्मर्य तैलानि मधुरकषायाणि कफपित्तप्रशमनानि।। (सुश्रुत)
6. सरिवामधुकचंदनकुचन्दनपद्यककाश्मरीफलमधूकपुष्पाण्युशीरं चेति.....।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Tagetes erecta* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Aztec, African marigold
संस्कृत	:	झण्डू
हिन्दी	:	गेंदा
गुजराती	:	गल गोटो
मराठी	:	झेंडु
बंगाली	:	गेंदा
तैलगु	:	बांटिचेट्टु
मलयालम	:	चेंडुमल्ली
फारसी	:	गुलहजारा

परिचय

गेंदे का पौधा अपने सुन्दर आकर्षक पुष्पों, पत्तियों से निकलती मदमस्त खुशबू (मसलने पर) की वजह से घरों और उद्यानों में लगाया जाता है। पुष्प भेद से इसकी कई जातियां होती है, परंतु इनमें (1) हजारा इसका फूल बड़ा (2) सुरनाई, (3) कौकहान–लाल और पीले रंग के दलचक्र वाला प्रमुख है।

बाह्य–स्वरूप

यह 2–3 फुट ऊंचा रोमश क्षुप होता है। कांड और शाखाएं रोमयुक्त लाल बैंगनी रंग की, पत्र एकान्तर पक्षवत, विभक्त रोमश, उग्रगंधि (मसलने पर खुशबू आती है)। मालाकार, दंतुर, पुष्प बड़े मुंडकों में गहरे पीले या नारंगी रंग के, बीज लम्बे कृष्ण वर्ण होते है।

रासायनिक संघटन

पुष्प में अनेक रंजक द्रव्य, बीजों मे प्रोटीन तथा तेल, इसके अतिरिक्त पौधे से भी एक उग्रगंधि तेल प्राप्त किया जाता है।

गुण–धर्म

गेंदा कफ पित्त प्रशमन, शोथहर, रक्तरोधक एवं रक्त शोधहर है।[1]

औषधीय प्रयोग

दंतशूल : गेंदे के पत्तों के क्वाथ से कुल्ले करने से दांतों के दर्द में फौरन आराम हो जाता है।

कर्णशूल : इसके पत्तों का रस 2–2 बूंद कान में डालने से कर्णशूल मिट जाता है।

स्तनशोथ : गेंदे के पत्तों को पीसकर स्तनों पर लगाने और कपड़ा डालकर सिकाई करने से सूजन उतर जाती है।

श्वास :

1. इसके पुष्पों के बीजों की घुंडी का 2–5 ग्राम चूर्ण, 10 ग्राम शक्कर और एक चम्मच दही के साथ दिन में 3 बार लेने से दमा और खांसी दूर होती है।
2. गेंदे के बीजों का चूर्ण बनाकर उसमें समभाग मिश्री मिलाकर एक चम्मच की मात्रा में पानी के साथ 2–3 बार सेवन करने से खांसी और दमा में लाभ होता है।

रक्त प्रदर : रक्त प्रदर में इसके फूलों के स्वरस का 5–10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है। इसके फूलों के 20 ग्राम कल्क को 10 ग्राम घी में भूनकर सेवन करने से लाभ होता है।

गुदभ्रंश: गेंदे के 10 ग्राम पत्तों को दो चम्मच पानी मे पीसकर 5 ग्राम मिश्री मिलाकर छानकर सेवन करने से गुदभ्रंश में आराम

Scanned by CamScanner

मिलता है।

बवासीरः

1. गेंदे के पत्ते 10 ग्राम, काली मिर्च दो ग्राम, दोनों को एक साथ पीसकर पीने से अर्श रोग में लाभ होता है।
2. इसके फूल की पंखुडियों को 5 से 10 ग्राम तक घी में भूनकर दिन में तीन बार देने से बवासीर से बहने वाला खून बंद हो जाता है।
3. गेंदे के पत्तों का अर्क खींचकर पीने से अर्श में बहने वाला रक्त तुरन्त बंद हो जाता है। 250 ग्राम गेंदे के पत्ते और केले की जड़ दो किलो, इनको रात्रि में पानी में भिगो दें और सुबह अर्क खींच ले, इस अर्क की 15–20 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करें।
4. रक्तार्श में इसके पुष्पों के 5–10 ग्राम स्वरस का दिन में दो–तीन बार सेवन भी लाभकारी है।

मूत्रविकार : गेंदे के 10 ग्राम पत्तों को पीसकर उनके रस में मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार पीने से रूका हुआ पेशाब खुलकर आ जाता है।

अश्मरी : इसके पत्तों के 20–30 ग्राम क्वाथ को दिन में दो बार कुछ दिनों तक सेवन करने से अश्मरी गलकर निकल जाती है।

स्तम्भन : एक चम्मच गेंदे के बीज और इतनी ही मात्रा में मिश्री मिलाकर एक कप दूध के साथ सुबह–शाम नियमित रूप से कुछ दिनों तक सेवन करने से वीर्य और स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

चोट–मोच–सूजन : गेंदे के पंचाग का रस निकाल कर चोट–मोच और सूजन पर लगाने से आराम मिलता है।

बिवाई : गेंदे के पत्तो का रस वैसलीन में मिलाकर हाथ पैरों पर मलने से बिवाई और हाथ पैरों की खुश्की दूर होती है।

घाव : गेंदे के पत्तों को पीसकर फोड़े–फुन्सी और घाव पर लगाने से आराम होता है। अर्श के मस्सों पर भी आराम होता है।

कामशक्ति : इसके 10 ग्राम बीजों को कूटकर खाने से काम शक्ति समाप्त हो जाती है।

हानि : इसका अत्यधिक प्रयोग हानिकारक है। यह कामशक्ति को घटाता है।

1. झंडुः कटुकषायास्यातिक्ता शीता च वीर्यतः।
   कफ पित्त प्रशमनं रक्तसांग्रहिकं परम्।।

(द्रव्यगुण विज्ञान)

Scanned by CamScanner

गिलोय (अमृता)

वैज्ञानिक नाम	:	*Tinospora cordifolia* (Willd.) Hook. f. & Thoms.
कुलनाम	:	Menispermaceae
अंग्रेजी नाम	:	Tinospora
संस्कृत	:	गुडूची, अमृत वल्ली, छिन्ना, मधुपर्णी, वत्सादनी, कुण्डलिनी
हिन्दी	:	गिलोय, गुडुचि
गुजराती	:	गलो
मराठी	:	गुलवेल
पंजाबी	:	गलो, गिलो
तेलगु	:	टिप्पाटिगो
कन्नड़	:	अमृतबल्लि

परिचय

अमृता, अमृतवल्ली अर्थात कभी न सूखने वाली गिलोय बड़ी लता रूपी मोटी झाड़ी है। यह समुद्र तल से लगभग 1,000 फुट की ऊचाई तक पाई जाती है। इसका तना काफी मोटा होता है। देखने में यह रस्सी जैसा लगता है। कोमल तने तथा शाखाओं से कई वायुवीय जड़े निकलती है। इस पर पीले व हरे रंग के फूल झुंड में लगते है। पत्ते कोमल पान के आकार के तथा फल मटर के दाने जैसे होते है। यह भारतवर्ष में प्रायः कुमाऊँ से आसाम और बर्मा तक और बिहार तथा कॉकण से कर्नाटक और सीलोन तक सब जगह पाई जाती हैं। कुन्तालाकर क्रम में यह जिस वृक्ष पर चढ़ती है उसी वृक्ष के कुछ गुण भी अपने अन्दर समाहित कर लेती है, इसीलिये नीम वृक्ष पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ मानी जाती है।

बाह्य–स्वरूप

गुडूची की बेल प्रायः जंगल में, खेतों की मेढ़ो, चट्टानों आदि स्थानों में कुंडलाकार चढ़ती हुई मिलती है। यह आम और नीम के वृक्षों पर भी पाई जाती है। इसका तना मोटा होता है। इसकी विशिष्ट पहचान यह है कि इसकी बाह्य छाल हल्के भूरें रंग की कागज जैसी परतो में होती है। खुरचने पर यह परतों में निकलती है। अन्दर से कांड हरा और गूदेदार होता है। इसके तने से वायवीय जड़े निकलकर झूलती रहती है, जो भूमि के अन्दर घुसकर नये पौधे को जन्म देती है। पत्ते एकान्तर पान के आकार के हृदयाकार, जाली दार और स्निग्ध होते है। पत्रावरण बहुत पतला, होता है।

पर्णवृन्त 1–3 इंच तक लम्बा तथा फूल ग्रीष्म ऋतु में छोटे–छोटे पीले रंग के गुच्छों में आते है। फल भी गुच्छों में ही लगते हैं, तथा पकने पर लाल हो जाते है। बीज सफेद चिकने कुछ टेढे मिर्च के दानों के समान होते हैं।

रासायनिक संघटन

गिलोय के कांड में लगभग 1.2 प्रतिशत स्टार्च के अतिरिक्त अनेक कडुवे जैव सक्रिय संघटक पाये गये है। गिलोय में "गिलोइन" नामक एक कडुआ ग्लूकोसाइड तथा तीन प्रकार के एल्कोलाइड होते है। इनमें एक प्रमुख क्षाराभ बर्बेरीन है। इसके अतिरिक्त तिक्त ग्लूकोसाइड, गिलोइमिन, कैसमेंथिन, पामारिन्, रीनात्पेरीन, टीनोस्पोरिक नामक जैव सक्रिय पदार्थ पाये जाते है। इसमें एक उड़नशील तेल होता है एवं वसा, अल्कोहल, ग्लिस्रौल, एक एसेंशियल आयल तथा कई प्रकार के वसा अम्ल होते है।[12]

गुण–धर्म

यह त्रिदोष शामक है। स्निग्ध होने से वात, तिक्त कषाय होने से कफ और पित्त का शमन करता है। यह कुष्ठघ्न, वेदनास्थापन, तृष्णानिग्रहण, छर्दिनिग्रहण, दीपन, पाचन पित्तसारक, अनुलोमन और कृमिघ्न है। आमाशयगत अम्लता इससे कम होती है। यह हृदय को

Scanned by CamScanner

बल देने वाली, रक्त विकार तथा पांडु रोग में गुणकारी है। कास, दौर्बल्य, प्रमेह, मधुमेह में, त्वचा के रोगों में तथा कई प्रकार के ज्वर में उत्तम कार्य करती है। आधुनिक चिकित्साशास्त्रियों के विचार से गिलोय सूक्ष्मतम विषाणु समूह से लेकर स्थूल कृमियों तक पर अपना प्रभाव दर्शाती है। क्षय रोग उत्पन्न करने वाले 'माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबर–कुलौसिस' जीवाणु की वृद्धि को यह सफलतापूर्वक रोकती है। शरीर के जिस भाग में भी ये जीवाणु शान्त अवस्था में पड़े हों, गिलोय वहीं पर पहुँचकर उनका नाश करती है। ई० कोलाई नामक रोगाणु को जो आंत और मूत्रवहसंस्थान के साथ–साथ पूरे शरीर को प्रभावित करता है, को जड़ से उखाड़ डालती है। इसके जल निष्कर्ष में फंगोसिटिक इंडेक्स' काफी अधिक मात्रा में पाया जाता है अर्थात रक्त के जीवाणु भक्षी कोषों की तरह इसके सूक्ष्म घटक भी आयोनिक गति से रोगाणुओं पर आक्रमण कर उन्हें मार डालने की क्षमता रखते हैं।

गिलोय के रसायन का ग्लूकोज टालरेंस तथा एड्रीनेलिन जन्य हाइपर ग्लाइसीमिया में इसका लाभकारी एवं त्वरित परिणाम होता है। यह शरीर में इंसुलिन की उत्पत्ति व रक्त में उसकी घुलनशीलता को बढ़ाती है। इससे रक्तशर्करा घटती है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र विकार :

1. गिलोय के 11.5 ग्राम स्वरस में शहद व सैंधा नमक 1–1 ग्राम मिलाकर खूब अच्छी प्रकार से खरल कर नेत्रांजन करने से तिमिर, पिल्ल, अर्श, काच, कंडू लिंगनाश एवं शुक्ल तथा कृष्ण पटल गत नेत्र रोग नष्ट होते है।
2. गिलोय रस में त्रिफला मिलाकर क्वाथ बनाकर इसे पीपल चूर्ण व शहद के साथ प्रात–सायं सेवन करते रहने से नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है।

वमन :

1. धूप में घूमने–फिरने से, या पित्त प्रकोप से वमन हो, तब गिलोय स्वरस 10–15 ग्राम में 4–6 ग्राम तक मिश्री मिलाकर प्रात–सायं पीने से वमन शांत हो जाती है।
2. गिलोय के 125 से 250 मि०ली० हिम में 15 से 30 ग्राम तक शहद मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से कष्ट साध्य वमन भी बन्द हो जाती है।

कान का मैल : गिलोय को पानी में घिस गुनगुना करके कान में 2–2 बूंद दिन में दो बार डालने से कान का मैल निकल जाता है।

संग्रहणी : शोंठ, मोथा, अतीस, गिलोय इन्हे समभाग लेकर जल में क्वाथ करें। इस क्वाथ को 20–30 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम पीने से मन्दाग्नि, निरंतर कोष्ठ का आमदोष युक्त रहना एवं आम संयुक्त ग्रहणी रोग शान्त होता है।

छर्दि :

1. अड़ूसाछाल, गिलोय, छोटी कटेरी को समभाग लेकर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ के शीतल होने पर मधु मिलाकर पीने से शोथ, कास, श्वास, ज्वर तथा छर्दि शान्त होती है।[12]
2. गिलोय का 10–20 ग्राम क्वाथ अथवा हिम में 2 चम्मच मधु मिलाकर पीने से सब प्रकार की छर्दियों में लाभ होता है।[9]

हिक्का : गिलोय और सोंठ के चूर्ण की नस्य देने से हिचकी बन्द होती है। अथवा गिलोय चूर्ण एवं सोंठ के चूर्ण का हिम बनाकर उसमें दूध मिलाकर पिलायें।

कामला :

1. 20–30 ग्राम अमृता क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिलाकर दिन में तीन–चार बार पिलाने से कामला रोग मिटता है।
2. इसके 10–20 पत्तों को पीसकर एक गिलास छाछ में मिलाकर तथा छानकर प्रातःकाल पीने से कामला मिटता है।

Scanned by CamScanner

3. इसके छोटे–छोटे टुकड़ों की माला बनाकर पहनने से कामला रोग में लाभ मिलता है।

अर्श : हरड़, गिलोय, धनिया तीनों को समभाग 20 ग्राम लेकर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में गुड़ डालकर प्रातः–सायं सेवन करने से सब प्रकार के अर्श नष्ट होते है।[5]

पांडुरोग :

1. पुनर्नवा, नीम की छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कटुकी, गिलोय, दारुहल्दी, हरड़, प्रत्येक 20 ग्राम, क्वाथार्थ जल 320 ग्राम, शेष क्वाथ 80 ग्राम इस क्वाथ को 20 मि०ली० मात्रा में सुबह–शाम पीने से सर्वांग शोथ, उदर रोग, पार्श्वशूल, श्वांस तथा पांडु रोग नष्ट होता है।[2]
2. गिलोय रस एक किलो, कांड कल्क 250 ग्राम, दूध 4 किलो और भैंस का घी एक किलो लेकर, मन्द अग्नि पर पकाकर घी मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें। 10 ग्राम घी चौगुने गाय के दूध में मिलाकर प्रातः–सायं पीने से पाण्डु, कामला एवं हलीमक मिटता है।

प्रमेह :

1. गिलोय, खस, पठानी लोध्र, अंजन, लाल चन्दन, नागरमोथा, आवँला, हरड़, परवल की पत्ती, नीम की छाल पद्मकाष्ठ इन सभी द्रव्यों को समभाग लेकर कूट पीस, छानकर रख लें। इनके सम्मिलित चूर्ण को 10 ग्राम की मात्रा लेकर मधु के साथ मिलाकर दिन में तीन बार देने से पित्तज प्रमेह नष्ट हो जाते है।[15]
2. गिलोय का रस, षट्पल घृत का पान, अभया या त्रिफला का क्वाथ विषमज्वर तथा प्रमेह में पीना चाहिये।[3]
3. गिलोय और चित्रक का 20–30 ग्राम क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से सर्पि प्रमेह मिटता है। गिलोय के 10–20 ग्राम स्वरस में 2 चम्मच मधु मिलाकर दिन में दो तीन बार पीने से प्रमेह नष्ट होता है।
4. 1 ग्राम गिलोय सत् में 3 ग्राम शहद को मिलाकर प्रातः–सायं चाटने से लाभ मिलता है।

हलीमक : इसके रस से या कल्क से सिद्ध किया हुआ भैंस का घी 5–10 ग्राम लेकर चौगुने दूध में मिलाकर पीने से हलीमक मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र : इसके 10–20 ग्राम स्वरस में पाषाण भेद का 2 ग्राम चूर्ण और 1 चम्मच मधु मिलाकर दिन में तीन–चार बार चटाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

यकृत विकार व मंदाग्नि : ताजी गिलोय 18 ग्राम, अजमोद 2 ग्राम छोटी पीपल 2 नग, नीम की सीके 2 नग इन सबको कुचलकर, रात्रि को 250 ग्राम जल के साथ मिट्टी के बरतन में रख दें। प्रातः पीस छानकर पिला दें। 15 से 30 दिन तक सेवन से पेट के सब रोग दूर होते है।

श्लीपद : 10–20 ग्राम गिलोय के रस में 50 मिलीलीटर कटु तेल (सरसों का तेल) मिलाकर प्रतिदिन सुबह–शाम खाली पेट पीने से श्लीपद नष्ट होता है।[4]

गठिया : दूध के साथ इसके 2–5 ग्राम चूर्ण की फंकी दिन में दो–तीन बार देने से गठिया और मूत्राम्लता मिटती है।

कुष्ठ : कुष्ठ रोग में इसका 10–20 ग्राम स्वरस दिन में दो–तीन बार कुछ महीनों तक नियमित पिलाना चाहिए।

शीतपित्त : गिलोय, स्वरस में 10–20 ग्राम बावची को पीस कर लेप करने तथा मलने से लाभ होता है।

जीर्ण ज्वर :

1. जीर्ण ज्वर या छः दिन से भी अधिक समय से चले आ रहे व न टूटने वाले ज्वरों में 40 ग्राम गिलोय अच्छी तरह कुचलकर, मिट्टी के बरतन में 250 ग्राम पानी मिलाकर रात भर ढककर रखते है। और प्रातः मसलकर छान प्रयोग करते है। 20 ग्राम की मात्रा दिन में तीन बार पीने से ज्वर नष्ट हो जाता है।
2. गिलोय का स्वरस 20 ग्राम, इसमें 1 ग्राम पिप्पली तथा 1 चम्मच मधु का प्रक्षेप देकर प्रातः–सायं सेवन करने से जीर्णज्वर, कफ, प्लीहारोग, कास, अरुचि आदि रोग नष्ट होते है।[5]

वातरक्त :

1. मुंडी के 2–5 ग्राम चूर्ण को 2 चम्मच शहद और 1 चम्मच घी के साथ चाटकर गिलोय के 40–60 ग्राम क्वाथ को सुबह–शाम पीने से वातरक्त शान्त होता है।[1]
2. गिलोय के 5–10 मिलीलीटर रस अथवा, 3–6 ग्राम चूर्ण, या 10–20 ग्राम कल्क अथवा 40–60 ग्राम क्वाथ को प्रतिदिन निरंतर कुछ समय तक सेवन करने से रोगी वातरक्त से मुक्त हो जाता है।[4]

Scanned by CamScanner

वातज्वर : बिल्व, अरणी, गम्भारी, श्योनाक (सोनापाठा) तथा पाढ़ल इनके जड़ की छाले तथा गिलोय, आँवला, धनिया ये सब बराबर लेकर, इनके 20–30 ग्राम क्वाथ को दिन में दो बार वातज्वर में सेवन करना चाहिये।[2]

राजयक्ष्मा (टी.बी.) : असगन्ध, गिलोय, शतावर, दशमूल, बलामूल, अडूसा, पोहकरमूल तथा अतीस को समभाग लेकर बनाये गये क्वाथ की 50–60 ग्राम मात्रा को सुबह–शाम सेवन करने से राजयक्ष्मा नष्ट होता है।[1] पथ्य–केवल दूध अथवा मांसरस।

विविध : गिलोय के 10–20 ग्राम रस के साथ गुड़ का सेवन करने से बद्धकोष्ठ मिटता है। मिश्री के साथ सेवन करने से पित्त के उपद्रव मिटते है। मधु के साथ सेवन करने से कफ मिटता है। सौठ के साथ सेवन करने से आमवात मिटता है। काली मिर्च और सुखोष्ण जल के साथ सेवन करने से हृदय शूल मिटता है। इसका प्रयोग व्याधिनुसार अनुपात के सात दिनों तक नियमित रूप से करना चाहिए।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

हमने अनेक रक्त कैंसर के रोगियों पर जवहर के साथ गिलोय स्वरस मिलाकर दिया तो देखा कि रक्त कैंसर ठीक हो गया। हम आज भी इसका प्रयोग कर रहे हैं और रोगी का कैंसर ठीक हो रहा है।

विधि : गिलोय लगभग 2 फुट लम्बी तथा एक अगुंली जितनी मोटी, 10 ग्राम गेहूँ की हरी पत्तियां लेकर थोडा पानी मिलाकर पीस लें, कपड़े से निचोड़ कर 1 कप की मात्रा में खाली पेट प्रयोग करें। आश्रम द्वारा दी जाने वाली औषधियों के साथ उक्त रस का सेवन कैंसर जैसे भयानक रोगो से शीघ्र मुक्ति प्रदान करने में सहयोग करता है।

1. गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपाका रसायनी।
संग्राहिणी कषायोष्णा लघ्वी बल्याग्निदीपनी।।
दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्च पाण्डुताम्।
कामला कुष्ठवातास्रज्वरकृमिवमीर्हरेत्।। (भाव प्रकाश)
2. अमृता सांग्राहिक–वातहर–दीपनीय
श्लेष्मशोणित्विबन्धप्रशमनानाम् (चरक)
3. ज्ञेया गुडूची गुरुष्णवीर्या तिक्ता कषाया ज्वरनाशिनी च।
दाहार्तितृष्णावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणी च।। (रा०नि०)
4. कन्दोद्भवा गुडूची च कटूष्णा संनिपातहा।
विषघ्नी ज्वरभूतघ्नी वलीपलितनाशिनी।। (ध०नि०)
5. लीढ्वा मुण्डीतिका चूर्णं मधुसर्पिःसमायुतम्।
छिन्नक्वाथं पिवन् हन्ति वातरक्त सुदुस्तरम्।।
(भैषज्य रत्नावली)
6. गुडूच्याः स्वरसं चूर्णं कल्कं वा क्वाथमेव वा।
प्रभूतकालमासेव्य मुच्यते वातशोणितात्।। (भैषज्य रत्नावली)
7. पिप्पला मधु संमिक्षं गुडूची स्वरसं पिबेत्।
जीर्णा ज्वर कफ प्लहिका सारोचक नाशनम।।
8. पथ्या मृता च धनिका पाने क्वथो गुडान्वितः
सर्वेष्वर्शगसु हितः चिरजातेय व संशयम्।। (भैषज्य रत्नावली)
9. बिल्वादि पंचमूली च गुडूच्यामलके तथा।
कुस्तुम्बुरुसमो ह्येष कषायो वातिके ज्वरे।। (भैषज्य रत्नावली)
10. अश्वगन्धाऽमृताभीरूदशमूलीबलावृषाः।
पुष्करातिविषे हन्ति क्षयं क्षीररसाशिनः।। (भैषज्य रत्नावली)
11. कृतं गुडूच्या विधिवत् कषायं हिमसंज्ञितम्
तिसृष्वपि भवेत्पथ्यं माक्षिकेण समायुतम्।। (भैषज्य रत्नावली)
12. पीतो रसो गुडूच्यास्वा मधुना मेहनाशनः। (भैषज्य रत्नावली)
13. श्लीपघ्नो सरोऽभ्यासाद् गुडूच्यास्तैल संयुतः।
14. सिंहास्या मृतभण्यकी क्वाथं कृत्वां समाक्षिकम।
पीत्वा शोथं जयेज्जन्तुः श्वासं कासं ज्वरं वमिम्।।
(भैषज्य रत्नावली)
15. पुनर्नवानिम्बपटोलशुण्ठीतिक्ताऽमृतादार्वभयाकषायः।
सर्वांगशोथोदरपार्श्वशूलश्वासान्वितं पाण्डुगदं निहन्ति।।
(भैषज्य रत्नावली)
16. पिवेद् वा षट्फल सर्विरभयां वा प्रथोजयेत।
त्रिफलायाः कषाय वा गुडूच्या रसमेव वा।। (चरक)

Scanned by CamScanner

गोखरू

60

वैज्ञानिक नाम	:	*Tribulus terrestris* L.
कुलनाम	:	Zygophyllaceae
अंग्रेजी नाम	:	Small caltrops, Land caltrops, Puncture vine
संस्कृत	:	गोक्षुर, श्वदंष्ट्रा, स्वादु कंटक, चणद्रुम, वनश्रृंगाट, त्रिकंटक, इक्षुगन्धिका,
हिन्दी	:	गोखरु, हथचिकार
गुजराती	:	न्हाना गोखरु, बेठागोखरु
मराठी	:	सराटे, कांटेगोखरू
पंजाबी	:	भखड़ा
बंगाली	:	गोखरी, गोक्षुर
फारसी	:	खोरखसक
अरबी	:	हसक
तैलगु	:	पान्नेरूमुल्लु
तमिल	:	नेरूनाजि
कन्नड़	:	सन्नानेग्गुलु

परिचय

यह वनस्पति भारतवर्ष के सभी प्रदेशो, विशेषतः उष्ण प्रदेशों में बहुलता से पाई जाती है। वर्षा ऋतु में यह अधिकता से फलती फूलती है। इसके पादप भूमि पर छत्ते की तरह फैले रहते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसकी 2–3 फुट लम्बी शाखाएं चारों और फैली रहती हैं। पत्ते चने के पत्तों के समान परन्तु आकर में कुछ बड़े, प्रत्येक पत्ती में पत्रक युग्मों की संख्या 4–7 होती है। शाखायें बैंगनी श्वेत रोम से आच्छादित, व अनेक ग्रन्थियुक्त होती है। पुष्प पीले, छोटे चक्राकार, कांटों से युक्त, फल छोटे, गोल, चपटे, पंचकोणीय, 2–6 कंटक युक्त व अनेक बीजी होते है। जड़ मुलायम रेशेदार, 4–5 इंच लम्बी, हल्के भूरे रंग की विशिष्ट गन्ध युक्त होती हैं।

रासायनिक संघटन

फल में एक क्षारोद, स्थिर तेल अति अल्प मात्रा में, एक उड़नशील तेल, राल और पर्याप्त मात्रा में नाइट्रेट पाये जाते है।

गुण–धर्म

वात पित्तशामक, वेदना–नाशक, रक्त पित्तशामक और शोथहर है। यह हृद्य, कफ निःसारक, गर्भस्थापन तथा वृष्य है। मूत्राशय का शोधन करने वाला, मूत्रजनन, बल्य है। स्वादिष्ट तथा दीपन है। इसकी मुख्य क्रिया मूत्र पिंड पर होती है।

औषधीय प्रयोग

शिरः शूल : इसकी छाल का काढ़ा 10–20 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से पित्तज शिरः शूल मिटता है।

Scanned by CamScanner

छोटी गोखरू

दमा : इसके फल के गूदे का 2 ग्राम चूर्ण, 2–3 नग सूखे अंजीर के साथ दिन में तीन बार कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन करने से दमा मिट जाता है।

शोष : शोष में गोक्षुर तथा अश्वगंधा का समभाग सूक्ष्म चूर्ण 2 चम्मच मधु के साथ दिन में दो बार चाटकर, 250 ग्राम दूध पीने से थोड़े ही दिनों में शोष, कास एवं दौर्बल्य का नाश होता है।

पाचन शक्ति : इसके 100 ग्राम क्वाथ में पीपल के 5 ग्राम चूर्ण का प्रक्षेप देकर थोड़ा–थोड़ा पीने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

अतिसार : इसके फल के गूदे को 650 मिग्रा. से 1.250 ग्राम तक

मट्ठे के साथ दिन में दो बार खिलाने से अतिसार और आम अतिसार मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसकी छाल के 20 ग्राम क्वाथ में यवक्षार 125 मिग्रा. डालकर दिन में दो तीन बार पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
2. इसकी पंचाग के 20 ग्राम क्वाथ में एक चम्मच मधु मिलाकर प्रातः एवं सायं सेवन करने से लाभ होता है।
3. इसके 100 ग्राम पंचाग को आधा किलो पानी में 2 घंटे तक भिगोकर मसल छानकर 20–20 ग्राम सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।
4. गोखरु की जड़ (10–15 ग्राम) और समभाग चावलों को एक साथ अच्छी तरह उबालकर पिलाने से मूत्रवृद्धि होती है।
5. गोखरु के 2 ग्राम चूर्ण में 2–3 नग काली मिर्च और 10 ग्राम मिश्री मिलाकर सुबह, दोपहर और शाम देने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है तथा नपुंसकता मिटती है।

अश्मरी : गोखरु के 5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ दिन में तीन बार चटाकर, ऊपर बकरी का दूध पिलाने से अश्मरी मिटती है।

बांझपन : गोखरू के फल चूर्ण की 10–20 ग्राम मात्रा की फंकी देने से स्त्रियों में बांझपन मिटता है।

गर्भाशय शूल : गर्भपात के पश्चात् होने वाले शूल में गोखरू फल 5 ग्राम, काली किशमिश 5 ग्राम और दो ग्राम मुलेठी इनको पीसकर प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

बड़ी गोखरू

आमवात : आमवात एवं संधिशोथ में इसके फल एवं समान भाग सौंठ की 10–20 ग्राम मात्रा को 400 मि०ली० पानी में उबालकर चतुर्थांश बचे क्वाथ का प्रातः एवं रात्रि में सेवन से लाभ होता है। इससे कटिशूल नष्ट होता है। पाचन शक्ति बढ़ती है तथा वेदना दूर होती है।

बाजीकरण :

1. इसके 20 ग्राम फलों को 250 ग्राम दूध में उबालकर प्रातः–सायं पिलाने से बाजीकरण होता है।
2. 10 ग्राम गोखरू एवं 10 ग्राम शतावर को 250 ग्राम दूध के साथ उबालकर पिलाने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

ज्वर :

1. गोखरू की 15 ग्राम छाल को 250 ग्राम जल में उबालकर, चतुर्थांशं शेष रहने पर, छानकर इसकी चार खुराक बनाकर दिन में चार बार पिलाने से ज्वर उतर जाता है।
2. इसकी छाल के 2 ग्राम चूर्ण की फंकी नियमित देने से नियतकालिक ज्वर उतर जाता है।

चर्मरोग : इसके बीज की गिरी को पानी में पीसकर त्वचा रोगों पर लेप करने से लाभ होता है।

रक्तपित्त : 10 ग्राम गोक्षुर को 250 ग्राम दूध में उबालकर पिलाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

प्रमेहश्वासकासार्शः कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत्। (भाव प्रकाश)

1. गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृदवस्तिशोधनः।
   मधुरो दीपनो वृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः।।

Scanned by CamScanner

गूलर

वैज्ञानिक नाम	:	*Ficus racemosa* L.
कुलनाम	:	Moraceae
अंग्रेजी नाम	:	Cluster fig, Country fig
संस्कृत	:	उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक
हिन्दी	:	गूलर
गुजराती	:	उम्बरो, उमरडो
मराठी	:	उम्बर
बंगाली	:	यज्ञडुम्बुर
फारसी	:	अंजीरे–आदम, अंजीरे–अहमक्
अरबी	:	जम्भैज, तोनुल अहमक्
उर्दू	:	डिमरी
मलयालम	:	अति
तमिल	:	अति

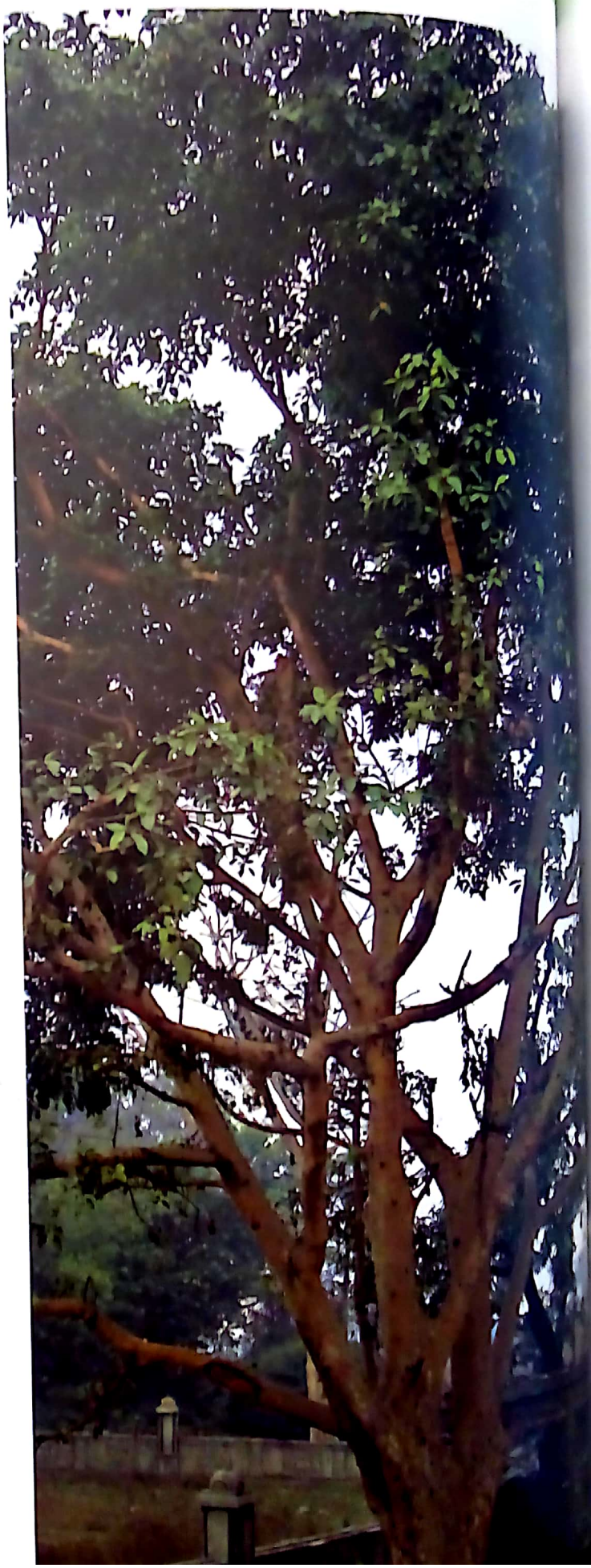

परिचय

अथर्ववेद के अनुसार गूलर पुष्टिदायक द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। कहा गया है कि गूलर फल चूर्ण तथा विदारी कन्द के कल्क का घी मिश्रित दूध के साथ सेवन करने से 'वृद्धोऽपि तरूणायते' अर्थात बूढ़ा भी तरूण समान हो जाता है। हेमदुग्धक, जन्तुफल, सदाफल आदि नामों से प्रसिद्ध गूलर के वृक्ष कृषि जन्य या वन्यज दोनों अवस्थाओं में 6,000 फुट की ऊंचाई तक सर्वत्र सुलभ हैं। जंगलों एवं नदी–नालों के किनारे इसके वृक्ष अपेक्षाकृत अधिक पाये जाते हैं। इस वृक्ष में किसी भी स्थान पर चीरा देने से श्वेत दूध निकलता है, जो थोड़ी देर रखने पर पीला हो जाता है, इसलिए इसे हेमदुग्धक और फलों में अनेक कीट होने से जन्तुफल तथा बारहमासी फल देने के कारण सदाफल कहते हैं।[1]

बाह्य–स्वरूप

इसका कांड स्कंध लम्बा एवं मोटा तथा कुछ टेढ़ा होता है। इसकी शाखाएं पार्श्वों में न फैलकर प्रायः सीधी ऊपर की ओर बढ़ती हैं। कांड त्वक–रक्ताभ धूसर, पत्र 3–4 इंच लम्बे, लट्वाकार, भालाकार तथा तीन शिराओं से युक्त होते हैं। फल 1–2 इंच व्यास के, प्रायः गोलाकार या शुंडाकार बड़े गुच्छों में निष्पत्र शाखाओं पर लगते हैं। ये कच्ची अवस्था में हरे तथा पकने पर हल्के लाल हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें टैनिन, मोम तथा रबड़, भस्म मे सिलिका तथा फास्फोरिक एसिड पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

छाल एवं कच्चे फल, अग्नि सादक, स्तम्भन, मूत्र संग्रहणीय, प्रमेह नाशक एवं दाह–प्रशमन है। बाह्य प्रयोग में छाल एवं पत्र क्वाथ शोथहर, वेदना स्थापन, वर्ण्य एवं व्रणरोपण है।[2] पक्व फल श्लेष्म निःसारक, मनः प्रसादकर, शीतल रक्त संग्राहिक किन्तु कृमि कारक, रक्तपित्त, मूर्च्छा, दाहनाशक है।[3] निर्यास (दूध) शीतल, स्तम्भक, रक्त संग्राहिक, पौष्टिक एवं शोथहर है। गूलर, बड़, पीपल यह सब व्रण के लिए हितकारी, संग्राही, भग्न को मिलाने वाला, रक्त पित्तनाशक, दाह तथा योनि रोगों को दूर करता है।[4]

औषधीय प्रयोग

मुख रोग : छाल के 250 मि०ली० क्वाथ में 3 ग्राम कत्था व 1 ग्राम फिटकरी मिला कुछ गरम रहते गंडूश (कुल्ला) करें।

कर्णशोथ : कर्णमूल के शोथ पर या पित्तज शोथ पर इसके गोंद का लेप करना चाहिए।

चेचक :

1. गूलर के पत्तों पर जो फफोले या श्यामवर्ण के दाने होते हैं, उन्हें पत्तों से निकालकर लगभग 3–4 ग्राम को गौदुग्ध में पीस–छानकर मधु मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से, चेचक के दाने में मवाद नहीं होने पाता।
2. इन उभारों को मिश्री के साथ पीसकर सेवन करने से, गर्मी से उत्पन्न मुखपाक ठीक हो जाता है।

गंडमाला : इसमें पत्तों के ऊपर के दानों को मीठी दही में पीसकर शक्कर मिलाकर नित्य एक बार पिलाने से लाभ होता है।

रक्त पित्त :

1. शरीर के किसी अंग से खून बहता हो और सूजन हो, ऐसे रोगों में गूलर एक उत्तम औषधि है। नाक से खून बहना, पेशाब के साथ रक्त आना, मासिक धर्म अधिक होना, गर्भपात वगैरहा रोगों में, इसके 2–3 पके फलों को शक्कर या खांड के साथ दिन में तीन बार देने से तुरन्त आराम हो जाता है।
2. सूखे कच्चे फलों का चूर्ण, बराबर की मिश्री मिलाकर, 5 ग्राम से 10 ग्राम तक की मात्रा में ताजे जल से प्रातः–सायं 21 दिन तक सेवन कराने से रक्त प्रदर, अधिक रक्तस्राव, गर्भपात, रक्तप्रमेह, रक्त अतिसार या ऊर्ध्वग रक्त पित्त में पूर्ण लाभ होता है।
3. 5 ग्राम चूर्ण को या सूखे हरे फलों को पानी में पीसकर मिश्री के साथ पिलाने से भी लाभ होता है।
4. कमलगट्टे और इसके फलों के 5 ग्राम चूर्ण को दूध के साथ दिन में तीन बार देने से रूधिर वमन बन्द हो जाती है।
5. इसके कांड की छाल लगभग 20–30 ग्राम को पानी में पीसकर तालु पर लगाने से नक्सीर बंद हो जाती है।
6. इसकी ताजी जड 30 ग्राम को कूटकर या सूखे हुए जड़ का छिलका 5 से 10 ग्राम उसका क्वाथ बनाकर नियमित रूप से तीन मास तक प्रातः–सायं पिलाने से गर्भपात नहीं होता है।
7. 5 ग्राम गूलर के पत्तों के रस में शहद मिलाकर पिलाने से रक्त पित्त मिटता है। इससे रक्तातिसार मे भी तुरन्त लाभ होता है।
8. ऊर्ध्वग रक्त पित्त में पत्र स्वरस 5 ग्राम के साथ पीपल वृक्ष की लाख का चूर्ण 1 ग्राम और मिश्री समभाग मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करें। कुछ समय तक सेवन करने से निश्चित लाभ होगा।

भस्मक रोग : इसकी अंतर छाल को स्त्री के दूध में पीसकर पिलाने से छोटे बच्चों का भस्मक रोग मिटता है।

Scanned by CamScanner

अतिसार :

1. इसकी 4–5 बूंद दूध बताशे में डालकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।
2. आंव व अतिसार मे इसकी जड के चूर्ण को तीन से पांच ग्राम ताजे फल के साथ दिन मे दो बार फंकी देनी चाहिए।
3. अतिसार और ग्रहणी में पत्र चूर्ण 3 ग्राम व 2 काली मिर्च, थोडे चावल के धोवन के साथ महीन पीसकर, काला नमक और छाछ मिलाकर छानकर प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

उदरशूल : इसका फल खाने से उदरशूल और आध्मान मिटता है।

भगन्दर : इसके दूध में रूई का फोहा भिगोकर, नासूर और भगन्दर के अंदर रखने और उसको प्रतिदिन बदलते रहने से नासूर और भगन्दर अच्छा हो जाता है।

अर्श :

1. इसके दूध की 10 से 20 बूंदें जल में मिलाकर पिलाने से खूनी बवासीर और रक्त विकार मिटता है। इसके दूध का लेप मस्सों पर भी करना चाहिए। पथ्य में घी का काफी सेवन करें।
2. कोमल पत्र 10 से 15 ग्राम महीन पीसकर, गाय के दूध की दही एक पाव व थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करें।

श्वेत प्रदर : गूलर का रस 5 से 10 ग्राम मिश्री के साथ मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से श्वेत प्रदर मिटता है।

रक्त प्रदर : ताजी छाल 10–15 ग्राम कूटकर, 1 पाव पानी में पकायें। आधा पाव शेष रहने पर, छान कर यथेच्छा मिश्री व डेढ़ ग्राम श्वेत जीरा चूर्ण मिलाकर सुबह शाम पिलावें तथा भोजन में इसके कच्चे फलों का रायता बनाकर खिलायें।

गर्भस्थापना के बाद : गर्भ के स्थिर हो जाने पर गूलर के कच्चे फलों से सिद्ध किए हुए गाय के दूध से भोजन देना चाहिए। जिससे गर्भ की वृद्धि होकर गर्भपात होने की संभावना भी समाप्त हो जाती है।[5]

मूत्ररोग : इसके 8–10 बूंद दूध को दो बताशों में भरकर रोज खिलाने से मूत्ररोंग मिटते हैं।

मूत्रकृच्छ्र : नित्य प्रातः 2–2 पके फल रोगी को सेवन करायें।

प्रमेह :

1. पूय प्रमेह में कच्चे फलों का महीन चूर्ण समभाग खांड मिलाकर 2 से 6 ग्राम तक, या 10 ग्राम तक, कच्चे दूध में मिश्री मिली हुई लस्सी के साथ सेवन करने से सुजाक प्रथम अवस्था में विशेष लाभ होता है।
2. पित्त प्रमेह पर फलों के केवल सूखे छिल्कों को (बीजरहित) महीन पीसकर समभाग मिश्री मिलाकर, 6–6 ग्राम सुबह–शाम गाय के दूध के साथ प्रयोग करें।
3. 50 ग्राम जौकुट चूर्ण के क्वाथ में 3 ग्राम कत्था व 1 ग्राम कपूर मिलाकर, सुहाते–सुहाते क्वाथ से मूत्रेन्द्रिय को धोते रहने से अंदर के जख्म भरकर

Scanned by CamScanner

मवाद आना बंद हो जाता है।

बाजीकरणार्थ :

1. फल का चूर्ण तथा बिदारी कन्द का चूर्ण, समभाग 4–6 ग्राम की मात्रा में मिश्री और घी मिले हुए दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से पौरूष शक्ति की वृद्धि व बाजीकरण की क्षमता बढ़ जाती है। स्त्रियां यदि सेवन करें तो समस्त स्त्री रोग दूर होकर लावण्यता बढ़ती है।
2. ग्रीष्मकाल में पके फलों का शरबत, मन को प्रसन्न करने वाला, बल्य, कब्ज तथा श्वास–कास नाशक है।
3. कच्चे फलों को पीस–छानकर जल के साथ पिलाने से किसी भी वजह से बढ़ी हुई प्यास शांत होती है।

पित्त ज्वर : ताजे मूल का 5–10 ग्राम रस में या जड़ की छाल के 50 मिलीलीटर हिम (10 गुणा पानी में भिगोकर तीन घंटे बाद छानकर) में शक्कर मिलाकर प्रातः–सायं पीने से तृष्णा–युक्त ज्वर की शांति होती है।

पित्त दाह : गूलर की गोंद 1 ग्राम, शक्कर 3 ग्राम की फंकी देने से पित्त ज्वर की दाह में लाभ होता है।

पित्त विकार : इसके पत्तों को पीसकर शहद के साथ चाटने से पित्त विकार शांत होते हैं।

सूजन : इसकी छाल को पीसकर लेप करने से भिलावे की धुएं से उत्पन्न हुई शोथ उतर जाती है।

व्रण : गूलर के दूध में बावची के बीज भिगोकर, पीसकर 1–2 चम्मच की मात्रा में नियमित लेप करने से सभी प्रकार की पिंडिकाएं और व्रण मिट जाते हैं।

1. उदुम्बरः क्षीरवृक्षो हेमदुग्धः सदाफलः।
   अपुष्प फल संबद्धो यज्ञांगः शीतवल्कलः।।
   कृमिवृक्षो जन्तुफलो मशकी जघनेफलः।
   पुष्प शून्यः शीतफलः पवित्रः सुप्रतिष्ठतः।। (भाव प्रकाश)
2. उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्रजित्।
   मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः। (भाव प्रकाश)
3. औदुम्बरं कषायं स्यात् पक्वं तु मधुरं हिमम्।
   कृमिकृत् रक्तपित्तघ्नं मूर्च्छादाहतृषापहम्।। (ध०नि०)
4. न्यासोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षमधुककपीतनककुभाम्र.....। (सुश्रुत)
5. व्यवस्थिते च गर्भे गव्येनोदुम्बरशलादुसिढयेन पयसा भोजयेत्। (सुश्रुत)
6. उदुम्बरक्वाथयुतं सिताढ्यं सुगंधशालिप्रभवं सितं च।
   या पिष्टमश्नाति न गर्भपातपीडामसौ विन्दति जातुनारी। (शोढल निघटु)

Scanned by CamScanner

62 गोरखमुण्डी

वैज्ञानिक नाम	:	*Sphaeranthus indicus* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	East Indian globe thistle
संस्कृत	:	मुण्डी, मुंडिका, श्रावणी, भिक्षु, परिव्राजी
हिन्दी	:	गोरखमुण्डी, मुण्डी
गुजराती	:	गोरखमुंडी
मराठी		गोरखमुंडी, बोड़थरा
बंगाली	:	मुंडीरी, छांगल, मुड़मुड़िया
पंजाबी	:	बोड़तरमु

परिचय

समस्त भारत में विशेषतः हिमाचल प्रदेश में मुंडी के स्वयंजात क्षुप 5,000 फुट की ऊंचाई तक मिलते हैं। धान के खेतों में तथा नम जंगलों में इसके पौधे अधिक मिलते हैं। इस पर शीतकाल में पुष्प और बाद में फल लगते हैं। चरक संहिता में इसकी एक और जाति महाश्रावणी *S. africans* Linn. का भी वर्णन मिलता है।

बाह्य–स्वरूप

मुंडी के प्रसरणशील एवं गंधयुक्त क्षुप 1–3 फुट ऊंचे या जमीन पर फैले हुए होते हैं। कांड सपक्ष, शाखाएं कोमल, रोमयुक्त नलिकाकार, पत्र अवृन्त रोमश अभिलट्वाकार, दंतुर तथा 1-2 इंच तक लम्बे कांड सशक्त होती है। पुष्प मुंडकों में, पत्राभिमुख उभयलिंगी बैंगनी रंग के छोटे–छोटे होते हैं।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

इसमें एक तिक्त क्षाराभ स्फेरैन्थिन तथा एक ग्लुकोसाइड पाया जाता है। इससे एक रक्ताभ सुगन्धित तेल भी प्राप्त होता है, जिसमें युजिनॉल, आसिमिन आदि घटक होते हैं। क्षुप से एक पीताभ हरित स्थिर तेल प्राप्त होता है। पुष्प मुंडक में एलब्युमिन, एक तेल, रिड्युसिंग शर्करा, टैनिन, खनिज द्रव्य, उड़नशील तेल तथा ग्लुकोसाइड पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

यह वनस्पति दिल, दिमाग, जिगर और मेदे को ताकत देती है। दिल की धड़कन, दहशत, प्लीहा, पीलिया, आंखों का पीलापन, पित्त और वात से पैदा हुई बीमारियों, मूत्र और गर्भाशय की जलन दूर करती है। कंठमाला, क्षयजनित ग्रन्थियां, तर और खुश्क खु, जली, दाद, कोढ़ और वात सम्बन्धी रोगों में यह बहुत लाभदायक है।[1] गोरखमुण्डी कटु तिक्त आदि गुणों के कारण अपची, अपस्मार, गलगण्ड एवं श्लीपद आदि रोगों का नाश करती है।[2]

औषधीय प्रयोग

सिर पीड़ा : सूर्यावर्त, आधाशीशी आदि में इसके 3 से 5 ग्राम स्वरस में मरिच चूर्ण ¼ ग्राम मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से लाभ होता है।[3]

सफेद बाल : गोरखमुण्डी की जड़ या पंचांग को पुष्पागमन से पूर्व काले भांगरे (जो अब प्रायः अनुपलब्ध हैं) अथवा सामान्य भृंगराज को भी छाया शुष्क कर लें, दोनों के समभाग चूर्ण को 2–8 ग्राम तक मधु व घी से 40–80 दिन तक सेवन कराने से बालों के सब रोग दूर होते हैं तथा सफेद बाल काले होने प्रारम्भ हो जाते हैं।

नेत्र रोग :

1. गोरखमुंडी की 1 मुंडी प्रातः खाली पेट 1 सप्ताह तक साबुत निगल जाने से 1 वर्ष तक आंख नहीं दुखती।
2. प्रतिवर्ष चैत्र मास में 4–5 मुंडी के ताजे फल थोड़े दांत से चबाकर पानी के घूंट के सथ हलक में उतार लें तो मनुष्य की आंख की तंदुरुस्ती और रोशनी हमेशा कायम रहती है।
3. मुण्डी पंचांग के छाया शुष्क चूर्ण में समभाग मिलाकर गाय के दूध के साथ प्रातः–सायं खाने से नेत्रों के बहुत से रोग मिटते हैं तथा नेत्र ज्योति बनाये रखने के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।
4. नेत्र ज्योति कम हो जाने पर, इसके पुष्पों या पत्तियों का स्वरस नेत्रों में दिन में दो बार लगाते रहने से लाभ होता है।
5. ताजे पंचांग को तांबे के बरतन में रखकर, नीम के डंडे से खूब रगड़ते हैं, जब वह काला हो जाता है, उसमें रूई को अच्छी तरह भिगोकर सुखा लेते हैं। नेत्र पीड़ा में रूई को जल में भिगोकर नेत्रों पर रखने से बहुत लाभ होता है।

मुख दुर्गन्ध : मुख दुर्गन्ध पर गोरखमुण्डी चूर्ण को कांजी में मिला थोड़ा–थोड़ा पिलायें या किसी दन्त मंजन में इसके पुष्प चूर्ण को मिलाकर मंजन करें।

Scanned by CamScanner

स्वरमाधुर्य : मुण्डी फलों के 50 ग्राम चूर्ण में 10 ग्राम शुंठी मिलाकर शहद के साथ डेढ़ ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार चटाने से लाभ होता है।

हृदय की कमजोरी : गोरखमुंडी के फलों का अर्क, नेत्ररोग, दिल की धड़कन और हृदय की कमजोरी दूर करता है। इसके लगातार सेवन से गीली और सूखी खुजली मिट जाती है। शुरू में इसको 15 ग्राम की मात्रा में लेना चाहिए। बाद में बढ़ाते रहना चाहिए। पथ्य–खट्टी और गरम चीजें, अधिक परिश्रम व मैथुन से बचना चाहिए।

पेट की वायु : बकरी या गाय के दूध के साथ इसके 3 ग्राम चूर्ण की फंकी लेने से पेट की वायु मिटती है।

आम अतिसार : गोरखमुण्डी की जड़ और सौंफ दोनों समभाग 10 ग्राम लगभग पीसकर, मिश्री–युक्त जल से प्रातः–सायं सेवन कराने से लाभ होता है।

कृमि : दोनों समय इसका चूर्ण 1 ग्राम जल के साथ सेवन करने से पेट के सब कीड़े मर जाते हैं।

अर्श : इसका पत्र स्वरस और एरंड पत्र स्वरस 25 ग्राम मिलाकर पिलाने से तथा इसके पत्तों की लुग्दी मस्सों पर बांधने से तथा पंचांग की धूनी मस्सों पर देने से लाभ होता है।

भगन्दर : मुंडी चूर्ण को बासी पानी के साथ लेने से भगन्दर मिटता है।

जलोदर : एरंड तेल 10 ग्राम के साथ मुंडी चूर्ण 3 ग्राम प्रातः–सायं लेने से जलोदर मिटता है।

प्रमेह : गौदुग्ध के साथ इसका चूर्ण लेने से चित्तभ्रम और प्रमेह मिटता है।

योनिशूल : 10 ग्राम ताजे पंचांग (न मिलने पर छाया शुष्क पंचांग) को जल से पीसकर पिलाने से भयंकर शूल दूर होता है। प्रदर में भी लाभ होता है। जीर्ण स्थाई योनिशूल और प्रदर में कुछ दिन सेवन करायें।

वातरक्त : मुंडी 3 ग्राम और कुटकी 1 भाग चूर्ण को मधु के साथ नित्य प्रति 2–3 ग्राम मात्रा में तीन बार चटाने से वातरक्त मिटता है।

आमवात : मुण्डी फल के साथ समभाग सोंठ चूर्ण, उष्णोदक से दोनों समय 3 ग्राम सेवन करें तथा फलों को महीन पीसकर पीड़ा स्थान पर लेप करें।

नपुंसकता : मुंडी की ताजी जड़ों के पीसे हुए कल्क, कलई दार पीतल की कढ़ाई में रखकर चौगुना काले तिल का तेल और सोलह गुना पानी डालकर पकायें। तेल केवल शेष रहने पर छान लें। इस तेल की कामेन्द्रियों पर मालिश करने से तथा 10–30 बूंद तक पान में लगाकर दिन में 2–3 बार खाने से नपुंसकता मिटती है।

यौवनः

1. गोरखमुंडी के पौधे को छाया में सुखाकर, पीसकर बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर एक चम्मच प्रातः–सायं दूध के साथ सेवन करने से मनुष्य का यौवन स्थिर रहता है तथा उसके बाल सफेद नहीं होते।
2. गोरखमुंडी के बीजों को पीसकर उनमें समभाग शक्कर मिलाकर एक हथेली भर प्रतिदिन लगातार खाने से बहुत ताकत पैदा होती है और मनुष्य दीर्घायु हो जाता है।
3. इसके चूर्ण को घी के साथ चाटने से बल बढ़ता है।
4. गोरखमुंडी के पौधे की छाया शुष्क चूर्ण में दोगुना शहद मिलाकर 40 दिन तक गरम दूध के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है।

रक्त पित्त : पत्र रस के साथ अडूसा पत्र रस मिलाकर 1 चम्मच दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।

चर्म रोग : पत्तों को जल में पीसकर लेप करने अथवा पत्र स्वरस लगाने से अनेक चर्मरोग, उपदंश के व्रण एवं पुराने घाव व पारदजन्य विकारों की शांति होती है।

कम्पवात : इसके 50 ग्राम चूर्ण में 100 ग्राम लौंग मिलाकर 3 से 5 ग्राम की मात्रा में मधु मिलाकर प्रातः–सायं चटाने से लाभ होता है।

गर्भ धारणार्थ : जायफल के 1 ग्राम चूर्ण के साथ इसका 2 भाग चूर्ण मिलाकर 3 ग्राम लगभग चूर्ण बकरी के दूध के साथ प्रातः–सायं लेने से स्त्री गर्भधारण करती है।

ज्वरदाह : मुंडी चूर्ण 2 ग्राम को काली मिर्च ¼ ग्राम चूर्ण शहद या दूध के साथ लेने से ज्वर और दाह मिटती है।

1. मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्योष्णा मधुरा लघुः।
मेध्या गंडापचीकुष्ठकृमियोन्यर्तिपाण्डुनुत्।।
श्लीपदारूच्यपस्मार प्लीहमेदोगुदार्तिहृत्।
महामुण्डी च तत्तुल्या गुणैरूक्ता महर्षिभिः।। (भाव प्रकाश)

2. मुंडिका कटुतिक्ता स्यादनिलास्रविनाशिनी।
अपचीघ्नी ह्यपस्मारगण्डश्लीपदनाशिनी।। (ध०नि०)

3. पीत्त्वा मुण्डितिकोत्थं स्वरसं मरिचावचूर्णितं चोष्णम्।
भक्तादौ सप्ताहात् सूर्यावर्ताधभेदकौ हन्यात्।। (ग०नि०)

Scanned by CamScanner

गुड़हल

63

वैज्ञानिक नाम	:	*Hibiscus rosa-sinensis* L.
कुलनाम	:	Malvaceae
अंग्रेजी नाम	:	Shoe flower, China rose
संस्कृत	:	जपा, उर्ध्व पुष्प, अर्क प्रिया, औण्ड्र पुष्प
हिन्दी	:	गुड़हल
गुजराती	:	जासुस
मराठी	:	जास्वंद, जासुंदी
तैलगु	:	दासानि, पुब्बु, दासनमु
पंजाबी	:	गुड़हल
अरबी	:	अंगिरा
फारसी	:	अंगिरा
बंगाली	:	जवाफुल, जबा

परिचय

गुड़हल के फूल का वृक्ष अपने आकर्षक रंगों, नैसर्गिक सौन्दर्य तथा अत्यन्त लुभावने घंटाकार पुष्प के कारण उद्यान, घर, और मंदिरों में लगाये जाते हैं। पुष्प इकहरा, दुहरा, तिहरा, लाल, श्वेत या श्वेत लाल, बैंगनी पीला, नारंगी इत्यादि कई रंगों का होता है। श्वेत या श्वेताभ लाल रंग के पुष्पवाला गुड़हल विशेष गुणकारी होता है। इसकी केसर बाहर निकली हुई अलग से दिखलाई पड़ती है। इसमें अलग से कोई फल नहीं लगता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका सदाबहार क्षुप 5–9 फुट ऊंचा, पत्र चमकीले, चिकने गहरे हरे रंग के कंगूरेदार तथा पुष्प बड़े घंटाकार होते हैं।

रासायनिक संघटन

गुड़हल के पुष्प में लौह, फास्फोरस, कैल्शियम, राइबोफ्लेविन, थियामीन, नियासिन व विटामिन सी अल्पमात्रा में होता है। इसके पत्तों में थोड़ी मात्रा में कैरोटिन पाया जाता है।

गुण–धर्म

यह कफ पित्तशामक है तथा पैत्तिक विकारों में प्रयुक्त होता

Scanned by CamScanner

है। यह रक्तरोधक, केश्य, स्तम्भन, शोणित स्थापन, गर्भनिरोधक, प्रदरनाशक, मूत्र संग्रहणीय तथा बल्य है।[1]

औषधीय प्रयोग

स्मरण शक्ति : गुड़हल के फूलों और पत्रों को सुखाकर, समभाग मिलाकर, पीसकर शीशी में भर लें। एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम एक कप मीठे दूध के साथ नियमित रूप से पीते रहने से यौनशक्ति और स्मरण शक्ति बढ़ती है।

इन्द्रलुप्त :

1. गंजापन दूर करने के लिए काली गाय के मूत्र में गुड़हल के फूलों को पीसकर लगाने से बाल बढ़ते हैं। तथा गंजापन दूर होता है।
2. गुड़हल के पत्तों को पीसकर लुग्दी बनाकर बालों में लगा लें। दो घंटे बाद बाल धोकर साफ कर लें। इस प्रयोग को नियमित रूप से करते रहने से न केवल बालों को पोषण मिलता है, बल्कि सिर में शीतलता का भी अनुभव होता है।
3. ताजे फूलों के रस में समभाग जैतून का तेल मिलाकर आग में पका लें। जब केवल तेल शेष रह जाये तो शीशी में भरकर रख लें। प्रतिदिन बालों में मल कर जड़ों तक लगाने से बाल चमकीले और लम्बे होते हैं।
4. गुड़हल के फूल और भृंगराज के फूल, भेड़ के दूध में पीसकर लोहे के पात्र में रखें, सात दिन बाद निकालकर भृंगराज के पंचांग के रस में मिलाकर, रात को गर्म कर बालों में लगायें। प्रातः सिर धोने से बाल काले हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

मुंह के छाले : गुड़हल की जड़ को साफ कर, धोकर, एक–एक इंच के टुकड़ो में काट कर रख लें। दिन में 3–4 बार, एक–एक टुकड़ा चबाकर राल थूकते जायें। एक दो दिन में ही छालों में आराम मिलेगा।

श्वित्र रोग : श्वित्र रोग में गुड़हल के चार पुष्प प्रातः–सायं 2 वर्ष तक सेवन करने से रोग मिट जाता है।

खांसी : इसकी जड का क्वाथ खांसी में लाभकारी होता है।

रक्त अतिसार व अर्श : कलियों को घी में तलकर उसमें मिश्री व नागकेशर मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से लाभ होता है।

गर्भधारणार्थ :

1. श्वेत गुड़हल की जड़ को गौदुग्ध में पीसकर उसमें बिजौरा नींबू के बीज का महीन चूर्ण मिलाकर, मासिक धर्म के समय पिलाने से गर्भधारण होता है।
2. मूल और फूलों का 30–50 मि०ली० क्वाथ प्रातःकाल पिलाते रहने से गर्भ स्थित बालक की पुष्टि होती है।

सुजाक :

1. इसकी 11 पत्तियों को साफ जल में पीस–छानकर उसमें यवक्षार 8 ग्राम व मिश्री 25 ग्राम मिलाकर, प्रातः–सायं दो बार पीने से विशेष लाभ होता है।
2. प्रथम दिन 1 पुष्प, दूसरे दिन दो पुष्प तथा पांचवें दिन 5 पुष्प, बतासे या मिश्री के साथ खायें। फिर 1–1 फूल घटाते हुए दसवें दिन 1 फूल खायें तथा पथ्य और परहेज से रहें।

गर्भ निरोधार्थ : पुष्पों को कांजी में पीसकर, 50 ग्राम तक पुराना गुड़ मिलाकर, मासिक धर्म के समय तीन दिन तक खाने से स्त्री गर्भधारण नहीं करती।

प्रदर रोग :

1. इसकी 4–5 कलियों को घी में तलकर, प्रातः सात दिन तक मिश्री के साथ खाने तथा गाय का दूध पीने से आराम हो जाता है।
2. मूल के चूर्ण में समभाग कमल मूल चूर्ण व श्वेत सेमल की छाल का चूर्ण मिलाकर, 4 से 6 ग्राम तक जल के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।
3. इसके पुष्पों को घी में तलकर बूरा के साथ खिलाने से रक्त प्रदर मिटता है।

फिरंग व्रण : इसके पत्रों के क्वाथ से फिरंग व्रण होने से शीघ्र व्रणरोपण होता है।

रक्ताल्पता : गुड़हल के सूखे फूलों का एक–एक चम्मच चूर्ण, एक कप दूध के साथ प्रातः–सायं नियमित रूप से सेवन करते रहने से कुछ ही माह में रक्त की कमी दूर होकर शारीरिक स्फूर्ति व बलवृद्धि होती है।

पुरूषार्थ : इसके छाया शुष्क पुष्पों या पत्तों के चूर्ण में समभाग खांड मिलाकर 40 दिन तक 6 ग्राम की मात्रा लगातार लेने से पुरूषार्थ बढ़ता है।

दारूणरोग : इसके पुष्पों के रस में बराबर तिल तेल मिला कर उबालें, तेल शेष रहने पर उसको उतार–छानकर शीशी में भर लें। इस तेल को लगाने से दारूण रोग मिटता है।

सूजन और दर्द : गुड़हल के पत्तों को पानी में पीसकर बनाया हुआ गाढ़ा लेप सूजन पर लगाने से सूजन और दर्द में आराम मिलता है।

गुड़हल का शरबत :

1. इसके 100 फूल लेकर, हरे डंठल को दूर कर पंखुड़ियों को नींबू के साफ रस में रात्रि में किसी खुले स्थान पर कांच के बरतन में मुंह बंद कर भिगोकर रख दें। प्रातः मसल छानकर, इसमें 650 ग्राम मिश्री या चीनी, 1 बोतल उत्तम गुलाब जल मिलाकर, दो बोतलों में बंद कर धूप में दो दिन तक रखें तथा हिलाते रहें। मिश्री अच्छी तरह घुल जाने पर शरबत बन जाता है। 15 से 40 मि०ली० तक की मात्रा पीते रहने से खून की गर्मी दूर होकर, शिर पीड़ा, जी मिचलाना, बेहोशी, चक्कर, नकसीर, रक्त प्रदर, नेत्र जलन, अरूचि, छाती की जलन, उन्माद, निद्रानाश, लू लगना आदि में लाभ होता है।
2. गुड़हल के 100 पुष्प लेकर शीशे की बरणी में डालकर, 20 नींबू निचोड़ कर ढक दें। रात भर रखने के बाद, प्रातःकाल मसलकर कपड़े में छानकर रस निकाल लें। रस में 800 ग्राम मिश्री, 200 ग्राम गुले गाजबान का अर्क, 200 ग्राम मीठे अनार का रस, 200 ग्राम संतरे का रस मिलाकर मंद अग्नि पर पकायें। जब चासनी गाढ़ी हो जाये तो उतारकर 250 मिलीग्राम कस्तूरी, अम्बर 3 ग्राम, केसर, तथा गुलाब अर्क मिलाकर अच्छी तरह हिलायें। यह शरबत हृदय तथा मस्तिष्क को शांति देता है। तथा उन्माद पैत्तिक ज्वर और प्रदर में लाभकारी है।

हानिकारक : अधिक मात्रा में सेवन करने से यह आँखों में कृमि उत्पन्न करता है। यह शीत प्रकृति वालों के लिये हानिकर है। हानि निवारणार्थ काली मिर्च व मिश्री का सेवन करना चाहिये।

1 जपा संग्राहिणी केश्या..... । (भाव प्रकाश)

2. जपापुष्पं लघु ग्राही तिक्तं केश विबर्धनम्..... । (नि०र०)

Scanned by CamScanner

64 गुलदाऊदी

शेवंती

वैज्ञानिक नाम	:	*Chrysanthemum coronarium* L.
कुलनाम	:	Asteraceae
अंग्रेजी नाम	:	Chrysanthemum
संस्कृत	:	शिववल्लभा, चन्द्र मल्लिका, सेवती, गृहकमल
हिन्दी	:	गुलदाऊदी, गुलरेवती
गुजराती	:	कांटे शेवती
मराठी	:	गुलरेवती, तुरसफिल
पंजाबी	:	गेन्दी, बगोर
तमिल	:	अकरकम, शावंती
तैलगु	:	चमन्ती
बंगाली	:	चन्द्रमल्किा
अरबी	:	नसरीन

परिचय

शोभा के लिए इसके पौधे बगीचों में और घरों में गमलों में लगाये जाते हैं। अनेकोंनेक रंगों में गुलदाऊदी के मनमोहक तथा शोभायमान पुष्प होते हैं।

वाह्य–स्वरूप

इसके फूल, सफेद, नारंगी, पीले, गुलाबी, बैंगनी अनेक रंगों के होते हैं। इसकी पत्तियां भी आकार में अलग–अलग होती हैं। छोटे फूल वाली वनस्पति अधिक गुणकारी है।

रासायनिक संघटन

इसमें एसेसिंयल आयल, ग्लुकोसाइड और क्रिसेन्थेमम पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

शीतल, कटु, पौष्टिक, हृद्य, वीर्यवर्धक, कांतिवर्धक और वातपित्त तथा दाहनाशक है। सेवती की जड़, अकरकरे की जड़ के समान मुंह में चबाने से चरमराहट उत्पन्न करती है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

हृदय बल : इसके फूलों का 4–6 बूंद अर्क या गुलकन्द, शीत की वजह से उत्पन्न हृदय की धड़कनों को सामान्य करता है, दिल को ताकत देता है तथा प्रसन्नता पैदा करता है।

उदरशूल : इसके फूलों का 20 ग्राम काढ़ा प्रातः–सायं पीने से वायु से उत्पन्न उदरशूल में लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र : सेवती के 8–10 पत्तों को 2 नग काली मिर्च के साथ पीसकर दिन में दो–तीन बार पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

अश्मरी :

1. सेवती के सूखे फूल एक ग्राम से लेकर छह ग्राम तक पीसकर समान भाग मिश्री मिलाकर खाने से गुर्दे और मसाने की पथरी टूटकर निकल जाती है।
2. गुलदाऊदी के 30 ग्राम फूलों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को प्रातः–सायं पीने से पथरी भी गलकर निकल जाती है।

मासिक धर्म : सेवती के 10–20 ग्राम फूलों को 240 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पीने से मासिक धर्म की रूकावट को दूर कर उसे नियमित करता है।

बवासीर : इसके पत्तों का 5–10 ग्राम शीत निर्यास 20 ग्राम शक्कर के साथ मिलाकर पीने से बवासीर में रक्तस्राव बंद हो जाता है।

सूजन : कफ की वजह से उत्पन्न शोथ पर 10 ग्राम गुलदाऊदी फूल, तीन ग्राम सौंठ और एक ग्राम सफेद जीरा, तीनों को पीसकर लेप करने से सूजन समाप्त हो जाती है।

बल्य : सेवती के हरे पत्तों को पीसकर अंडकोशों और गुदा के बीच मलने से कामेन्द्रियों की शक्ति बढ़ती है।

दाह : इसके पत्तों का लेप प्रदाह को कम करता है।

व्रण : इसकी जड़ को घिसकर गर्म कर पके हुए फोड़े पर लेप करने से उसका मुंह खुल जाता है।

गांठ : इसकी जड़ को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से कच्ची गांठे बिखर जाती हैं और पकने वाली जल्दी पक जाती है।

विविध रोग : सेवती की जड़, कुलंजन और सौंठ तीनों समभाग लेकर इनकी 10 ग्राम मात्रा 100 ग्राम पानी के साथ उबालकर पिलाने से शूल, स्त्रियों का आवेश का रोग, मस्तक पीड़ा तथा तन्द्रा मिटती है।

Scanned by CamScanner

65 घृतकुमारी

वैज्ञानिक नाम	:	*Aloe vera* (L.) Burm. f.
कुलनाम	:	Lilliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Indian Aloe
संस्कृत	:	घृतकुमारिका, गृहकन्या, स्थूल दला
हिन्दी	:	घी कुंआर, ग्वारपाठा
गुजराती	:	कुँबार
मराठी	:	कोरफड़
बंगाली	:	घृतकुमारी
पंजाबी	:	कुंवार गंदल
तेलगु	:	कलबदं
द्राविड़ी	:	कतालै
कन्नड़	:	तौलसरै, लोलिसार
अरबी	:	सब्बरित
फारसी	:	दरख्ते सिब्र

परिचय

यह भारतवर्ष में सर्वत्र प्राप्त होती हैं। प्रायः इसको लोग घरों के अंदर गमलों आदि में लगा लेते हैं।

बाह्य–स्वरूप

इसमें कांड नहीं होता, जड़ के ऊपर से ही चारों तरफ मोटे–मोटे मांसल पत्ते, गूदे से परिपूर्ण 1–2 फीट लम्बे दो इंच चौड़े होते हैं इनके किनारों पर छोटे–छोटे कांटे होते हैं जिससे ये आरी की तरह दिखते हैं। क्षुप के मध्य से लम्बा पुष्प ध्वज निकलता है, जिसमें रक्ताभ पुष्प, शीतकाल के अंत में लगते हैं। इसके पत्तों को काटने पर पीताभ वर्णका पिच्छिल द्रव्य निकलता है जो ठंडा होने पर जम जाता है, इसे कुमारी सार कहते हैं।

रासायनिक संघटन

कुमारी सार में एलौइन ग्लुकोसाइड समूह होता है। एलोईन का मुख्य घटक बर्बिलोइन नामक हलके पीले रंग का स्फटिकीय ग्लूकोसाइड है। इसके अतिरिक्त कुछ राल तथा एक सुगंधित तेल होता है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

यह पचने में भारी, स्निग्ध, पिच्छिल, कटु, शीतल और विपाक में तिक्त है। घृतकुमारी दस्तावर, शीतल, तिक्त, नेत्रों के लिए हितकारी, रसायन, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक और वात, विष गुल्म, प्लीहा, यकृत, अंडवृद्धि, कफ, ज्वर, ग्रन्थि, अग्निदाह, विस्फोटक, पित्त, रूधिर–विकार तथा त्वचा रोगनाशक है।[1,2] अल्पमात्रा में यह दीपन, पाचन भेदन, यकृत उत्तेजक तथा बड़ी मात्रा में विरेचन और कृमिघ्न है। यह स्निग्ध, पिच्छिल एवं उष्ण होने के कारण गर्भाश्यगत रक्त संवहन को बढ़ा देता है तथा गर्भाशय की पेशियों को उत्तेजित कर उनका संकोच बढ़ा देता है इस कारण यह आर्त्तवजनन और गर्भस्रावकर है।[3]

औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : शिरोवेदना में कुमारी के गूदें में थोड़ी मात्रा में दारूहरिद्रा का चूर्ण मिश्रित कर गरम करके वेदना स्थान पर बांधने से वातज तथा कफज शिरशूल में लाभ होता है।

इन्द्रलुप्त : रक्त घृत कुमारी (जिसमें नारंगी और कुछ लाल रंग के पुष्प लगते हैं) के गूदे को स्प्रिट में गलाकर सिर में लेप करने से बाल काले हो जाते हैं। गंजे सिर पर लगाने से बाल उग आते हैं।

नेत्ररोग :

1. इसका गूदा आँखों में लगाने से लाली मिटती है, गरमी दूर होती है। वायरल कंजक्टीवाइटिस में यह लाभ करती है।
2. कुमारी के 1 ग्राम गूदें में 375 मिग्रा. अफीम मिलाकर पोटली बांध कर पानी में भिगो कर नेत्रों पर फिराने से और 1–2 बूंद नेत्रों के अन्दर डालने से नेत्र पीड़ा मिटती है।
3. इसके गूदे पर हल्दी डालकर थोड़ा गरम कर नेत्रों पर बांधने से नेत्रों की पीड़ा मिट जाती है।

कर्णशूल : इसके रस को गरम कर जिस कान में शूल हो, उससे दूसरी तरफ के कान में दो–दो बूंद टपकाने से कर्णशूल मिट जाता है।

कान के कीड़े : गर्मी के कारण कान में कीड़े पड़ गये हों तो एलुआ पानी में पीसकर कान में 2–2 बूंद डालने से कान के कीड़े मर जाते हैं।

कास : कुमारी का गूदा और सैंधा लवण दोनों की भस्म बनाकर 12 ग्राम की मात्रा में मुनक्का के साथ सुबह शाम सेवन करने से कास तथा जीर्ण कास तथा कफज श्वास नष्ट होती है।

वायु गोला : कुमारी का गूदा 6 ग्राम, गाय का घी 6 ग्राम, हरीतकी चूर्ण 1 ग्राम, सेंधा नमक 1 ग्राम, सबको मिलाकर सुबह शाम खाने से वायु गोला मिट जाता है।

उदरगांठ : इसके गूदे को पेट के ऊपर बांधने से पेट की गांठ बैठ जाती है। कठिन पेट मुलायम हो जाता है। और आँतो में जमा हुआ मल बाहर निकल जाता है।

उदरशूल : कुमारी की 10–20 जड़ को कुचलकर उबालकर छानकर उस पर भुनी हुई हींग बुरककर देने से पेट की शूल मिटती है।

गुल्म : घी कुंवार का गूदा निकाल कर समभाग घृत मिलाकर (60–60 ग्राम दोनों) उसमें हरीतकी चूर्ण तथा सैंधा लवण 10–10 ग्राम की मात्रा में मिलाकर भली भांति घोंट लेते हैं। इसको 10–15 ग्राम की मात्रा प्रातः एवं सायं सेवन करने से वातज गुल्म आदि उदर तथा वातजन्य विकारों में गुनगुने पानी के साथ प्रयोग करने से लाभ होता है।

मासिक धर्म : कुमारी के 10 ग्राम गूदे पर 500 मिलीग्राम पलाश का क्षार बुरक कर दिन में दो बार सेवन करने से मासिक धर्म शुद्ध होने लगता है।

मूत्रकृच्छ्र : कुमारी के ताजे 5–10 ग्राम गूदे में शक्कर मिलाकर खाने से मूत्रकृच्छ्र और दाह मिटती है।

रक्तार्श : अर्शाकुर में कुमारी के 50 ग्राम गूदे में 2 ग्राम पिसा हुआ गेरू मिलाकर इसकी टिकिया बनाकर, रुई के फोहे पर फैलाकर गुदा स्थान पर रखकर लंगोट की तरह पट्टी बांध देनी चाहिये। इससे मस्सों में होने वाली जलन तथा दर्द का शमन होता है एवं मस्से सिकुड़ कर दब जाते है। यह प्रयोग रक्तार्श में भी लाभदायक है।

बच्चों की कब्जीयत : छोटे बच्चे की नाभि पर साबुन के साथ इसके गूदे का लेप करने से दस्त साफ होता है।

उपदंश : उपदंशजनित व्रणों में घृतकुमारी के गूदे का बाह्य लेप लाभकारी होता है।

मधुमेह : मधुमेह में घीक्वार का 5 ग्राम गूदा 250 से 500 मिलीग्राम गूडुची सत्व के साथ देते हैं।

कामला :

1. कामला में कुमारी का 10–20 मिलीलीटर रस दिन में दो तीन बार पिलाने से पित्त नलिका का अवरोध दूर होकर लाभ हो जाता है। इस प्रयोग से नेत्रों का पीलापन एवं कब्ज दूर हो जाता है। इसके रस का रोगी की नाक में नस्य देने से नासास्राव पीतवर्ण का होने से लाभ होता है।
2. कुमारी लवण को 3–6 ग्राम तक की मात्रा में छाछ के साथ देने से प्लीहावृद्धि, यकृतवृद्धि, आध्मान शूल तथा अन्य पाचन संस्थान गत विकारों में लाभ होता है। कुमारी के पत्तों का गूदा निकालकर शेष छिलकों को मटकी में भरकर, बराबर मात्रा में नमक मिला कर मुंह बन्द कर कंडों की अग्नि में रख देते हैं। जब अन्दर का द्रव्य जलकर काला हो जाता है तो उसे महीन पीसकर शीशी में भरकर रखते हैं। इसी का औषधीय प्रयोग किया जाता है।

यकृत् दौर्बल्य : कुमारी के पत्तों का रस दो भाग तथा मधु 1 भाग दोनों द्रव्यों को चीनी मिट्टी के पात्र में मुंह बन्द कर 1 सप्ताह तक

Scanned by CamScanner

धूप में रखते हैं। तत्पश्चात् इसको छान लेते हैं। यह औषधि योग 10–20 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं सेवन करने से यकृत विकारों मे अच्छा लाभ करता है। इसकी अधिक मात्रा विरेचक है, परन्तु उचित मात्रा में सेवन करने से मल एवं वात की प्रवृत्ति ठीक होने लगती है, यकृत सबल हो जाता है और उसकी क्रिया सामान्य हो जाती है।

तिल्ली : कुमारी के गूदे पर सुहागा बुरक कर खिलाने से तिल्ली कट जाती है।

गठिया : इसका कोमल गूदा नियमित रूप से 10 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं खाने से गठिया मिटती है।

बंद : इसकी पत्ती के टुकड़े का एक ओर का छिल्का हटाकर उस पर रसोत और हल्दी बुरक कर, गरम कर बांधने से बंद बिखर जाती है।

कटिपीड़ा : गेहूं का आटा, घी और कुमारी का गूदा इतना होना चाहिये जितना आटे में गूंथने के लिये काफी हो, आटे को गूदे में गूथकर रोटी बना ले, इस रोटी का चूर्ण बनाकर शक्कर ओर घी मिलाकर लड्डू बनाकर खाने से कमर की बादी मिटती है। कमर की पीड़ा मिटती है।

स्नायुक : एलुआ का लेप करने से स्नायुक गल जाता है।

ज्वर : घी कुमारी की जड़ का 10–20 ग्राम क्वाथ दिन में तीन बार पिलाने से ज्वर छूट जाता है।

व्रण, चोट आदि गांठ :

1. यदि व्रण अपरिपक्व हो तो घृतकुमारी के गूदे में थोड़ी सज्जीक्षार तथा हरिद्रा चूर्ण मिलाकर व्रण शोथ पर बांधने से फोड़ा जल्दी पककर फूट जाता है।
2. यदि फोड़ा पकने के नजदीक हो तो घृतकुमारी का गूदा गरम करके बांधने से फोड़ा और शीघ्रता से पककर फूट जाता है। जब व्रण फूट जाता है तो गूदे में थोड़ा हरिद्रा चूर्ण मिलाकर बांधने से व्रण शोधन होकर, घाव जल्दी भर जाता है।
3. गांठों की सूजन पर भी कुमारी के पत्ते को एक ओर से छीलकर तथा उस पर थोड़ा हरिद्रा चूर्ण बुरक कर तथा कुछ गरम करके बांधने से लाभ होता है।
4. चोट, मोच तथा कुचले जाने पर शोथ वेदनादि लक्षण युक्त विकार पर घृतकुमारी के गूदे में अफीम तथा हल्दी चूर्ण मिलाकर बांधने से आराम मिलता है।
5. स्त्रियों के स्तन में चोट आदि के कारण या अन्य किसी कारण से गांठ या सूजन होने पर इसकी जड़ की कल्क बनाकर उसमें थोड़ा हरिद्रा चूर्ण गरम करके बांधने से लाभ होता है। इसे दिन में 2–3 बार बदलना चाहिये।
6. घृतकुमारी का गूदा व्रणों को भरने के लिए सबसे उपयुक्त औषधि है। रेडियेशन के कारण हुऐ असाध्य व्रणों पर इसके प्रयोग से असाधारण सफलता मिलती है।

अग्निदग्ध : कुमारी के गूदे को अग्नि से जले हुये स्थान पर लगाने से दाह शान्त हो जाती है, तथा फफोले नहीं उठते।

नाड़ी व्रण : एलुआ और कत्था दोनों को बराबर पीसकर लेप करने से नाड़ी व्रण मिटता है।

विशेष : इसके पत्तों के दोनों ओर के कांटे अच्छी प्रकार साफ कर छोटे–छोटे टुकड़े काट लें, 5 किलो टुकड़े में आधा किलो नमक डालकर मुंह बन्दकर 2–3 दिन धूप में रखें। बीच–2 में हिलाते रहें। तीन दिन बाद इसमें 100 ग्राम हल्दी, 100 ग्राम धनिया, 100 ग्राम सफेद जीरा, 50 ग्राम लाल मिर्च, 60 ग्राम भुनी हींग 300 ग्राम अजवायन, 100 ग्राम शूंठी, 60 ग्राम काली मिर्च, 60 ग्राम पीपल, 50 ग्राम लौंग, 50 ग्राम दाल चीनी, 50 ग्राम सुहागा, 50 ग्राम अकरकरा, 100 ग्राम कालाजीरा, 50 ग्राम बड़ी इलायची, 300 ग्राम राई को महीन पीस कर डालें।

रोगी के बल के अनुसार 3 ग्राम से 6 ग्राम तक की मात्रा में प्रातः–सायं देने से पेट के वात कफ सम्बन्धी सभी विकार मिटते हैं। सूखने पर अचार, दाल, शाक आदि में डालकर प्रयोग करें।

1. कुमारी भेदनी, शीता, तिक्ता नेत्र्या रसायनी।
मधुरा वृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत्।
गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरी हरेत।।
ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान्।। (भाव प्रकाश)

2. गृह कन्या हिमा तिक्ता मदगन्धि कफापहा।
पित्तकासविषश्वासकुष्ठघ्नी च रसायनी।। (रा०नि०)

3. वीरास्रावः सहासारः कुमारीरससंम्भवः।
सहासारोऽग्निजननः पित्तनिर्हरणोमत्।।
बलकृद्रेचनः पुण्यजननो गर्भपातनः।
विट्सङ्गेकृमिरोगे च सन्यासेऽपस्मृतौतथा।।
लुप्ते रजसि नारीणं शीतपित्ते शिरोरुजि।
ज्वरे श्लेष्मोद्भवे प्लीन्हिमन्देऽग्नौ च प्रयुज्यते।।
अर्शसस्तं न सेवेत नान्तर्वत्नी न पुष्पिणी।
न चासृग्दरिणी नापि यकृद्वृक्कादि रोगान। (आ०वि०)

4. यकृत्कृमिप्लीह विबन्ध गुल्मशूलादिकेष्वैलमुशान्ति वैद्याः।। (सि०भे०म०)

Scanned by CamScanner

हल्दी

वैज्ञानिक नाम	:	*Curcuma longa* L.
कुलनाम	:	Zingiberaceae
अंग्रेजी नाम	:	Turmeric
संस्कृत	:	हरिद्रा, पीतिका, गौरी, दीर्घरागा, निशा, पीता, कृमिघ्ना, योषित्प्रिया
हिन्दी	:	हल्दी
गुजराती	:	हलदर
मराठी	:	हलद
बंगाली	:	हलुद
पंजाबी	:	हरदल
तेलगु	:	पसुपु
द्राविड़ी	:	मंजल
कन्नड़	:	अरिसीन, अरसिना
अरबी	:	उरू कुस्सुफ
फारसी	:	जर्दचोब

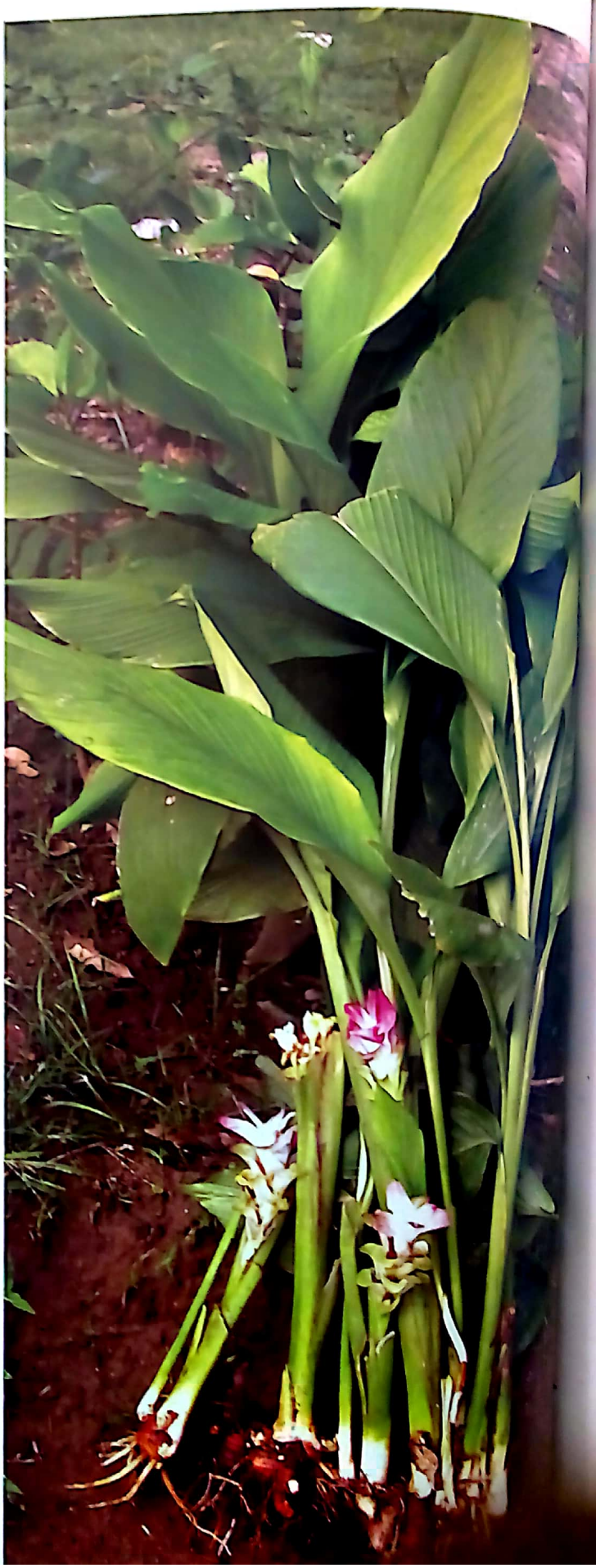

परिचय

रसोई घर में प्रयोग होने वाले मसालों में हल्दी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। कोई भी मांगलिक कार्य बिना हल्दी के पूरा नहीं होता है। सौन्दर्य प्रसाधनों में भी इसका इस्तेमाल होता है। हल्दी की कई प्रजातियाँ पायी जाती है।

1. *Curcuma longa* : मसालों में इसका प्रयोग करते है।
2. *Curcuma aromatica* : इसके कन्द और पत्तो में कपूरमिश्रित आम्र की तरह गन्ध होती है। इसीलिये इसे आमाहल्दी (Mango ginger) कहा जाता है।
3. *Curcuma zedoaria* : यह बंगाल में बहुत पाई जाती है। यह रंगने के काम आती है। इसको जंगली हल्दी भी कहते है।
4. *Berberis aristata* : यह दारु हरिद्रा के नाम से प्रसिद्ध है और यह हल्दी के समान गुणवाली है। इसके क्वाथ में बराबर का दूध डालकर पकाते हैं। जब वह चतुर्थांश रहकर गाढ़ा हो जाता है तब उसे उतार लेते है। इसी को रसांजन या रसोत कहते है। यह नेत्रों के लिये परम हितकारी है।[1]

बाह्य–स्वरूप

सामान्य प्रयोग में आने वाली हल्दी के पौधे 2–3 फुट ऊंचे, पत्ते लम्बे

Scanned by CamScanner

भालाकार बांस के पत्तों की तरह व कुछ–कुछ केले के पत्तों की तरह होते है। पत्रों मे आम के समान गन्ध आती है। पुष्प पीत वर्ण के थोड़ी संख्या में पुष्प दंड लम्बा होता है। इसमें भूमिगत अदरक के समान पीले रंग के कंद पाये जाते है। जिनका रंग अन्दर से लाल या पीला होता है भूमिगत कंदो पर मूल व पर्णवृंतों के चिन्ह पाये जाते है। कन्दों को उबालकर फिर सुखा लिया जाता है। इसे ही हल्दी कहते है तथा यही मसाले के रूप में प्रयोग में लाई जाती है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल 5–8 प्रतिशत होता है। इसके मुख्य कार्यशील घटक कुर्कुमिन नामक यौगिक सुगंधित तेल टर्मरिक ऑयल तथा टर्पीनाइड पदार्थ है। इनके अतिरिक्त विटामिन ए, प्रोटीन 6.3 प्रतिशत, स्नेह द्रव्य 5.1 प्रतिशत, खनिज द्रव्य 3.6 प्रतिशत तथा कार्बोहाइड्रेट 69.4 प्रतिशत होते है।

गुण–धर्म

उष्ण वीर्य होने के कारण यह कफवात शामक, पित्तरेचक तथा वेदना स्थापन है। तिक्त होने के कारण पित्तशामक, कफघ्न, रक्त प्रसादन, रक्तवर्धक एवं रक्त स्तम्भन है। यह रुचिवर्धक तथा अनुलोमन है। मूत्र संग्रहणीय एवं मूत्र विरंजनीय है। प्रमेह के लिये यह श्रेष्ठ है। इसका लेप शोथहर, वेदनास्थापन, वर्ण्य, कुष्ठघ्न, व्रणशोधन, व्रणरोपन, लेखन है। इसका धुआं हिक्कानिग्रहण, श्वासहर और विषघ्न है। इसका प्रयोग कफ विकार, यकृत विकार, रक्त विकार, अतिसार, प्रतिश्याय, प्रमेह, कामला, चर्मरोग एवं नेत्राभिष्यंद में किया जाता है।

सुश्रुत के अनुसार

1. हल्दी, दारुहल्दी, मुस्ता, यह सब आम अतिसार नाशक, खासकर दोषो का पाचन करने वाले है।
2. हल्दी, दारुहल्दी, आंवला, बहेड़ा यह सब मुस्तादिगण कफ नाशक है। योनिदोष नाशक, दूध का शोधन करने वाला और पाचन है।
3. हल्दी, दारुहल्दी, निम्ब, त्रिफला यह सब तिक्त मधुर रस, कफ पित्तरोगो को नष्ट करने वाले, कुष्ठ कृमिनाशक एवं दूषित व्रण के शोधक है।

औषधीय प्रयोग

कामला :

1. 6 ग्राम हल्दी चूर्ण को मट्ठे में मिलाकर दिन में दो बार सेवन करने से 4–5 दिन में कामला रोग शान्त हो जाता है।
2. कामला रोग में 12 ग्राम हल्दी का चूर्ण 50 ग्राम दही में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।
3. लौह भस्म, हरड़, हल्दी इनको समभाग मे मिश्रित कर (375 मि०ग्रा०) घी एवं मधु से अथवा केवल हरड़ को गुड़ और मधु के साथ कामला का रोगी चाटे।

कर्णस्राव : कान में से पूय निकलता हो तो हल्दी और फिटकरी का फूला 1:20 के अनुपात के परिमाण में मिलाकर, दिन में तीन बार 2–2 बूंद कान में डालने से पुराना कर्णस्राव ठीक हो जाता है।

नेत्राभिष्यंद : नेत्राभिष्यंद में 1 ग्राम हल्दी 25 मि०ली० पानी मे

Scanned by CamScanner

उबालकर छानकर आंख में बार–बार डालने से आंख की वेदना कम होती है। हल्दी के क्वाथ से रंगे हुये कपड़े का प्रयोग नेत्राच्छादन के लिये किया जाता है।

स्तनरोग : स्तन रोगों में हल्दी का सूखा कंद एवं लोध पानी में घिसकर स्तन पर लेप करने से लाभ होता है।

स्वरभेद : अजमोदा, हल्दी, आवंला, यवक्षार, चित्रक इनके 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ चाटने से स्वर भेद दूर होता है।[5]

खांसी : हल्दी को भूनकर इसका 1–2 ग्राम चूर्ण मधु अथवा घृत के साथ चटाने से खांसी में लाभ होता है।

जुकाम : जुकाम में हल्दी के धुएं को रात के समय सूंघते है, उसके बाद कुछ देर तक पानी नहीं पीते, इससे जल्दी लाभ होता है।

पायरिया : सरसों का तेल, हल्दी तथा सैंधा नमक मिलाकर सुबह–शाम मसूड़ों पर लगाकर अच्छी प्रकार मालिश करने तथा बाद में गरम पानी से कुल्ले करने पर मंसूड़ों के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

उदरशूल : इसकी जड़ की 10 ग्राम छाल को 250 ग्राम पानी में उबालकर गुड़ मिलाकर पिलाने से उदरशूल मिटता है।

अतिसार : दारु हल्दी की जड़ की छाल और सोंठ बराबर लेकर चूर्ण बनाकर 2–5 ग्राम की मात्रा में दिन में दो तीन बार फंकी देने से अतिसार मिटता है।

प्रमेह : 2–5 ग्राम हल्दी को आंवले के रस तथा मधु मे मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेहों में लाभ होता है।

कफज प्रमेह : हल्दी, दारु हल्दी, तगर वायविंग द्वारा बने क्वाथ को 50–60 ग्राम की मात्रा में लेकर 10 ग्राम मधु के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से कफज प्रमेह नष्ट होता है।

प्रदर :

1. प्रदर में हल्दी का चूर्ण तथा गुग्गुल का चूर्ण समभाग मिलाकर 5–10 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है।
2. हल्दी का चूर्ण दूध में उबालकर एवं गुड मिलाकर सेवन करने से प्रदर में लाभ होता है।

अर्श :

1. सेहुंड़ के दूध में 10 ग्राम हल्दी मिलाकर लेप करने से अर्श नष्ट हो जाते है एवं अर्श पर कड़वी तुरई के चूर्ण के घर्षण से अर्श के अंकुर (मस्से) गिर जाते है।
2. सरसों के तेल में हल्दी तथा 'घोष लता' के समभाग चूर्ण को मिलाकर लेप करने से अर्श नष्ट होते है।[7]

शोथ : हल्दी, पिप्पली, पाठा, छोटी कटेरी, चित्रकमूल, सौंठ, पिप्पला मूल, जीरा, मोथा को समभाग लेकर इसके कपड़छन चूर्ण को मिलाकर रख लें। इस चूर्ण को 2–2 ग्राम की मात्रा में गुनगुने जल के साथ सेवन करने से त्रिदोषजनित शोथ तथा चिरकाल जनित शोथ का विनाश होता है।

वातरक्त : हल्दी, धात्री, नागरमोथा, इनके 100 ग्राम क्वाथ को शीतल होने पर 1 चम्मच मधु मिलाकर कफ प्रधान वातरक्त रोगी

Scanned by CamScanner

को दिन में दो बार पीना चाहिये।

गठिया :

1. दारु हल्दी की शाखाओं का 10–20 ग्राम क्वाथ पीने से पसीना और विरेचन होकर गठिया की पीड़ा मिटती है।
2. दारु हल्दी की जड़ का सूखा सत्व बच्चों को विरेचन में दिया जाता है। दुखती हुई आंख पर भी इसके सत्व का लेप करते है। सूर्य के देखने से जो आंख की ज्योति घट जाया करती है। वह इसके लेप से ठीक हो जाती है।

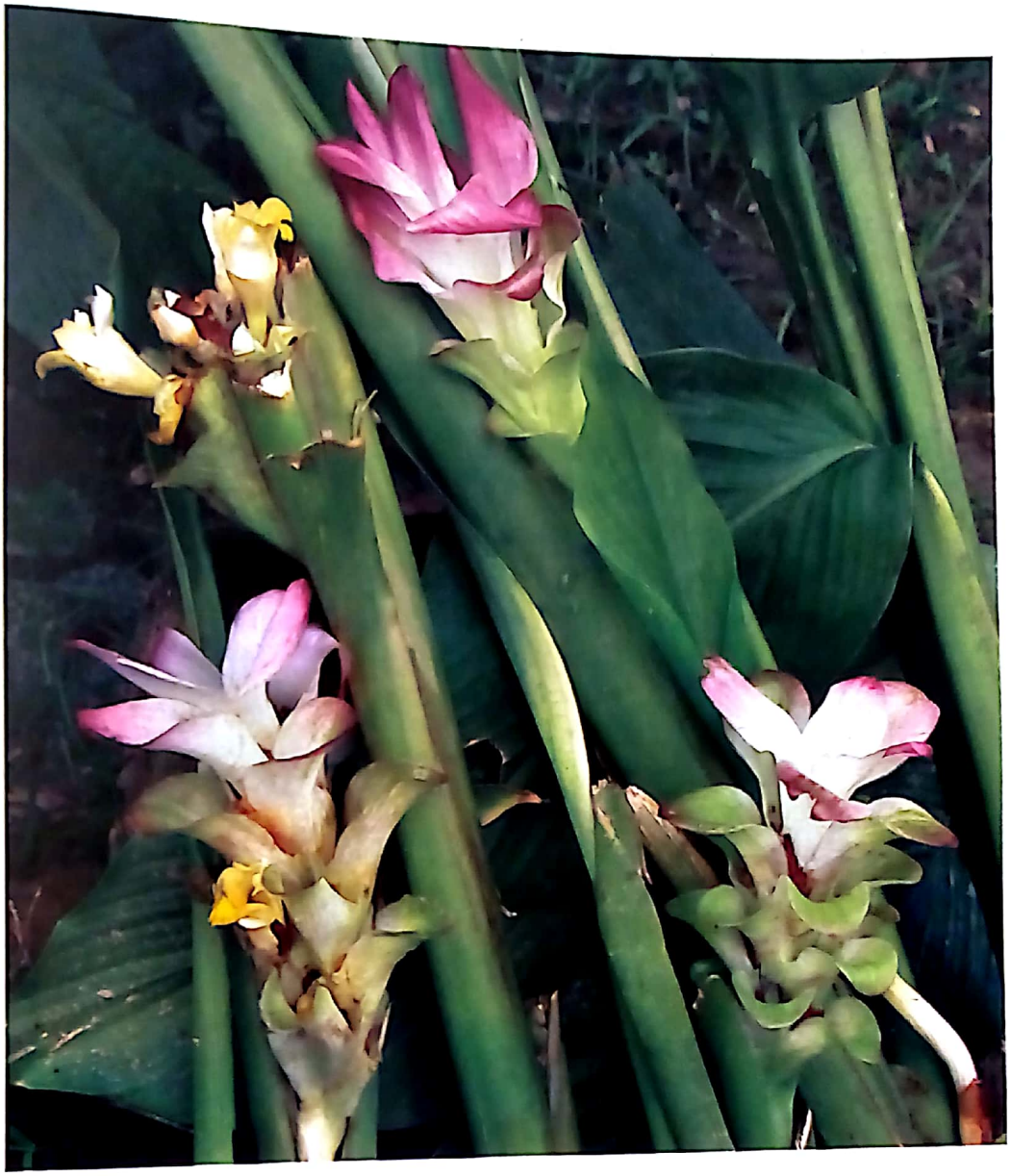

चर्मरोग : खुजली, दाद, फोड़ा, रक्त विकार एवं चर्मरोगों में हल्दी के 2–5 ग्राम चूर्ण को गोमूत्र के साथ दिन में दो तीन बार सेवन किया जाता है। हल्दी के चूर्ण को मक्खन मे मिलाकर रोग–ग्रस्त भाग पर इसका लेप किया जाता है। 5 ग्राम हल्दी के साथ 2 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रातः–सायं सेवन करने से भी लाभ होता है।

कंडू :

1. 5 ग्राम हल्दी और नीम की पत्तियों के 20–30 ग्राम चूर्ण को मक्खन में मिलाकर लेप करने से त्वचा कोमल और कांतिवान हो जाती है, तथा कंडू आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।
2. दूब तथा हल्दी को एक साथ पीसकर लेप करने से कण्डू, पामा, दाद एवं शीत पित्त नष्ट होता है।

व्रण शोथ : चोट, मोच, व्रण एवं पुराने धावो पर हल्दी, चूना और सरसो का तेल मिलाकर लेप करने से बहुत ही लाभ होता है। चोट के कारण उत्पन्न शोथ ठीक हो जाता है।

ज्वर : दारु हल्दी की जड़ की छाल में बहुत सा कड़वा सत्व होता है। इसलिये अन्तराल से आने वाले ज्वर को छुडाने के काम आती है।

जीर्णज्वर : दारु हल्दी की जड़ का 10–20 ग्राम क्वाथ पिलाने से निरंतर रहने वाला ज्वर शान्त हो जाता है। यह क्वाथ प्लीहा और यकृत वृद्धि में भी लाभ पहुँचाता हैं।

1. रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं रसगर्भं च तार्क्ष्यजम्।
रसाञ्जनं कटुं श्लेष्म विषनेत्र विकार नुत्। (भाव प्रकाश)

2. स्नुक्क्षीरं रजनीयुक्तं लेपाद् दुर्नामनाशनम्।
कोषातकीरजोघर्षान्निपतन्ति गुदोद्भवाः।। (भैषज्य रत्नावली)

3. तुल्याश्चायोरजः पथ्याहरिद्राः क्षौद्रसर्पिषा।
चूर्णिताः कामली लिह्याद् गुडक्षौद्रेण वाऽभयाम्।। (भैषज्य रत्नावली)

4. अजमोदां निशां धात्रीं क्षारं वह्निं विचूर्णयेत्।
मधुसर्पियुतं लीढ्वा स्वरभेदमपोहति।।

Scanned by CamScanner

67 हरड़

वैज्ञानिक नाम	:	*Terminalia Chebula* (Gaertn.) Retz.
कुलनाम	:	Combretaceae
अंग्रेजी नाम	:	The Chebulic or Black myrobalan
संस्कृत	:	अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, विजया, चेतकी
हिन्दी	:	हरड़
गुजराती	:	हरडे
मराठी	:	हिरड़ा, हर्तकी
बंगाली	:	हर्तकी, हरितकी
पंजाबी	:	हड़हरड़
तैलगू	:	करकाय्
द्राविड़ी	:	कडुक्काय
अरबी	:	अहलीलज
फारसी	:	हलैलाह

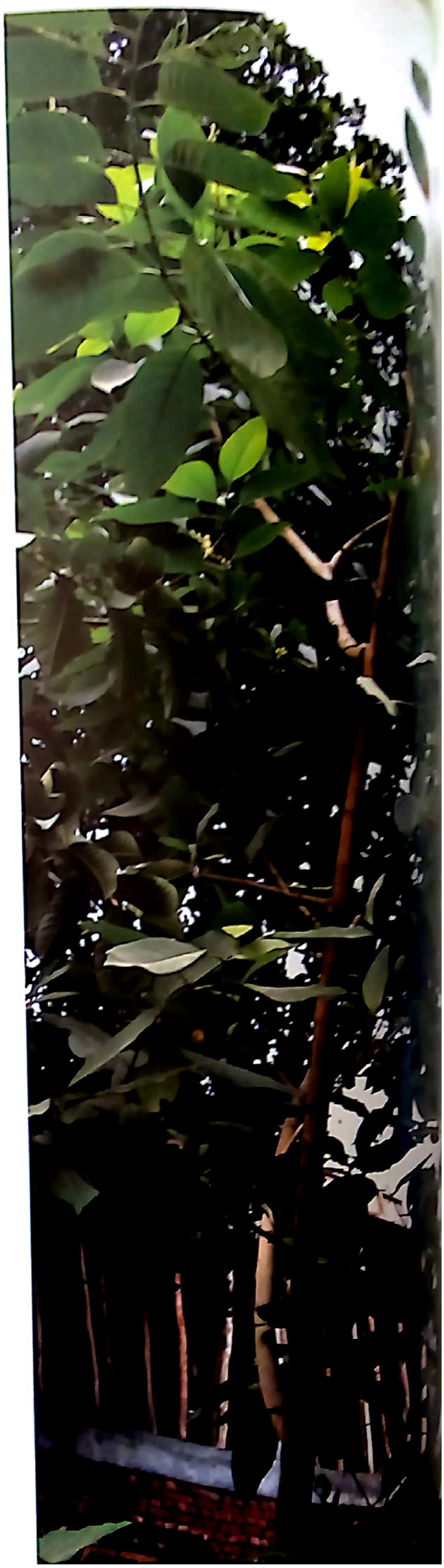

परिचय

हरड का वृक्ष पर्वत प्रदेशों और जंगलों में 5,000 फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। मूलतः निचले हिमालय क्षेत्र में रावी तट से लेकर पूर्व बंगाल, असम तथा देश के ऊँचे वनो में पाया जाता है। इसका वृक्ष 80–100 फुट तक ऊँचा और काफी मोटा होता है। संहिताओं में हरड़ को सात प्रकार की कहा गया है। वर्तमान में यह तीन प्रकार की ही मिलती है। जिसको लोग अवस्था भेद से एक ही वृक्ष के फल मानते है परन्तु यह सत्य नहीं है।

बाह्य–स्वरूप

हरड़ के वृक्ष का तना बहुत लम्बा और 8–12 फुट तक मोटा होता है। छाल गहरे भूरे रंग की, पत्ते– 3–8 इंच लम्बे 2–4 इंच चौड़े, लट्वाकार या अंडाकार तथा पत्र वृन्त के शीर्ष भाग पर दो बड़ी ग्रन्थिंया होती है। पत्र शिराये 6–8 जोड़ी होती है। फूल छोटे, पीताभ–श्वेत, लम्बी मंजरियों में लगते हैं। फल 1–2 इंच लम्बे, अंडाकार, फलों के पृष्ठ भाग पर पांच रेखायें पाई जाती है। जो फल कच्ची अवस्था में गुठली पडने से पहले तोड़ लिये जाते है, वही छोटी हरड़ के नाम से जाने जाते है। इनका रंग स्याह पीला होता है। जो फल प्रौढ़ावस्था अर्थात् अर्द्धपक्व अवस्था मे तोड़ लिये

Scanned by CamScanner

जाते हैं, उनका रंग पीला होता है। पूर्ण परिपक्व अवस्था में इसके फल को बड़ी हरड कहते है। प्रत्येक फल में एक बीज होता है। फरवरी–मार्च में पत्तियां झड़ जाती है। अप्रैल–मई में नये पल्लवों के साथ पुष्प लगते हैं तथा फल शीतकाल में लगते है। पक्व फलो का संग्रह जनवरी से अप्रैल तक करते है।

रासायनिक संघटन

फल में 24–32 प्रतिशत टैनिन होता है। टैनिन के घटकों में चेबुलेजिक एसिड तथा कोरिलेजिन प्रमुख है। इसके अतिरिक्त शर्करा, 18 अमीनो एसिड तथा अल्प मात्रा में फास्फोरिक, सक्सिनिक, क्विनिक, एवं शिकिनिक अम्ल होते है। ज्यों–ज्यों फल पकता है टैनिन की मात्रा घटती जाती है और अम्लता बढ़ती जाती है। बीज मज्जा से एक पीले रंग का तेल निकलता है जो 36.4 प्रतिशत तक होता है। पेड़ से एक प्रकार का गोंद भी निकलता है।

गुण–धर्म

यह रुखी, गरम, हल्की, मधुर पाक वाली, त्रिदोष हर है।[1] यह मधुर तिक्त कषाय होने से पित्त, कटुतिक्तकषाय होने से कफ तथा अम्ल मधुर होने से वात का शमन करता हैं। इस प्रकार यह त्रिदोष–हर है।[2] प्रभाव से यह वात प्रकोप नहीं करती, इसलिये त्रिदोष–हर है। यह रूखी गरम उदराग्नि वर्धक, बुद्धि को बढ़ाने वाली, नेत्रों के लिये लाभकारी, हल्की, आयुवर्द्धक, शरीर को बल देने वाली तथा वात को शान्त करने वाली है। यह श्वास, कास, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, सूजन, उदर रोग, कृमिरोग, स्वर भंग, ग्रहणी, विबंध, गुल्म, आध्मान, व्रण, थकान, हिचकी, कंठ और हृदय के रोग, कामला, शूल, आनाह, प्लीहा व यकृत के रोग, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्रघातादि रोगों को दूर करती है।[1] हरड़, देवदारु, हल्दी यह सब दोषों का पाचन करने वाला है।[2] हरड़ कफ पित्तनाशक है। प्रमेह कुष्ठ को नष्ट करता है। आंखों के लिये हितकारी है।[3] हरड़, आंवला, पिप्पली यह सब ज्वरों को नष्ट करने वाले है। आंखों के लिये हितकारी, अग्निदीपक व्रण कफ एवं अरुचि को नष्ट करता है।[4] हरड़ का फल व्रण के लिये हितकारी, उष्ण, सर, मेध्य, दोषनाशक, शोथ, कुष्ठनाशक, कषाय, अग्निदीपक अम्ल तथा आंखों के लिये हितकारी है।[5] हरड़ का चूर्ण नीम के पत्ते, आम की छाल, अनार पुष्प की कली, मेंहदी के पत्ते, इनका उबटन राजाओं के योग्य अंगराज है। हरड़ में पांचों रस साथ रहकर भी प्रकोप नहीं करते। इसलिये एक ही हरीतकी अनके रोगों में प्रयोग की जाती है। हरीतकी की मज्जा में मधुर रस, नाड़ियों में अम्ल रस, वृन्त में कड़वा रस, छाल में कटुरस और गुठली में कसैला रस रहता है।[6]

विशिष्ट गुण व कार्य

चबाकर खाई हुई हरड़ अग्निवर्द्धक, पीसकर खाई हुई दस्तावर, उबालकर खाई हुई दस्त बन्द करती है। भूनकर खाई हुई त्रिदोषहर, भोजन के साथ खाई हुई हरड़ बुद्धिबल तथा इन्द्रियों को प्रसन्न करती है, भोजन उपरांत खाई हुई, हरीतकी मिथ्या अन्न–पान से होने वाले सब विकारों को दूर करती है।[3]

औषधीय प्रयोग

शिरःशूल :

1. हरड़ की गुठली को पानी के साथ पीस कर लेप करने से आधाशीशी मिटती है।
2. 10 बड़ी हरड की छाल को कूटकर जल में भिगोकर तीन दिन धूप मे रखे, चौथे दिन मसलकर छान ले, उसमें फिर 11 बड़ी हरड की छाल डालकर तीन दिन धूप मै रख छानकर उसमें 500 ग्राम बूरा डाल शर्बत बनाके पीने से मस्तक पीड़ा और पित्त के विकार मिटते हे।

दन्त प्रयोग : इसके चूर्ण का मंजन करने से दांत साफ और निरोग हो जाते है।

नेत्र के लिये :

1. हरड़ को रातभर पानी में भिगोकर सुबह आँखें धोने से शीतल हो जाती है।
2. इसकी मींगी को पानी में 3 पहर तक भिगोकर, घिसकर अंजन करने से मोतियाबिन्द पैदा नहीं होता है।

Scanned by CamScanner

3. हरड़ की छाल को पीसकर अंजन करने से नेत्रों से पानी का बहना बन्द होता है।

मूर्च्छा : हरड़ के क्वाथ से सिद्ध किये हुये घी का सेवन करने से मद और मूर्च्छा मिटती है।

कफ निष्कासनार्थ : कफ को निकालने में हरड़ का चूर्ण बहुत अच्छा है। इस हेतु हरड़ चूर्ण की 2–5 ग्राम की मात्रा में नित्य सेवन करना चाहिए।

मुखरोग :

1. 10 ग्राम हरड़ को आधा किलो पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में किंचित फिटकरी घोलकर केवल धारण करने से शीघ्र ही मुख व कंठ में होने वाला रक्तस्त्राव शान्त हो जाता है।

कास श्वास :

1. हरड़, अडूसा की पत्ती, मुनक्का, छोटी इलायची, इन सबसे बने क्वाथ में मधु और चीनी मिलाकर थोड़ा–थोड़ा दिन में तीन बार पीने से श्वास, कास और रक्त पित्त रोग शान्त होता है।
2. हरड़ और सौंठ समान भाग लेकर चूर्ण बनावें, इसे मन्दोष्ण जल के साथ 2–5 ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं सेवन करने से कास, श्वास और कामला का नाश होता है।

घाव :

1. फैले हुये घाव को इसके क्वाथ से धोने से घाव सिकुड़ जाता है।
2. हरड़ की 1–2 ग्राम भस्म को 5–10 ग्राम मक्खन में मिलाकर घाव पर लेप करते है।

पाचन शक्ति : इसके 3–6 ग्राम चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर सुबह–शाम भोजनोपरान्त सेवन करने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

छर्दि : हरड़ के चूर्ण को मधु मे मिलाकर सेवन करने से दोष नष्ट होते हैं और छर्दि शान्त होती है। यह योग पित्तज वमन में बहुत उपयोगी है।

मंदाग्नि :

1. 2 ग्राम हरड़ तथा 1 ग्राम सोंठ को गुड़ अथवा 250 मिलीग्राम सैंधा नमक के साथ सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती है।
2. हरड का मुरब्बा मंदाग्नि व आमातिसार में लाभदायक होता है।
3. यदि प्रातः काल अजीर्ण की शंका हो तो हरड़, सौंठ तथा सैंधा नमक का 2–5 ग्राम चूर्ण शीतल जल के साथ खायें, परन्तु दोपहर और सांयकाल भोजन थोड़ी मात्रा में खाये।
4. हरड़, सैंधा नमक, पिप्पली, चित्रक इन्हें समभाग में मिश्रित कर चूर्ण के 1 से 2 ग्राम की मात्रा में गरम जल के साथ सेवन करने अग्नि प्रदीप्त होती है। इनके सेवन से घी, मांस और नये चावलों का ओदन शीघ्र पच जाता है।

अण्डकोषवृद्धि : 5 ग्राम जवा हरड़, 1 ग्राम सैंधा नमक को 50 ग्राम एरंड के तेल और 50 ग्राम गोमूत्र में पकाकर तेल मात्र शेष रहने पर छानकर उष्ण जल के साथ प्रातः–सायं लेने से पुरानी अण्डकोष वृद्धि रूकती है।

प्रमेह : हरड़ के 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ सुबह–शाम चटाने से प्रमेह मिटता है।

कामला : लौह भस्म, हरड़, हल्दी इनकों समभाग में मिश्रित कर 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम मात्रा में लेकर घी एवं मधु से अथवा केवल 1 ग्राम हरड़ को गुड़ और मधु के साथ कामला का रोगी दिन में दो से तीन बार चाटें।[1]

अतिसार : जिस रोगी को अतिसार अथवा थोड़ा–थोड़ा, रुक–रुक कर दर्द के साथ मलोत्सर्ग हो उसे बड़ी हरड़ तथा पिप्पली के 2–5 ग्राम चूर्ण को सुहाते गरम जल के साथ सेवन कराये।

बद्धकोष्ठता : हरड़ सनाय और गुलाब के गुलकन्द की गोलियां बनाकर खाने से बद्धकोष्ठ मिटता है।

छः हरड़ और साढ़े तीन ग्राम दालचीनी या लौंग को 100 ग्राम जल में 10 मिनट तक उबालकर, छानकर प्रातःकाल पिलाने से अच्छा विरेचन हो जाता है।

अर्श : हरड़ के क्वाथ की पिचकारी देने से अर्श और योनिस्त्राव मिटता है।

मूत्रकृच्छ्र : हरीतकी, गोखरु, धान्यक, यवासा, पाषाण भेद समभाग लेकर 500 ग्राम जल में क्वथित करें, 250 ग्राम रहने पर उतार ले, यह क्वाथ मधु मे मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्र मार्ग की जलन आदि में लाभ करता है।

Scanned by CamScanner

शोथ रोग :

1. हरड़ में गुड़ मिलाकर शोथ रोग से पीड़ित व्यक्ति को तो खिलाना चाहिये।
2. हरड़, सौंठ और हल्दी समान भाग लेकर क्वाथ बनाकर 10–20 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम लेने से ज्वर के बाद होने वाला शोथ रोग दूर होता है।

सन्निपात ज्वर : हरड़, हींग, पीपल और सौंठ बराबर–बराबर लेकर चूर्ण बनाकर 500 मि०ग्रा० की मात्रा में बिजौरे के रस में मिलाकर सेवन करने से सन्निपात ज्वर में लाभ होता है।

कुष्ठ रोग :

1. कुष्ठ रोग निवारण के लिये गोमूत्र अत्यन्त श्रेष्ठ औषधि है। 20–50 मिलीलीटर गोमूत्र का 3–6 ग्राम हरड़ के साथ प्रातः–सायं सेवन करें तो निश्चय ही लाभ होता है।
2. हरड़ तथा गुड़, तिल तेल, मिर्च, सौंठ, पीपल समभाग में एक माह तक प्रातः–सायं सेवन करने से कुष्ठ रोग का नाश होता है।

दग्ध पर : 5 ग्राम हरड़ को थोड़े पानी के साथ घिस उसमें क्षारोदक और अलसी का तेल बराबर मिलाकर अग्नि से जले हुये या उष्ण जल आदि से जले हुये व्रण पर लेप करने से व्रण बहुत जल्दी अच्छे हो जाते है।

ज्वर : नागरमोथा, हरड़, नीम की छाल, पटोलपत्र, मुलहठी इनके क्वाथ को यथायोग्य मात्रा में हल्का गरम पिलाने से बालकों के सम्पूर्ण ज्वर नष्ट होते है।

विषमज्वर : इसका 2–5 ग्राम चूर्ण को मधु के प्रातः–सायं साथ चटाने से विषमज्वर छूटता है।

रक्तपित्त : हरड़ के 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु और थोड़ी सी चीनी के साथ सेवन करने से रक्तपित्त रोग में जिन रोगियों को विरेचन कराना होता है, लाभप्रद होता है।[16]

श्लीपद रोग : 10 ग्राम हरड़ को 50 ग्राम एरंड के तेल में पकाकर 6 दिन पीने से श्लीपद रोग मिटता है।

ओजोविस्रंस : हरड़, अनार का छिलका, शतपुष्पा, आंवला, बबूल की छाल, इनके क्वाथ को 20 से 30 मिली प्रातः–सायं पीने से अत्यन्त बढ़ा हुआ ओजोविस्रंस निश्चय ही नष्ट होता है।

विशेष सेवन विधि : हरीतकी को नमक के साथ कफ रोग को, शक्कर के साथ पित्त को, घृत के साथ वात–विकारों को और गुड़ के साथ सब रोगो को दूर करती है। जो रसायनार्थ हरीतकी का सेवन करना चाहते है, उन्हें वर्षा ऋतु में नमक से, शरद में शक्कर से, हेमन्त में सौठ से, शिशिर में पिप्पली के साथ, बसन्त ऋतु में मधु के साथ और ग्रीष्म ऋतु में गुड़ के साथ हरड़ का सेवन करना चाहिये।

निषेध : जो मनुष्य मार्ग चलने से थका हुआ हो दुर्बल व रूक्ष हो, कृशकाय हो या ना खाने से दुर्बल हो गया हो, अधिक पित्त वाला हो, जिसका रक्त अधिक निकल गया हो तथा गर्भवती स्त्री को हरड़ का सेवन नहीं करना चाहिये।

1. चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमिनी।
श्वासकासप्रमेहार्शः कुष्ठशोथोदरक्रिमीन्।।
विसर्पग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान्।
गुल्माध्मानव्रणछर्दिहिक्का कण्ठहृदामयान्।।
कामलां शूलमानाहं प्लीहाजच यकृद गदम्।
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रजच च मूत्राघातजच नाशयेत्।। (भाव प्रकाश)
2. वचामुस्तातिविषामया भद्रदारुणी। (सुश्रुत)
3. हरीतक्यामलविभीतकानीति त्रिफला।। (सुश्रुत)
4. आमलकी, हरीतकी, पिप्पली चित्रकाश्चेति। (सुश्रुत)
5. व्रण्यमुष्णं सरं मेध्यं दोषघ्नं शोथकुष्ठनुत्।
कषायं दीपनं चाम्लं, चक्षुष्यं चाभयाफलम्।। (सुश्रुत)
6. पथ्याया मज्जनि स्वादुः स्नाम्वाम्लो व्यवस्थितः।

Scanned by CamScanner

68 इमली

वैज्ञानिक नाम	:	*Tamarindus indica* L.
कुलनाम	:	Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	:	Tamarind tree
संस्कृत	:	अम्लिका, चिंचिका, चिंचा, अत्यम्ला, तिन्तड़ीका
हिन्दी	:	इमली
गुजराती	:	आंबली
मराठी	:	चिंच
बंगाली	:	तेतुला
फारसी	:	तिमिर हिन्दी
अरबी	:	तमर हिन्दी

परिचय

इमली के वृक्ष काफी ऊंचे होते हैं तथा सघन छायादार होने के कारण सड़कों के किनारे भी इसके वृक्ष लगाये जाते हैं। इमली से सब परिचित हैं अतः विस्तार से विवरण की आवश्यकता नहीं है।

रासायनिक संघटन

इसमें साइट्रिक अम्ल, टार्ट्रिक अम्ल, पोटेशियम बाईटार्ट्रेट तथा अंशतः मेलिक एसिड एवं शर्करा तथा अघुलनशील तत्व होते हैं।

गुण–धर्म

कच्ची इमली : खट्टी, भारी, वातविनाशक और पित्त, कफ, रूधिर विकार करने वाली है।

पकी इमली : अग्नि प्रदीपक, रूखी, दस्तावर, गर्म तथा कफ और वात–विनाशक है।[1]

बीज : प्रमेह–नाशक, संग्राही, वीर्य स्तम्भक एवं वीर्य शोषण है।

औषधीय प्रयोग

मुखपाक : इमली के पानी से कुल्ले करने से पित्त जन्य मुखपाक मिटता है।

मस्तक पीड़ा : 10 ग्राम इमली को एक गिलास पानी में भिगोकर थोड़ा मल–छानकर, शक्कर मिलाकर पीने से पित्तज मस्तक पीड़ा मिटती है।

अज्जनामिका (गुहेरी) : आंखों की पलकों पर होने वाली फुंसी पर इमली के बीज को पानी के साथ घिसकर चंदन की तरह लगाने से गुहेरी में शीघ्र लाभ होता है।

नेत्र शोथ : इमली के पुष्पों की पुल्टिस बांधने से आंख की सूजन उतरती है।

कंठ शोथ : 6 ग्राम इमली को दो किलो जल में उबालकर जब आधा रह जाये तो उसमें 10 ग्राम गुलाब जल मिलाकर छानकर कुल्ले करने से कंठ की सूजन उतरती है।

अतिसार :

1. इमली के 10–15 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से आमातिसार मिटता है।
2. इमली के पत्तों के 5–10 ग्राम रस को थोड़ा गर्म करके पिलाने से भी आमातिसार मिटता है।
3. इमली के बीजों के 15 ग्राम छिल्के, 6 ग्राम जीरा और मीठा हो जाने लायक ताड़ की शक्कर इन तीनों को महीन पीसकर तीन–तीन, चार–चार घण्टे के अंतर से फंकी देने से पुराना आमातिसार मिट जाता है।
4. इमली के बीजों की मींगी का चूर्ण 3–6 ग्राम पानी के साथ सुबह–सायं फंकी देने से अतिसार और आमातिसार मिटता है।
5. इमली के पुराने वृक्ष से जड़ की छाल और काली मिर्च आधी मात्रा में दोनों लेकर छाछ के साथ पीसकर, मटर के आकार की गोलियां बनाकर एक से दो गोली दिन में तीन बार देने से आमातिसार बहुत शीघ्र मिट जाता है।

रक्तार्श : इसके पुष्पों का रस 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से रक्तार्श मिटता है।

प्रवाहिका : इसकी पत्तियों के रस को लाल किये हुए लोहे से छोंककर 10–20 ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार कुछ दिनो तक देना चाहिए।

उदरशूल : इसकी छाल को सैंधा नमक के साथ एक मिट्टी के बरतन में रखकर जला लें, सफेद राख को 125 मि०ग्रा० की मात्रा में अजीर्ण और उदरशूल में देने से बड़ा लाभ होता है।

अरूचि : पके इमली का पानी पीने से भूख बढ़ती है और आंतों के घाव मिटते हैं।

क्षुधावर्धक पन्या : 25 ग्राम इमली को 500 ग्राम पानी में मसलकर छान लें, इसमें 50 ग्राम मिश्री, 40 ग्राम दालचीनी, 4 ग्राम लौंग और 4 ग्राम इलायची मिलाकर 4 ग्राम की मात्रा से पिलायें। शीतादिक रोगों के बाद की कमजोरी को मिटाने में और वात

Scanned by CamScanner

संबंधी शिकायतों को दूर करने में यह शर्बत बहुत अच्छा है और शुधावर्धक भी है।

प्रमेह : 125 ग्राम इमली के बीजों को 250 ग्राम दूध में भिगो दें, तीन दिन के बाद छिलके उतारकर, स्वच्छ कर पीस लें। प्रातः–सायं 6 ग्राम की मात्रा में गोदुग्ध या जल से लेने पर प्रमेह रोग दूर होता है।[1]

बहुमूत्र : इमली के बीज प्रातः 10 ग्राम की मात्रा में जल में भिगो दें, रात्रि में छिलका उतारकर भीतरी श्वेत मींगी सेवन करें, ऊपर से गौदुग्ध पीने से लाभ होगा।

वीर्यवर्धक :

1. पानी में कुछ दिन भिगोकर छिलका उतार दें, छिलके निकले सफेद बीजों को सुखाकर बारीक चूर्ण रख लें, एक चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करने से वीर्य का पतलापन दूर होता है।
2. इमली के बीजों को भूनकर, छिलका उतारकर चूर्ण कर, बराबर की मात्रा में मिश्री मिलाकर लगातार 15 दिन तक प्रातः–सायं सेवन करने से वीर्य का पतलापन, मूत्रकृच्छ तथा मूत्र–दाह दूर होती है।
3. इमली के चीएं 10 ग्राम को जल में चार दिन तक भिगोकर छील लें तथा उसमें गुड़ दो भाग मिलाकर चने समान गोलियां बनाकर रख लें। रात्रि में सोते समय एक–दो गोली सेवन करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

दाद : इमली के बीज को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद दूर हो जाता है।

फोड़े, फुन्सिंया :

1. इमली के 10 ग्राम पत्तों को गर्म करके उनकी पुल्टिस बनाकर बांधने से फोड़ा पककर शीघ्र फूट जाता है।
2. इसके बीजो की पुल्टिस बांधने से फुंसिया मिटती है।

मोच : अंग में मोच आ जाने पर इसकी पत्तियों को पीसकर गुनगुना कर लेप लगाने से तत्काल आराम हो जाता है।

दग्ध : जले हुए घाव पर मीठे तेल के साथ इसकी छाल का 2 से 5 ग्राम सूखा चूर्ण बुरकने से शीघ्र लाभ होता है।

शोथ : पत्तों की पुल्टिस बनाकर सूजन पर बांधने से पीड़ा मिट जाती है।

दाह–पित्त विकार :

1. दाह और पित्त विकार मिटाने के लिए इसके कोमल पत्तों और पुष्पों का शाक बनाकर खिलाना चाहिए।
2. मिश्री के साथ इमली का शर्बत बनाकर पिलाने से हृदय की दाह मिटती है।
3. 10 ग्राम इमली और 25 ग्राम छुहारों को 1 किलो दूध में उबालकर, छानकर पिलाने से ज्वर जन्य दाह और घबराहट शांत होती है।

4. पित्तज छर्दि (वमन) और गर्मी के ज्वर पर इमली का शर्बत पिलाना चाहिए।

सफेद दाग : इमली के बीजों की मींगी और बावची दोनों बराबर ले, पीसकर लकड़ी से लगाने से सफेद दाग में लाभ होता है।

पित्तज ज्वर : 25 ग्राम इमली को रात भर एक गिलास पानी में भिगोकर प्रातःकाल निथरे हुए पानी में बूरा मिला ईसबगोल के साथ पिलाने से पित्त ज्वर शांत होता है।

लू का असर :

1. फल के गूदे को ठंडे पानी में पीसकर, मुंडे हुए सिर पर लगाने से लू का असर और मूर्च्छा मिटती है।
2. पकी हुई इमली को पानी में मल उस पानी में कपड़ा भिगोकर शरीर कुछ देर तक पोंछने–फेरने से लू का असर मिटता है।

अन्य प्रयोग :

1. पुरानी इमली का एक किलो गूदा दुगने जल में भिगोकर दूसरे दिन प्रातःकाल अग्नि पर दो तीन उबाल देने के बाद अग्नि से नीचे उतारकर, मसलकर छान लें और बाद में दो किलो खांड मिलाकर चाशनी बना लें। गर्म चाशनी को छानकर, शीतल करके बोतल में भर लें, तीन–तीन घण्टे के अंतर से 10 से 40 ग्राम तक की मात्रा सेवन करने से वमन, पित्त, लू, तृष्णा, विसूचिका, अजीर्ण, मंदाग्नि व शराब का नशा दूर होता है तथा बद्धकोष्ठ मिटता है।
2. इसके बीजों की भस्म को एक से दो ग्राम तक दही के साथ चटाने से रक्तार्श मिटता है।

व्रण : पत्तों के क्वाथ से धोने से बहुत दिनों तक रहने वाला व्रण मिट जाता है।

शीतला : इमली के पत्ते और हल्दी से तैयार किया हुआ ठंडा शीतला की बीमारी में बहुत लाभदायक है।

1. पूर्व तोये वासरं वासितानां चिंचास्थीनां दुग्धकल्की कृतानाम।
पीत्वा स्यातां सुन्दरीपुरूषों हि व्राक अस्थिस्त्रावातसोमरोगां मुक्ता।। (वैद्य मनोरमा)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Citrullus colocynthis* (L.) Schrad.
कुलनाम	:	Brassicaceae
अंग्रेजी नाम	:	Colocynth, Bitter apple
संस्कृत	:	इन्द्रवारुणी, विशाला, महाफला
हिन्दी	:	इन्द्रायण
गुजराती	:	इन्द्रावण
मराठी	:	इन्द्रायण, इन्द्रफल
बंगाली	:	राखालशा
अरबी	:	इंजल, अलकम
फारसी	:	खरबुज–ए–तल्ख
तैलगु	:	एतिपुच्छा

परिचय

इन्द्रायण की समस्त भारतवर्ष में, विशेषतः बालुका मिश्रित भूमि में स्वयंजात वन्यज या कृषिजन्य बेलें पाई जाती हैं। इसकी तीन जातियां पाई जाती हैं : 1. छोटी इन्द्रायण, 2. बड़ी इन्द्रायण एवं 3. लाल इन्द्रायण। हर प्रकार की इन्द्रायण में 50–100 तक फल लगते हैं।

बाह्य–स्वरूप

1. छोटी इन्द्रायण : एन्द्री, चित्रा, गावाक्षी, इन्द्रवारूणी ये छोटी इन्द्रायण के संस्कृत नाम है। इसका वैज्ञानिक नाम *Cucumis callosus* हैं। इसकी आरोहिणी बेलों के पत्र साधारण, खंडित डंठलों में रोम होते हैं। पत्र वृन्त के निकट से पुष्प तथा एक लम्बा सूत्र निकलता है जो वृक्षों से लिपटकर बेल को आगे बढ़ने में सहायता करता है। पुष्प घंटाकार, पीतवर्णी, एकलिंगी, नर और मादा पुष्प अलग–अलग होते हैं। फल गोल होते हैं।
2. बड़ी इन्द्रायणः महाफला, विशाला ये बड़ी इन्द्रायण के संस्कृत नाम हैं। इसकी लताएं अपेक्षा कृत बड़ी, पत्र–तरबूज के सदृश बहुखंडित, पुष्प–पीतवर्ण, फल 1–4 इंच व्यास के लम्बे व गोल, कच्चे फल में सफेद हरी धारियां दिखाई पडती है। छोटा रहने पर रोम व्याप्त रहता है और पकने पर धारियां स्पष्ट हो जाती है और फल का वर्ण नीलाभ हरित हो जाता है। फल मज्जा–लालवर्ण की तथा बीज पीत तथा कृष्ण वर्ण का होता है।
3. लाल इन्द्रायणः इसका वैज्ञानिक नाम *Tricosanthis palmata* है। इसकी बेल बड़ी इन्द्रायण की ही तरह होती है, परन्तु पुष्प श्वेत और फल पकने पर लाल रंग का नींबू की भांति होता है।

रासायनिक संघटन

इसकी कली में कोलोसिंथिन तथा एक तरह का गोंद जैसा पदार्थ तथा कोलोसिंथिटिन, पैन्टिन, गम तथा भस्म पाये जाते हैं। इसके बीजों में स्थिर तेल, एलब्युमिन तथा भस्म तीन प्रतिशत रहती है।

गुण–धर्म

तीव्ररेचक, कफ पित्तनाशक तथा कामला, प्लीहा, उदररोग, श्वास कास, कुष्ठ, गुल्म, गांठ, व्रण, प्रमेह, गंडमाला तथा विषरोग नाशक है। ये गुण छोटी बड़ी दोनों इन्द्रायण में पाये जाते हैं।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

केश :

1. इसके बीजों का तेल लगाने से केश काले हो जाते हैं।
2. इसकी जड़ के 3–5 ग्राम चूर्ण का गाय के दूध के साथ सेवन करने से सफेद केश काले हो जाते हैं। परन्तु पथ्य में केवल दूध ही पीना चाहिए।

बाधिर्य : इसके पके हुए फल को या उसके छिलके को तेल में उबालकर, छानकर कान में 2–4 बूंद टपकाने से बहरापन मिटता है।

दंतकृमि : इसके पके हुए फल की धूनी दांतों में देने से दांतों के कीड़े मर जाते हैं।

अपस्मार : इसकी जड़ के चूर्ण का नस्य दिन में तीन बार देने से अपस्मार मिटता है।

कास : इसके फल में छेद करके उसमें काली मिर्च भरकर छेद बंद कर धूप में सूखने के लिए रख दें या आग के पास भूमल में कुछ दिन तक पड़ा रहने दें, फिर फल को फेंक दे और काली मिर्च के 7 दाने प्रतिदिन मधु तथा पीपल के साथ सेवन करने से कास में लाभ होता है।

स्तन–पाक : स्त्रियों के स्तनों में सूजन हो जाने पर इसकी जड़ को घिसकर लेप करते हैं या पुल्टिस बांधने से लाभ होता है।

उदर विकार :

1. इन्द्रायण का मुरब्बा खाने से पेट के विकार मिटते हैं।
2. इन्द्रायण के फल में सैंधा नमक और अजवायन भर कर धूप में सुखा लें, इस अजवायन की उष्ण जल के साथ फंकी लेने से दस्त लगके पेट की पीड़ा मिटती है।

विसूचिका : विसूचिका में इसके ताजे फल के 5 ग्राम गूदे को उष्ण जल के साथ या 2–5 ग्राम सूखे गूदे को अजवायन के साथ देना चाहिए।

मूत्रकृच्छ्र :

1. इसकी जड़ को पानी के साथ पीस छानकर 5–10 ग्राम की मात्रा में आवश्यकतानुसार पिलाने से मूत्र की रूकावट मिटती है।
2. लाल इन्द्रायण की जड़, हल्दी, हरड़ की छाल, बहेड़ा और आंवला सभी की 10–20 ग्राम मात्रा को 160 मिलीलीटर जल में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में शहद मिलाकर सुबह–शाम पीने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

मासिक धर्म की रूकावट :

1. रजोरोध में इन्द्रवारूणी के बीज तीन ग्राम, काली मिर्च 5 नग, दोनों को पीसकर 200 ग्राम जल में क्वाथ करें, जब चौथाई जल शेष रह जाये तब छानकर पिलाने से रूका हुआ मासिक धर्म पुनः चालू हो जाता है।
2. इसकी जड़ को योनि में रखने से योनिशूल और पुष्पावरोध मिटता है।

आंत्रकृमि : इसके फल के गूदे को गर्म करके पेट पर बांधने से आंतों के सब प्रकार के कीड़े मर जाते हैं।

विरेचन : इसकी फल मज्जा को पानी में उबालकर तत्पश्चात् मलछानकर गाढ़ा करके उसकी छोटी–छोटी चने के बराबर गोलियां बना लें, इसमें 1–2 गोली ठंडे दूध से लेने से प्रातःकाल शुद्ध विरेचन लग जाता है।

जलोदर : इन्द्रायण के फल को गूदा तथा बीजों से खाली करके इसके छिलके की प्याली में बकरी का दूध भरकर पूरी रात रखा रहने दें। प्रातःकाल इस दूध में थोडी सी खांड मिलाकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन तक पिलाने से जलोदर कट जाता है। इसकी जड़ का क्वाथ तथा फल का गूदा खिलाना भी लाभदायक है, परंतु ये तेज औषधि है।

उपदंश :

1. 100 ग्राम इन्द्रायण की जड़ को 500 ग्राम एरंड तेल में पकायें जब तेल मात्र शेष रह जाये तो 15 ग्राम तेल गाय के दूध के साथ दिन में दो बार पिलाने से उपदंश आदि रोग मिटते हैं। तेल को शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें।
2. इसकी जड़ों के टुकड़ों को पांच गुने पानी में उबालें जब तीन हिस्से पानी शेष रह जाये तब छानकर उसमें बराबर बूरा मिलाकर शर्बत बनाकर पिलाने से उपदंश और बात पीड़ा मिटती है।

सुख प्रसव :

1. इसकी जड़ों को पीसकर गाय के घी में

Scanned by CamScanner

मिलाकर भग में मलने से बच्चा तुरन्त सुख से पैदा हो जाता है।

2. इसके फल के रस में रुई का फोहा भिगोकर योनि में रखने से बच्चा सुख से हो जाता है।

सूजन : इसकी जड़ों को सिरके में पीसकर गरम करके शोथयुक्त स्थान पर लगाने से सूजन उतरती है।

संधिगत वायु : इन्द्रायण की जड़ और पीपल के चूर्ण समभाग को गुड़ में मिलाकर 10 ग्राम की मात्रा में नित्य देने से संधिगत वायु दूर होती है।

गठिया : इन्द्रायण के गूदे के आधा किलो रस में हल्दी, सैंधा नमक, बड़ें हुलहुल की छाल 10 ग्राम डालकर बारीक पीस लें। जब पानी सूख जाये तो चौथाई–चौथाई ग्राम की गोलियां बना लें। एक–एक गोली सुबह–शाम दूध के साथ देने से गठिया से जकड़ा हुआ रोगी जिसको ज्यादा से ज्यादा सूजन तथा दर्द हो थोड़े ही दिनों में अच्छा होकर चलने–फिरने लग जाता है।

गर्भधारण :

1. बेल पत्रों के साथ इसकी जड़ों को पीसकर 10–20 ग्राम की मात्रा नियमित प्रातः–सांय पिलाने से स्त्री गर्भ धारण करती है।
2. इसकी जड़ों को पीसकर प्रसूता स्त्री के बढ़े हुए पेट पर लेप करने से पेट अपनी जगह पर आ जाता है।

बिच्छु विष: इसके फल का 6 ग्राम गूदा खाने से बिच्छु का विष उतरता है।

सर्पदंश में : बड़ी इन्द्रायण के मूल का 3 ग्राम चूर्ण पान के पत्ते में रखकर खाने से लाभ होता है।

बच्चों का डिब्बा रोग : बच्चों के डिब्बा रोग में इसकी जड़ के एक ग्राम चूर्ण में 250 मिलीग्राम सैंधा नमक मिलाकर उष्ण जल के साथ दिन में 3 बार खाना चाहिए।

कर्णघाव : लाल इन्द्रायण के फल को पीसकर नारियल तेल के साथ गर्म करके कान के भीतर के व्रण पर लगाने से वह साफ होकर भर जाता है।

शिरः शूल :

1. इसके फल के रस या जड़ की छाल को तिलों के तेल में उबालकर तेल को मस्तक पर मलने से मस्तक पीड़ा या बार–बार होने वाली मस्तक पीड़ा मिटती है।
2. इन्द्रायण के फलों का रस या जड़ की छाल के काढ़े के साथ तेल को पकाकर, छानकर 20 मि०ली० सुबह–शाम उपयोग करने से आधाशीशी, शिरशूल, पीनस, कर्णशूल और अर्धांगशूल नष्ट हो जाते हैं।

केश : इसके बीजों का तेल निकाल कर सिर के बाल मुंडवाकर सिर पर इस तेल का लेप करने से बाल काले उगने लगते हैं।

श्वास : इसके फल को चिलम में रखकर पीने से श्वास मिटता है।

सुजाक : त्रिफला, हल्दी और लाल इन्द्रायण की जड तीनों का क्वाथ बनाकर 30 मि०ली० दिन में दो बार पीने से सुजाक में लाभ होता है।

फोड़े : सर्दी–गर्मी से जो नाक में ऐसे फोड़े हो जाते हैं, जिनमें से सड़ा हुआ पीप निकलता हो, उन पर इंद्रायण फल को नारियल तेल के साथ लगाने से लाभ होता है।

विद्रधि : लाल इन्द्रायण की जड़ और बड़ी इन्द्रायण की जड़ दोनों को बराबर लेकर लेप बनाकर दुष्ट विद्रधि पर लगाने से लाभ होता है।

प्लेग : इसकी जड़ की गांठ को (इसकी जड़ में गांठे होती हैं) यथासंभव सबसे निचली या सातवें नम्बर की ले, ठंडे पानी से घिसकर प्लेग की गांठ पर दिन में दो बार लगायें और डेढ़ से तीन ग्राम तक की खुराक में उसे पिलाना भी चाहिए। इस प्रयोग से गांठ एक दम बैठने लगती है और दस्त की राह से प्लेग का जहर निकल जाता है और रोगी की मूर्च्छा दूर हो जाती है।

विशेष : गर्भिणी, स्त्रियों, बच्चों एवं दुर्बल व्यक्तियों में इसका प्रयोग यथा संभव नही अथवा सतर्कता से करना चाहिए।

1. गवादनीद्वयं तिक्तं पाके कटु सरं लघु।।
वीर्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम्।
श्वासकासापहं कुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत।।
प्रमेहमूढगर्भामगंडामय विषापहम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

जामुन

वैज्ञानिक नाम	:	*Syzygium cuminii* (L.) Skeels
कुलनाम	:	Myrtaceae
अंग्रेजी नाम	:	Jambol, Jaman
संस्कृत	:	जम्बू, महाफला, फलेन्द्रा
हिन्दी	:	जामुन
गुजराती	:	जांबु, जांबू
मराठी	:	जांभूल
बंगाली	:	कालाजाम
पंजाबी	:	जामुल
तेलगु	:	नेरेडू
तमिल	:	शबलनाबल्
मलयालम	:	नवल्
कन्नड	:	नेरले

परिचय

जामुन के सदाहरित वृक्ष जंगली और बोये हुये सर्वत्र पाये जाते है। जम्बूफल और वृक्ष से सबका परिचय है, अतः वर्णन विशेष की आवश्यकता नही है।

बाह्य–स्वरूप

इसका चिरहरित बड़ा वृक्ष 100 फुट तक ऊंचा ओर 12 फुट तक मोटा होता है पत्र 3–6 इंच लम्बे, 2–3 इंच चौड़े, भालाकार या लट्वाकार, चर्मवत् चिकने, चमकीले होते है। पुष्प हरिताभ श्वेत सुगंधित होते है। फल ½ से 1½ इंच लम्बे, अंडाकार, कच्चे मे हरित, प्रौढावस्था में रक्त और बैंगनी तथा परिपक्वावस्था में गहरे नीले–काले वर्ण के हो जाते है। फल के भीतर 1–2 सेन्टीमीटर लंबी गुठ्ली होती है। पुष्प अप्रैल–जून तथा फल जून–जुलाई मे लगते है।

रासायनिक संघटन

जामुन के बीज में एक क्षाराभ अल्पमात्रा में तथा एक पांडुपीत उड़नशील तेल, गैलिक एसिड, क्लोरोफिल, वसा, राल, एल्बुमिन

Scanned by CamScanner

आदि तत्व पाये जाते है। जामुन की गुठली की मधुमेह निवारक क्रिया उक्त ग्लूकोसाइड के ही कारण है। छाल में लगभग 12 प्रतिशत टैनिन पाया जाता है, तथा विजयसार के गोंद की भाँति इसमें से एक गोंद भी निकलता है।

उपयोगी अंग हैं : (1) पत्र, (2) कांड त्वक, (3) काष्ठ, (4) फल का गूदा तथा (5) गुठली का मग्ज (गिरी)। जामुन के पके फलों का सिरका भी बनाया जाता है, तथा रस से आसवन द्वारा एक आसव भी बनाया जाता है, जिसे जाम्बन कहते हैं।

गुण–धर्म

पित्तशामक, त्वग्दोषहर, दाह–प्रशमन, छर्दि निग्रहण तथा स्तम्भन है। इसका फल अग्निवर्धक, पाचन, यकृत को उत्तेजित करने वाला, वातवर्धक, तथा अधिक मात्रा में खा लेने से यह विष्टम्भ जनक है।

जम्बूफल की गिरी पाचन क्रिया को सुधारती है। इससे रक्तगत तथा मूत्रगत शर्करा कम होती है। और मूत्र का प्रमाण भी कम होता है।

औषधीय प्रयोग

दांत के रोग :

1. जामुन के पत्तों की राख दांत और मसूड़ों पर मलने से दांत और मसूड़े मजबूत होते है।
2. पाइरिया में पके हुये फलों के रस को मुख में भरकर, अच्छी तरह हिलाकर कुल्ला करने से पाइरिया ठीक होता है।

नेत्र विकार : बच्चों के जब दांत निकलते हो, उस समय होने वाले नेत्राभिष्यंद में इसके कोमल 15–20 पत्रों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से नेत्र धोना लाभकारी है।

मोतियाबिन्द : जामुन की गुठली के चूर्ण को शहद में घोटकर तीन–तीन ग्राम की गोलियाँ बनाकर प्रतिदिन 1–2 गोली सुबह–शाम खाने से और इन्हीं गोलियों को शहद में घिसकर अंजन करने से मोतिया के रोग में लाभ मिलता है।

मुँह के छाले : जामुन के नरम और ताजा 5–6 पत्तों को पीसकर उनसे कुल्ले करने से मुँह के खराब से खराब छाले भी मिट जाते है।

कंठ रोग : जामुन के रस के 10–15 मिलीलीटर की मात्रा में नियमित सेवन से कंठरोग तथा मुख में हुई गरमी दूर होती है।

कर्णपूय स्राव : जामुन की गुठली का चूर्ण, शहद में घोटकर कान में डालने से कान का बहना बन्द हो जाता है।

मधुमेह :

1. जामुन की 100 ग्राम जड़, साफ कर, 250 ग्राम पानी में पीसकर 20 ग्राम मिश्री डालकर प्रातः–सायं भोजन से पहले पीने से मधुमेह में लाभ होता है।
2. जामुन की गुठली का चूर्ण 1 भाग, शुण्ठी चूर्ण 1 भाग और गुडमार बूटी 2 भाग, इन तीनों चीजों को कपडछन करके मिश्रण को घृतकुमारी के रस में तर कर बेर जैसी गोलियाँ बना लें। दिन में तीन बार 1–1 गोली मधु के साथ लेने से मधुमेह एवं प्रमेह रोग में पेशाब में जाने वाली शक्कर 1 महीने में बन्द हो जाती है। तथा मधुमेह से होने वाली प्रमेह पीडिकाएँ तथा कारबंकल इत्यादि भी मिट जाते है।
3. जामुन के सूखे बीजों का चूर्ण 300 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक दिन में तीन बार लेने से पेशाब के साथ शक्कर का जाना बन्द हो जाता है।
4. 250 ग्राम जामुन के पके हुये फलों को 500 मिलीलीटर उबलते हुये जल में डालकर कुछ समय के लिये उबलने दे, थोडी देर बाद ठंडा होने पर फलों को मसलकर कपड़े में छान लें, प्रतिदिन तीन बार पीने से मधुमेह व धातुक्षीणता में लाभ होता है।
5. बड़े आकार के जामुन के फलों को धूप में शुष्क कर चूर्ण कर लें। 10 से 20 ग्राम तक इस चूर्ण का दिन में तीन बार सेवन 15 दिन तक करने से मधुमेह का नाश होता है।
6. जामुन की छाल की राख मधुमेह की उत्तम औषधि है। 625 मिलीग्राम से 2 ग्राम तक की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करने से पेशाब में शक्कर आना बन्द हो जाता है।

अर्श :

1. जामुन की कोमल कोपलों के 20 ग्राम रस में, थोडी सी शक्कर मिलाकर दिन में तीन बार पीने से बवासीर मे बहने वाला खून बन्द हो जाता है।
2. 10 ग्राम जामुन के पत्तों को 250 ग्राम गाय के दूध में घोटकर सात दिन तक सुबह, दोपहर तथा शाम पीने से बवासीर से गिरने वाला खून बन्द हो जाता है।

अतिसार : जामुन के ताजे कोमल पत्तों के 5 से 10 ग्राम रस को बकरी के दूध 100 ग्राम के साथ पिलाने से अतिसार व आम अतिसार मिटता है।

संग्रहणी : बच्चे को अगर संग्रहणी हो जाये तो इसकी छाल के रस के बराबर बकरी का दूध मिलाकर पिलाने से आराम हो जाता है।

Scanned by CamScanner

रक्त अतिसार : इसकी छाल का चूर्ण 2–5 ग्राम को 250 ग्राम दूध के साथ 2 चम्मच मधु मिलाकर पिलाने से दस्त के साथ आने वाला रक्त रुक जाता है।

प्रवाहिका : इसकी 10 ग्राम छाल को 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ प्रवाहिका और जीर्ण अतिसार में लाभकारी है। इस क्वाथ की 20 से 30 ग्राम मात्रा दिन में 3 बार देना चाहिए।

अफारा : जामुन का सिरका 10–15 मिलीलीटर की मात्रा में पौष्टिक, संकोचक तथा पेट के अफारे को दूर करता है।

प्लीहा शोथ : जामुन की गुठली का रस 15 ग्राम की मात्रा में लेने से तिल्ली की सूजन बिखर जाती है।

वमन : आम तथा जामुन दोनों के समभाग कोमल पत्रों को 20 ग्राम की मात्रा में लेकर 400 ग्राम पानी में पकाये चतुर्थांश शेष क्वाथ ठंडा कर पिलाने से पित्तज वमन बन्द हो जाती है।

यकृतविकार : जामुन फल के अन्दर लोहे का अंश पाया जाता है, जो सौम्य होने से कोई अनिष्ट पैदा नहीं करता, इसलिये जामुन का 10 ग्राम सिरका नित्य लेने से तिल्ली और यकृत की वृद्धि में बहुत लाभ होता है।

कामला : जामुन के 10–15 ग्राम रस में 2 चम्मच मधु मिलाकर सेवन करने से, कामला पांडु रोग तथा रक्त विकार में लाभ होता है।

दस्त : जामुन की गुठली मलरोधक है। इसे समभाग में आम की गुठली और काली हरड़ के साथ भूनकर खाने से पुराने से पुराने दस्त बन्द हो जाते है।

उपदंश : उपदंश फिरंग आदि त्वगविकारों में इसके पत्तों से सिद्ध किया हुआ तेल लगाते है।

पथरी :

1. पके हुये जामुन खाने से पथरी गल कर निकल जाती है।
2. जामुन के 10 ग्राम रस में 250 मिलीग्राम सैंधा नमक मिलाकर दिन में 2–3 बार कुछ दिनो तक निरन्तर पीने से मूत्राशयगत पथरी नष्ट होती है।
3. जामुन के 10–15 ग्राम कोमल पत्तों को कल्क बनाकर इसमें काली मिर्च 2–3 नग का चूर्ण बुरककर सुबह–शाम सेवन करने से अश्मरी के टुकडे–टुकडे होकर मूत्र द्वारा बाहर निकल जाते है। अश्मरी का यह एक उत्तम उपचार है।

रक्तपित्त :

1. 5–10 ग्राम पत्र स्वरस का दिन में तीन बार भोजन से पहले नियमित सेवन रक्त पित्त में लाभकारी है।
2. इसकी एक चम्मच छाल को रात में 1 गिलास पानी में भिगोकर रखें, सुबह उसे मसलकर छान लेवें। इस प्रकार तैयार हिम को मधु मिलाकर पिलाने रक्तपित्त मे लाभ होता है।

व्रण :

1. इसकी छाल का 2–5 ग्राम महीन चूर्ण व्रण पर छिड़कने से शीघ्र व्रण रोपण हो जाता है।

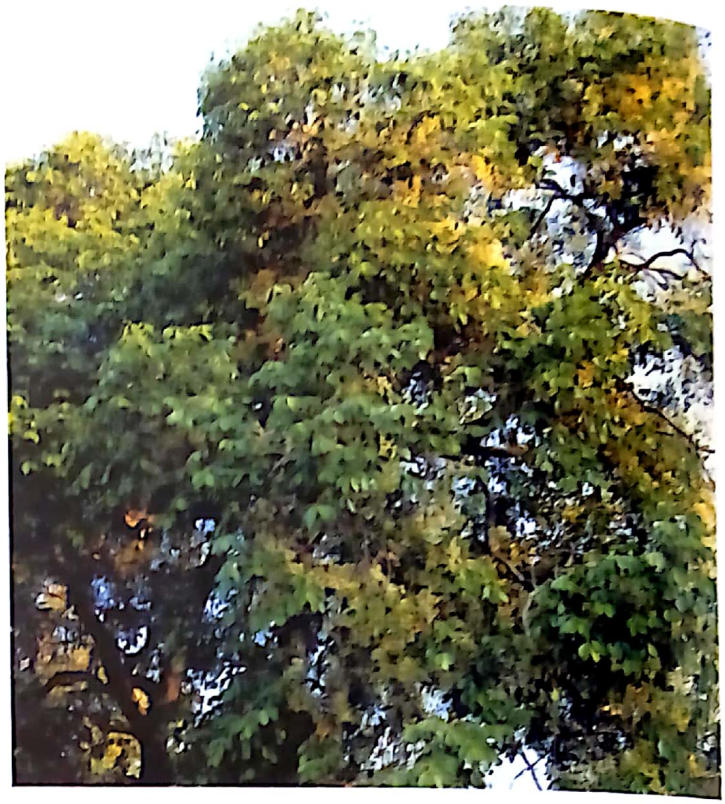

2. जामुन के 5–6 पत्तों की पुल्टिस बाधंने से दुष्ट व्रणों में से पीब बाहर निकल जाती है एवं व्रण स्वच्छ हो जाते है।

अग्निदग्ध : इसके 8–10 पत्तों को पीसकर लेप करने से अग्निदग्ध का श्वेत दाग मिट जाता है।

रक्तस्त्राव : जामुन की गुठली के 2–5 ग्राम चूर्ण में बराबर शक्कर मिलाकर खाने से पेट से खून का बहना बन्द हो जाता है।

जूते का घाव : जूता काटने से या तंग जूतो से पाँव में जख्म हो जाये तो जामुन की गुठली को पानी में पीसकर लगाने से अच्छा हो जाता है।

कुचला विष:

1. सूखी गुठली का चूर्ण 10 ग्राम देवें।
2. जामुन के ढाई पत्तों को पानी में पीसकर जहरीले जानवर के दंश में पीड़ित व्यक्ति को पिलाने से शान्ति मिलती है।

विशेष: जामुन का फल खाने से दिल की धडकन सामान्य होती है, रक्त विकार दूर होते है, और फोड़े फुन्सियों का निकलना बन्द हो जाता है। यह पित्त के अतिसार को नष्ट करता है, आवाज को साफ करता है। थकावट, दमा खांसी, मुख ग्लानि, गले की बीमारियों और मेदे के कीड़ों को नष्ट करता है। इसके शरबत से वमन, जी मिचलाना, खूनी दस्त और बवासीर में लाभ होता है।

दोष : जामुन का पका हुआ फल अधिक खाने से पेट और फेफड़ों को नुकसान पहुँचता है। यह देर से पचता है, कफ बढ़ाता है, और फेफड़ों में वायु भरता है। इसको अधिक खाने से बुखार भी आने लगता है। इसमें नमक मिलाकर खाना चाहिए।

दर्पनाशक : आँवला, अजवायन और सौंठ इसके दर्पनाशक है अर्थात् इसके द्वारा होने वाले उपद्रवों को शान्त करते हैं।

Scanned by CamScanner